ISSN 2395 - 6267

विद्या भारती प्रदीपिका

वर्ष 39 अंक 3
कुल पृष्ठ 72

अप्रैल से जून-2019 मूल्य - ₹ 35/- चैत्र से ज्येष्ठ, युगाब्द 5121

राज्यपाल आनन्दी बेन पटेल द्वारा पुरस्कृत श्री गगन दीक्षित, दसवीं कक्षा, अंक 499/500
म0प्र0 बोर्ड में प्रथम स्थान, सरस्वती विद्या मंदिर गौरझामर (म०प्र०)

चंचल गर्ग बारहवीं कक्षा, अंक - 497/500
सी.बी.एस.ई. बोर्ड में अखिल भारतीय स्तर पर तृतीय स्थान
श्रीमती ब्रह्मादेवी सरस्वती बालिका विद्या मंदिर, हापुड़
एकाउटेंसी, बिजनस स्टडीज और अर्थशास्त्र में 100% अंक

मेघाश्री, दसवीं कक्षा -अंक 594/600
असम शिक्षा बोर्ड में प्रथम स्थान
शंकरदेव शिशु निकेतन, नारायणपुर
असम

Saraswati Bal Mandir Sr. Sec. School, Rajouri Garden

ABOUT US

Our school is an institution working under the aegis of VIDYA BHARATI AKHIL BHARATIYA SHIKSHA SANSTHAN which is a Non Government Organization.

WE OFFER

Our school is an institution working under the aegis of VIDYA BHARATI AKHIL BHARATIYA SHIKSHA SANSTHAN which is a Non - Government Organization.

OUR MISSION

We provide learning space and learning environment for the teaching of students under the able direction of competent, inspiring and dedicated teachers. It offers a diverse array of academic, sports and other co-curricular activities for the diverse needs and for the over-all personality development of our scholars.

OUR VISION

Our school strives to lead our students on the path of PANCH KOSH that leads to heighten one's understanding and uncover one's true nature. The five fundamental and pivotal subjects being physical education, yoga, music, Sanskrit, moral and spiritual education.

Key Features:

- Smart Classes
- Library
- Auditorium
- Safety & Security Systems
- Dance Room
- Art & Music Room
- Computer & Science Lab
- ASL Room
- Instrumental & Music Room
- Yoga Room

Signature Events:

उमंग

- Skill Development Day
- Achievers Day
- Orientation Programme
- Cultural Celebrations

Academic Achievers – 2018-19

Toppers Class 10th

1. Tarun 96.2%
2. Harsh Goyal 96.2%
3. Priyanshi 95.4%
4. Harshit Kumar 94%
5. Sourabh Kaushik 94%

Total Distinctions 234

100 % Result

Toppers Class 12th

1. Vishal Shekhawat 95%
2. Kushal Chauhan 95%
3. Gautam 93%
4. Priyanka 93.2%
5. Vanshika 91.2%
6. Yashika 92%

Total Distinctions 193

विद्या भारती प्रदीपिका

(आर० एन० आई० पंजीकरण संख्या 37111/1981)

(विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान की त्रैमासिक पत्रिका)

अप्रैल से जून २०१९ | मूल्य ३५/-रु० | चैत्र से ज्येष्ठ, युगाब्द ५१२९

संरक्षक
डॉ० गोविन्द प्रसाद शर्मा
अध्यक्ष, विद्या भारती,
81, हैलीपैड कॉलोनी, जयविलास पैलेस, ग्वालियर, मध्य प्रदेश - 474002

मार्गदर्शक
डॉ० चाँद किरण सलूजा
प्रो० बी०पी० खण्डेलवाल
डॉ० ओम प्रकाश पाण्डेय
श्री अवनीश भटनागर

सम्पादक
सविता कुलश्रेष्ठ
एफ-81/यू०जी०-1,
दिलशाद कॉलोनी, दिल्ली-110095
दूरभाष :-09560921486, 09599700662
ईमेल: savitakulshreshtha@gmail.com

प्रकाशन कार्यालय
प्रज्ञा सदन, गो०ला०त्रे० सरस्वती बाल मंदिर परिसर, महात्मा गाँधी मार्ग, नेहरू नगर, नई दिल्ली -110065
फोन न0-011-29840013, 29840126
ईमेल - vbpradeepika@yahoo.co.in

सदस्यता शुल्क प्रति पत्रिका -35/-रु0
वार्षिक सदस्यता शुल्क- 120/-रु0
दस वर्षीय सदस्यता शुल्क -800/-रु0
(शुल्क राशि 'विद्या भारती प्रदीपिका' के बचत खाता क्र0-1130307980 सेन्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया IFSC - CBIN0283940 में जमा कर पत्र द्वारा कार्यालय को सूचित करें।)

-: मुद्रण :-
नक्षत्र आर्ट, B-255, नारायणा इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस-I, नई दिल्ली - 110028

"प्रदीपिका" में प्रकाशित विचार रचनाकारों के हैं। पत्रिका की इन से सहमति आवश्यक नहीं है।

अनुक्रमणिका

सम्पादकीय		4
नि:शुल्क और अनिवार्य शिक्षा : एक विमर्श	- श्री श्रीराम अरावकर	5
हमारे विद्यालय बहुआयामी विकास के आधार	- मा. रज्जूभैया	12
आज के अशांत युग में महावीर वाणी की उपादेयता	- मा० दुलीचंद जैन	15
मैंने कहा, प्रिय भैया-बहनों ने कहा और आदरणीय आचार्य गणों ने कहा	- श्री पंकज सिन्हा	20
वैश्विक उन्नति का आधार भारतीय संस्कृति	- श्री विनोद बंसल	24
हम और पर्यावरण	- श्री देवेश कुमार सोनी	26
विजय के लिए संकल्प शक्ति का निर्माण	- श्रीमती किरणमाला नायक	28
विद्यालय प्रबंध एवं परिवेश	- श्री देशराज शर्मा	30
प्रधानाचार्य का दायित्व एवं प्रबंध कुशलता	- मा. नरेन्द्रजीत सिंह रावल	33
जलियाँवाला बाग में वीभत्स नरसंहार आज़ादी की लड़ाई में उत्प्रेरक बना		39
देश पूर्वोत्तर क्षेत्र में विद्या भारती	- श्री पंकज सिन्हा	40
विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान साधारण सभा बैठक कुरुक्षेत्र		45
विद्यामंदिर एवं समाज समर्पित प्रधानाचार्य समय की माँग	- श्री विजय कुमार नड्डा	49
विद्या भारती मानक परिषद् "माप" की संकल्पना	- श्री राकेश शर्मा	51
सच्चे रसायन शास्त्री : प्रफुल्लचन्द्र राय	- श्री विष्णु प्रसाद चतुर्वेदी	54
छात्र-छात्राओं के विकास में शारीरिक शिक्षा की भूमिका	- श्री शिव कुमार शर्मा	57
बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर का भारत चिन्तन	- श्री अतुल कोठारी	58
भारतीय परिवार व्यवस्था-मानवता के लिए अनुपम देन		60
गुरुनानक देव जी का **550**वाँ प्रकाश वर्ष हमारे लिए गर्व का विषय है	- श्री भैया जी जोशी	61
संस्कृति और शिक्षा को समर्पित श्रद्धेय कृष्णचन्द्र गाँधी पुरस्कार	- श्री विकास शर्मा	62
हिन्दू आस्था और परम्पराओं पर बढ़ते आघात का शान्तिपूर्ण प्रतिकार करें		63
नैतिक एवं आधयात्मिक शिक्षा	- श्री सियाराम गुप्ता	64
जलियाँवाला बाग और भगत सिंह		65
मानविकी विषय में क्रियाधारित अध्यापन	- श्री रवि कुमार	66
REFORESTATION	- Sh. Sushil Kumar Vatta	68
ESSENTIAL FATTY ACIDS	- Ray D. Strand, M.D.	69
Didda -Mid Evel Administrator Queen of Kashmir	- Ms. Piyashi Roy Choudhury	70

गुरु-शिष्य संबंध की जीती जागती मिसाल भीमराव (सकपाल) अम्बेडकर

प्रस्तुत अंक में श्री अतुल कोठारी के लेख ''बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर का भारत चिन्तन'' पढ़ते हुए मन को बहुत सी भावनाएँ उद्वेलित करने लगीं। एक इन्सान जो पढ़ने में होशियार अध्यापकों का प्रिय परन्तु समाज व विद्यालय में उसे समाज की कुरीति अस्पृश्यता का शिकार होना पड़ा। यद्यपि स्वभाव से बाबा साहेब साफ़ सुथरे शिष्ट व्यक्तित्व के थे परन्तु सहपाठियों से उन्हें दुर्व्यवहार ही मिला। इन परिस्थितियों ने बार-बार किशोर भीम को विचलित किया, चिन्तनशील बनाया। घर में आर्थिक तंगी का दंश उनके मार्ग का बाधक न बन सका। इस सबको गहाराई से चिन्तन करने पर उत्तर मिला कि यह गुरु-शिष्य के आदर्श व प्रगाढ़ संबंध का परिणाम था जो भीमराव की दिशा व दशा को सफलता की ओर ले जाता रहा। यहाँ तक कि उनके ब्राह्मण शिक्षक ने उन्हें शिक्षा ही नहीं दी बल्कि अपना नाम भी दिया जिसको सहेज कर, सम्भाल कर भीमराव ने चार चाँद लगा दिए। देश ही नहीं विश्व में भी उन्होंने अप्रतिम सम्मान प्राप्त किया।

इससे अच्छा कोई और बेहतर उदाहरण हो सकता है गुरु-शिष्य के सम्बन्धों का। यदि बाबा साहेब के बचपन में इस प्रकार के गुरु-शिष्य संबंध का अनुभव न आता, सम्भवत: इतिहास कुछ और ही होता। इसीलिए गुरु-शिष्य संबंध का शिक्षा में महत्वपूर्ण स्थान है। इस संबंध की सकारात्मकता में वह शक्ति है जो बालक के अन्तर्निहित ज्ञान व प्रतिभा को उजागर कर उसे शिक्षा में संलग्न रखते हुए जीवन के शिखर तक पहुँचने में सहायक होती है। बचपन में जब बालक को आत्मनियंत्रण सीखना और बाधाओं को लाँघना होता है गुरु का वरद्हस्त उसको इस ओर सहजता प्रदान करता है। विश्वास दिलाता है 'चले चलो मैं हूँ ना।' मैंने अपने विद्यार्थी जीवन में इस प्रकार के समर्पित आचार्यो का सानिध्य पाया है और फिर अपने शिक्षक जीवन में उसे ऋण स्वरूप चुकाया है।

यह संबंध स्वत: ही बन जाते हैं इनको बनाने में प्रयास नहीं लगता। प्रयास लगता है गुरु द्वारा पढ़ाए विषय की गहराई तक पहुँचाने के लिए। जब गुरु विषय की गहराई में डूबकर अध्यापन करता है छात्र गुरु के व्यक्तित्व में ही विषय को प्राप्त कर लेता है। गुरु की दृष्टि उस समय बालक के अधिगम पर रहती है। उसे पता चल रहा होता है कि उसका शिष्य कितना ग्रहण कर रहा है और बिना किसी बाधा के बिना तारतम्य खोए वह आवश्यकतानुसार परिवर्तन करता रहता है। यह प्रक्रिया इतनी सुगठित होती है कि बालक इसका अनुमान भी नहीं लगा पाता और विषय उसकी समझ में आ जाता है।

बालक केवल बौद्धिक क्षमताओं से ही ज्ञान प्राप्त नहीं करता उसमें उसकी रुचि, भावनाएँ, इच्छाएँ, मनोकामनाएँ आशाएँ, संतुष्टि का ऐहसास इत्यादि सभी कुछ एक साथ काम कर रहे होते हैं। यहाँ तक कि अपनी परिस्थितियों से भी बालक उसमें तादात्म्य अनुभव करता है और एक सशक्त व जन्मजात गुरु इस पर नज़र रखता है, आवश्यकतानुसार प्रस्तुति करता है और गुरु-शिष्य के मध्य संबंध स्थापित होता है। बालक जब आचार्य द्वारा अपनी सभी समस्याओं के समाधान का विश्वास पाल लेता है तब संबंध प्रगाढ़ व परिपक्व होने लगते हैं। शिक्षण अधिगम में दोनों की भागीदारी होने लगती है। धीरे-धीरे बालक का बौद्धिक, मानसिक, भावात्मक, संवेगात्मक विकास होने लगता है ऐसा नहीं है कि आचार्य एक साथ सम्पूर्ण कक्षा के बालकों को इस प्रकार अभिभूत कर सकता है परन्तु आवश्यकतानुसार समय-समय पर सभी पर नज़र रखी जा सकती है और छात्रों की मनोसामाजिक आवश्यकताओं को गुरु सहज ही सँवारता जाता है। इस संबंध की सफलता तब फलीभूत होती जब छात्र गुरु से अपनी व्यक्तिगत समस्याएँ, कठिनाइयाँ शेयर करने लगता है जिनका हल उन्हें स्वत: मिलता जाता है और वह जीवन की बाधाओं को लाँघ कर उन्नति के शिखर तक पहुँच पाता है।

आइए हम सब गुरु और बहुत से भारत रत्नों को दिशा देने का अभियान लें ताकि देश का समुचित विकास हो। सुझावों की प्रतीक्षा में

– सम्पादक

आलोक : कृपया सभी रचनाकार अपनी रचनाएँ प्रमाणपत्र सहित भेजें कि उनकी रचना किसी अन्य पत्रिका में नहीं भेजी गई है।

नि:शुल्क और अनिवार्य शिक्षा : एक विमर्श

भारतीय गणतंत्र में लोकतंत्र के ढाँचे को सुदृढ़ करने के लिए तथा सभी नागरिकों को समान अवसर प्राप्ति के लिए सार्वभौमिक प्राथमिक शिक्षा की महत्त्वपूर्ण भूमिका मानी गई है। भारतीय संविधान राज्य के नीति निर्देशक तत्व में अभिकथन के रूप में इसे स्पष्टत: अभिव्यक्त करता है कि राज्य चौदह वर्ष तक की आयु के सभी बालकों को नि:शुल्क और अनिवार्य शिक्षा उपलब्ध कराएगा।

संविधान के छियासीवें संशोधन द्वारा अधिनियम 2002 के अनुच्छेद 21 क के अनुसार यह छ: से चौदह वर्षीय बच्चों को नि:शुल्क और अनिवार्य शिक्षा का मूल अधिकार प्रदान करता है एवं इसकी जिम्मेदारी राज्यों को सौंपी गई है। इस विधान की रचना के पीछे यह धारणा है कि समता, सामाजिक न्याय, लोकतांत्रिक मूल्य तथा न्याय संगत मानवीय समाज के निर्माण के लिए सर्वसमावेशी प्राथमिक शिक्षा अनिवार्य है। उपर्युक्त अधिनियम के पालन हेतु केन्द्र सरकार ने नि:शुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 बनाया तथा उसे 1 अप्रैल 2010 से प्रभावी कर दिया गया। निश्चित रूप से यह अधिनियम वंचित और कमजोर वर्गों तथा दूरस्थ व दुर्गम क्षेत्र में बसने वाले लोगों के उन बच्चों को जो विभिन्न कारणों से या तो विद्यालयों में जाने से वंचित रह जाते हैं अथवा प्राथमिक शिक्षा पूर्ण किये बिना ही विद्यालय जाना बंद कर देते हैं, को शिक्षा प्राप्त कर योग्य नागरिक बनने का मार्ग प्रशस्त करता है।

यह अधिनियम इस विश्वास के साथ बनाया गया कि समता, सामाजिक न्याय और लोकतांत्रिक मूल्य तथा एक न्यायसंगत मानवीय समाज का सृजन सभी व्यक्तियों के लिए समावेशी प्राथमिक शिक्षा के उपबंध (उपअधिनियम) के माध्यम से ही संभव है। अत: सुविधारहित तथा कमजोर वर्ग के बालकों को संतोषप्रद और गुणवत्तापूर्ण नि:शुल्क शिक्षा का प्रबंध केवल समुचित सरकार द्वारा चलाए जा रहे या समर्थित विद्यालयों का ही उत्तरादायित्व नहीं है, अपितु ऐसे विद्यालयों का भी उत्तरादायित्व है जो सरकारी निधियों पर निर्भर नहीं है।

अनेक विशेषताओं के साथ-साथ इस अधिनियम में अनेक व्यावाहारिक विसंगतियों या न्यूनताएँ अनुभव की जा रही हैं जिनके रहते योजना का क्रियान्वयन बाधित होगा तथा वह अपने पूर्ण लक्ष्य की प्राप्ति से दूर रह जाएगा। योजना का क्रियान्वयन बाधित होगा तथा वह अपने पूर्ण लक्ष्य की प्राप्ति से दूर ही रह जाएगा। योजना के क्रियान्वयन पक्ष और व्यावहारिक पक्षों का अध्ययन करने पर निम्नांकित तथ्य सामने आते हैं -

1. आयु वर्ग-

अधिनियम के अध्याय 2 की धारा 3 (1) में यह प्रावधान है कि 6 से 14 वर्ष की आयु के प्रत्येक बालक को प्रारम्भिक शिक्षा पूरी होने तक किसी आसपास के विद्यालय में नि:शुल्क और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार होगा।

यहाँ पर यह समस्या ध्यान में आ रही है कि सामान्यत: 3 वर्ष की आयु पूर्ण होने पर बच्चों का प्रवेश एल. के. जी. में करवाया जाता है तथा 5 वर्ष की आयु पूर्ण होने पर वह कक्षा 1 में प्रवेश लेने के लिए सक्षम हो जाता है। परन्तु अधिनियम में 6 वर्ष की आयु उल्लिखित होने के कारण वह बच्चा एक वर्ष तक क्या करेगा?

इस सम्बंध में यह संशोधन आवश्यक लगता कि 6 वर्ष से 14 वर्ष के स्थान पर 5 वर्ष से 14 वर्ष का आयु वर्ग का उल्लेख किया जाए।

2. विद्यालय के प्रकार

अधिनियम के अध्याय 1 की धारा 2 (ढ) ने 4 प्रकार के विद्यालय बताये गये हैं जो निम्नानुसार हैं :-

क) समुचित सरकार या किसी स्थानीय प्राधिकारी द्वारा स्थापित, उसके स्वामित्वाधीन या नियंत्रणाधीन कोई विद्यालय,

ख) समुचित सरकार या स्थानीय प्राधिकारी से अपने सम्पूर्ण व्यय या उसके भाग की पूर्ति के लिए सहायता या अनुदान प्राप्त करने वाला कोई सहायता प्राप्त विद्यालय

ग) विनिर्दिष्ट प्रवर्ग का कोई विद्यालय, और

घ) समुचित सरकार या स्थानीय प्राधिकारी से अपने सम्पूर्ण व्यय या उसके भाग की पूर्ति के लिए किसी प्रकार की सहायता या अनुदान प्राप्त करने वाला कोई गैर सहायता प्राप्त विद्यालय,

3. विद्यालयों को शासकीय मान्यता प्राप्त करने की अनिवार्यता क्यों?

अधिनियम की धारा 18 यह कहती है कि मान्यता प्रमाण पत्र प्राप्त किये बिना किसी भी विद्यालय को स्थापित

नहीं किया जा सकता और यदि ऐसा कोई विद्यालय संचालित किया जाता है तो धारा 18(5) के अनुसार उसे 1 लाख रुपये तक का जुर्माना हो सकेगा और निरन्तर उल्लंघन की दशा में प्रतिदिन 10 हजार रुपये तक का जुर्माना लगाया जा सकेगा।

यहाँ मूल प्रश्न यह है कि राज्य द्वारा विद्यालय की मान्यता की शर्त अनिवार्य क्यों होनी चाहिए? विद्यालय आदिकाल से ही समाज के अपरिहार्य अंग रहे हैं। समाज ने विद्यालयों की स्थापना और विकास किया है। अनेक आश्रमों, मठ-मंदिरों तथा गुरुकुल परम्परा ने श्रेष्ठ विद्वान व योग्य नागरिक समाज को प्रदान किए हैं। इन्हें सदैव ही समाज की मान्यता प्राप्त थी तथा समाज व राज्य उनका पोषण भी करता था। शिक्षा में प्रयोगधर्मिता, नवाचार व मौलिक विचार का महत्त्व सदैव ही रहा है। नियमों, पाठ्यक्रमों, पुस्तकों व समयसारिणी में बाँटकर शिक्षा को नीरस बना दिया गया है। आज की बदलती हुई परिस्थिति में न्यूनतम भौतिक संसाधनों की अनिवार्यता, न्यूनतम अधिगम स्तर, मानवीय जीवन मूल्यों, देश के गौरवशाली अतीत व सांस्कृतिक मूल्यों तथा नागरिक के कर्तव्यों के शिक्षण का निर्धारण तो उचित होगा परन्तु अन्य बहुत सारे नियमों के बनाए जाने के कारण शिक्षा की स्वायत्तता समाप्त हो जाएगी।

सरकारी मान्यता की अनिवार्यता तथा उसे प्राप्त करने के कठोर नियमों के कारण दुर्गम क्षेत्रों में सेवाभाव से कार्य करने वाले संस्थानों या संगठनों तथा शिक्षा जगत् में नूतन प्रयोग एवं नवाचार करने के लिए समुत्सुक लोगों/संस्थाओं के लिए यह अधिनियम कठिनाइयाँ ही बढ़ाता है जबकि इन्हें विशेष प्रोत्साहन की अपेक्षा है। यहाँ यह उल्लेख भी प्रासंगिक होगा कि प्राचीन गुरुकुल पद्धति में भी सभी वर्गों के बच्चे बगैर आर्थिक विषमता का प्रभाव झेलते, एक साथ विद्यार्जन कर अपनी-अपनी योग्यता एवं प्रतिभानुसार विकसित होते थे। गुरुकुलों की प्राचीन पद्धति का अनुशीलन कर उसके श्रेष्ठ पक्षों को स्वीकृत करते हुए उसमें युगानुकूल परिवर्तन व परिवर्धन कर हम इस अधिनियम को उसके मूल उद्देश्य की सिद्धि के अधिक निकट ले जा सकते हैं। इसलिए उचित यही होगा कि शासन इन संस्थाओं को अपने नियंत्रण से मुक्त रखे तथा उसके योगक्षेम में सहयोग अवश्य करे।

अन्यथा ऐसी परिस्थिति में शिक्षा के क्षेत्र में सरकार के अलावा वे ही लोग आगे आयेंगे जिन्होंने शिक्षा को भी एक व्यवसाय बना लिया है।

4. अधिनियम केवल बहुसंख्यक समाज द्वारा संचालित विद्यालयों के लिए

सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय अनुसार यह अधिनियम अल्पसंख्यक संस्थानों पर लागू नहीं है। इसके कारण इस अधिनियम के प्रभावों से बचने के लिए अनेक समितियाँ अपने स्वरूप को बदल कर अपने आपको धार्मिक अथवा भाषायी अल्पसंख्यक संस्थाओं में परिवर्तित करने का प्रयास कर रही हैं। परिणाम स्वरूप यह अधिनियम बहुसंख्यक समाज के हित को हानि पहुँचाता सिद्ध हो रहा है।

5. स्वपोषी विद्यालयों में प्रवेशित वंचित वर्ग के छात्रों के शुल्क की प्रतिपूर्ति-

इस अधिनियम की धारा 12 (1)(ग) के अनुसार अधिनियम की धारा 2 के खण्ड (ढ) के उपखण्ड (iii) उपखण्ड (iv) में उल्लेखित कोई विद्यालय पहली कक्षा में दुर्बल वर्ग और असुविधाग्रस्त समूह के बच्चों को उस कक्षा के बालकों की कुल संख्या के कम से कम 25 प्रतिशत की सीमा तक प्रवेश देगा और निःशुल्क और अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा की, उसके पूरा होने तक व्यवस्था करेगा।

धारा 12(2) के अनुसार इन विद्यालयों की उसके द्वारा उपगत व्यय की राज्य द्वारा उपगत प्रतिबालक व्यय की सीमा तक या बालक से प्रभारित वास्तविक रकम तक इनमें से जो भी कम हो ऐसी रीति में जो विहित की जाये, प्रतिपूर्ति की जावेगी।

परन्तु यह एक ऐसी प्रतिपूर्ति धारा 2 के खण्ड(ड) के उपखंड 1 अर्थात् सरकारी विद्यालयों द्वारा उपगत प्रति बालक व्यय से अधिक नहीं होगी।

व्यय की प्रतिपूर्ति का यह प्रावधान उक्ति संगत नहीं है। क्योंकि इस प्रतिपूर्ति की गणना करते समय राज्यों ने शासकीय विद्यालयों में दिए जाने वाले वेतन मात्र की गणना की है, इसमें भवन रखरखाव अन्य भौतिक संसाधन, शिक्षकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण, सह शैक्षिक गतिविधियाँ, पुस्तकालय तथा प्रयोगशाला पर होने वाले व्यय की गणना नहीं की गई है। इसी प्रकार अधिनियम में दी गई अधिसूची के अनुसार छात्र शिक्षकों का अनुपात निम्नानुसार है -

(क) पहली कक्षा से पाँचवी कक्षा के लिए -

प्रवेश किए गए बालक	शिक्षकों की संख्या
60	दो

61-90 के मध्य	तीन
91-120 के मध्य	चार
120-200 के मध्य	पाँच
150 के ऊपर	पाँच धन एक प्रधान अध्यापक
200 के ऊपर	

छात्र-शिक्षक अनुपात (प्रधान अध्यापक को छोड़कर) 40 से अधिक नहीं होगा।

(ख) छठी कक्षा से आठवीं कक्षा के लिए -

1. कम से कम प्रति कक्षा एक शिक्षक इस प्रकार होगा कि निम्नलिखित प्रत्येक के लिए कम से कम एक शिक्षक हो-
   विज्ञान और गणित
   सामाजिक अध्ययन
   भाषा
2. प्रत्येक 35 बालकों पर कम से कम 1 शिक्षक हो।
3. जहाँ 100 से ऊपर बालकों का प्रवेश दिया गया है वहाँ -

(i) एक पूर्णकालिक प्रधान अध्यापक,

(ii) अंशकालिक शिक्षक -
   (अ) कला शिक्षा के लिए,
   (आ) स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा के लिए
   (इ) कार्य शिक्षा के लिए

जबकि स्वपोषित विद्यालयों में प्रत्येक कक्षा पर न्यूनतम एक शिक्षक को नियुक्त करना ही तथा सामान्यत: 10 कक्षाओं पर 14-15 शिक्षक की नियुक्ति की जाती है। इन विद्यालयों में शिक्षकों के अतिरिक्त सेवक की भी नियुक्ति की जाती है। इन सबका मानधन भी शुल्क में से ही देना होता है। अत: शुल्क की प्रतिपूर्ति का यह सूत्र युक्ति संगत नहीं है।

अधिनियम के अध्याय 4 धारा 12 में यह प्रावधान है कि ऐसा विद्यालय उसके द्वारा कोई भूमि, भवन, उपस्कर या अन्य सुविधाएँ नि:शुल्क अथवा रियायती दर पर प्राप्त करने के कारण विनिर्दिष्ट संख्या में बालकों को नि:शुल्क शिक्षा उपलब्ध कराने की बाध्यता के अधीन है वहाँ ऐसा विद्यालय ऐसी बाध्यता की सीमा तक प्रतिपूर्ति के लिए हकदार नहीं होता।

यहाँ पर विचारणीय पक्ष यह है कि उपर्युक्त शासकीय सहयोग विद्यालयों को स्थायी संसाधनों के विकास के लिए प्रदान किया जाता है। जबकि विद्यालयों के शिक्षकों का मानधन व अन्य शैक्षिक कार्यों का सम्पादन तथा संचालन विद्यालय को प्राप्त होने वाले शुल्क की वार्षिक आय से ही होती है।

अत: जब किसी संस्था को उपर्युक्त कारणों से शुल्क की प्रतिपूर्ति नहीं जाती या कम की जाती है तो इसका सीधा प्रभाव विद्यालय की वार्षिक आर्थिक योजना पर पड़ता है, जिसके कारण शैक्षणिक गतिविधियाँ और उनकी गुणवत्ता प्रभावित होती है। ऐसे में आर्थिक दृष्ट्या अधिनियम का यह उपबंध ऐसे विद्यालयों के लिए अहितकर सिद्ध हो रहा है। अधिनियम की अनुसूची में विद्यालय हेतु आवश्यक भवन के मापदण्डों में यह भी उल्लेखित है कि दोपहर का भोजन को पकाने हेतु एक रसोई घर होना चाहिए। जबकि गैर अनुदानित विद्यालयों में जहाँ छात्र घर से भोजन लाते हैं, इस प्रावधान की कोई आवश्यकता ही नहीं है।

इन स्वपोषित विद्यालयों में वंचित वर्ग के जो छात्र पढ़ते हैं उनके गणवेश, भोजन तथा पाठ्य पुस्तकों के सम्बंध में अधिनियम मौन है। क्या वंचित वर्ग के बालकों को इन सुविधाओं से वंचित रखना न्यायसंगत है। इस अधिनियम को लागू हुए 8 वर्ष हो गए हैं। इस अवधि में ग्रामीण क्षेत्र में अध्ययनरत अनेक छात्राएँ कक्षा 6, 7 या 8 में पहुँच चुकी है। तथा अपने गाँव से दूर किसी अन्य गैरअनुदानित विद्यालय में पढ़ रही हैं। शासकीय विद्यालयों में पढ़ने वाली छात्राओं को मिलने वाली साइकिल की सुविधा इन स्वपोषी विद्यालयों में पढ़ने वाली छात्राओं को नहीं दी जा रही है। अत: इस पर पुनर्विचार करने की आवश्यकता है।

एक विशेष विचारणीय बिन्दु यह भी है कि ग्रामीण क्षेत्रों में जहाँ एक ओर छात्रों के अधिगम की स्थिति नगरों के छात्रों की तुलना में प्राय: कम होती है, वहीं दूसरी ओर सरकारी विद्यालयों में छात्र संख्या भी कम होती है। छात्र शिक्षक अनुपात के नियम के कारण प्राय: छोटे गावों के विद्यालयों में सामान्यत: दो शिक्षक ही नियुक्त होते हैं तथा उनमें से भी किसी कारण से एक शिक्षक अनुपस्थित रहता है तो परिणामस्वरूप शिक्षण का स्तर भी अपेक्षानुकूल नहीं रहता। कक्षा एक से पाँच तक के छात्रों को दो शिक्षकों द्वारा अध्यापन (भले ही छात्र संख्या 60 से कम हो) उचित प्रतीत नहीं होता है। वर्तमान में गतिविधि आधारित शिक्षण व्यवस्था में दो शिक्षक छात्रों के साथ न्याय नही कर पाते। सभी सर्वेक्षण यही बता रहे हैं कि प्राथमिक शिक्षा में अधिनियम की स्थिति अत्यंत दयनीय है।

अत: इस सम्बंध में समग्रता से पुनर्विचार करने की आवश्यकता है।

क्या इस प्रकार से विचार किया जा सकता है कि कक्षा दो तक बच्चों को गाँव में ही पढ़ाया जाए तथा कक्षा 3 से ऊपर के छात्रों हेतु पाँच, सात गाँव मिलाकर एक सर्वसुविधा सम्पन्न विद्यालय बनाया जाए तथा बच्चों को न केवल घर से लाने व पहुँचाने की व्यवस्था हो वरन् गृहकार्य भी विद्यालय में ही पूर्ण कराया जाए।

इस प्रकार के दिवा-आवासीय (डे बोर्डिंग) विद्यालय की व्यवस्था शायद ग्रामीण क्षेत्र हेतु अधिक लाभदायी सिद्ध हो सकती है।

6. अप्रवेशित तथा प्रारम्भिक शिक्षा पूर्ण किये बिना विद्यालय छोड़ने वाले बच्चों के सम्बंध में -

अधिनियम के अध्याय 2 की धारा 4 यह कहती है कि 6 वर्ष से अधिक की आयु के लिए बालकों ने विद्यालय में प्रवेश ही नहीं लिया है अथवा प्रारम्भिक शिक्षा पूर्ण नहीं की है तो उसे उसकी आयु के अनुसार समुचित कक्षा में प्रवेश दिया जाएगा तथा उसे अन्य बालकों के समान अधिगम स्तर प्राप्त करने के लिए विशेष प्रशिक्षण प्राप्त करने का अधिकार रहेगा।

यद्यपि यह उपबंध ऐसे छात्रों के विकास के लिए उत्तम तो हैं परन्तु यहाँ एक कठिनाई और भी है। इस धारा के अनुसार प्रारम्भिक शिक्षा से सर्वथा वंचित बच्चे आयु के मान से अपनी कक्षा में प्रवेश तो पा लेते हैं परन्तु उस कक्षा की शैक्षिक स्तर एवं शैक्षिक गतिविधियों में अपने आपको समायोजित नहीं कर पाते हैं और आयु के अनुसार उपयुक्त कक्षा में प्रवेश प्राप्त करने के उपरांत भी आवश्यक शैक्षिक परिलब्धियों को अधिगत करने में असमर्थ रहते हैं। इस सम्बंध में समस्या यह भी है कि जिस बच्चे ने पूर्व में किसी कक्षा में कोई शिक्षा पाई ही नहीं है एवं उसे आयु के मान से समुचित कक्षा में प्रवेश मिल चुका है तब उसके लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वह अपनी वर्तमान कक्षा का पाठ्यक्रम पूर्ण करने के लिए पूर्व कक्षा की कक्षाओं के अन्तर्गत पढ़ाई आधारभूत जानकारियों को भी सीखें। अधिगम की यह बाधा उसे कक्षा में पिछड़ा अनुभव कराती है जिससे उसका आत्मविश्वास भी प्रभावित होता है। अत: ऐसे छात्रों के लिए विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। अनेक प्रदेशों में ऐसे प्रशिक्षण की जो 3 माह या उससे अवधि के हैं, का प्रावधान किया गया है। यह प्रशिक्षण विद्यालय परिसर में या सुरक्षित आवासों में दिए जाने का प्रावधान भी है। इस प्रशिक्षण हेतु शिक्षकों के विषय में उल्लेखित किया गया है कि स्कूल में इस हेतु कार्य कर रहे शिक्षकों या इस प्रयोजन के लिए विशेष रूप से नियुक्त किए गए शिक्षकों द्वारा किया जाएगा। परन्तु वस्तुस्थिति का अध्ययन करने पर ध्यान में आता है कि विद्यालयों में शिक्षकों की संख्या प्राय: अपर्याप्त होती है उस पर भी वे मध्याह्न भोजन एवं ऐसे ही अन्य कार्यों की व्यवस्था में नियुक्त होते हैं। इन परिस्थितियों में प्रशिक्षण हेतु नियुक्त शिक्षकों की संख्या और समय की उपलब्धता न होने के कारण प्रशिक्षण समुचित रूप से पूर्ण नहीं हो पाता है। वस्तुत: यह कार्य अत्यंत जटिल है। तथा इस हेतु विशेष रूप से प्रशिक्षित शिक्षक नियुक्त किए जाने चाहिए । अभी तो अनेक प्रदेशों के सरकारी विद्यालयों में भी नियमित शिक्षकों की नियुक्ति की ही समुचित व्यवस्था नहीं हैं।

7. शिक्षकों को अन्य कार्य में न लगाना जाना

अध्याय 4 धारा 27 के अनुसार किसी शिक्षक को दस वर्षीय जनगणना, विभीषिका, राहत कार्यों, स्थानीय प्राधिकारी या राज्य विधानमंडलों या संसद के निर्वाचन से सम्बंधित कर्तव्यों से भिन्न किसी गैर शैक्षिक प्रयोजन के लिए अभिनियोजित नहीं किया जाएगा।

इस धारा का परिपालन भी इस कारण समस्यापूर्ण है कि देश में सभी चुनाव एक साथ नहीं होते इससे समय-समय पर मतदाता सूची एवं निर्वाचन कर्तव्यों में संलग्न होने से शिक्षकों का शैक्षणिक दायित्व प्रभावित होता है। चुनाव सुधार के अन्तर्गत एक साथ निर्वाचन कर पाने से ही यह समस्या नियंत्रित होना सम्भव है।

8. शिक्षकों की गरिमा पर चिन्तन नहीं -

शिक्षकों के कर्तव्यों को प्रमुख रूप से रेखांकित करने वाले इस अधिनियम में शिक्षकों के केवल कर्तव्यों का ही विवेचन किया गया है उनके अधिकारों पर यह कुछ भी नहीं कहता। अनेक प्रदेशों में वर्षानुवर्ष शिक्षकों की नियुक्तियाँ न की जा कर तदर्थवादी अध्यापक संवर्ग/ शिक्षाकर्मी/ शिक्षामित्र/ गुरुजी जैसी नियुक्तियाँ कर काम चलाया जाता है। इसके कारण अपनी अजीविका की अनिश्चितता से ग्रस्त इन शिक्षकों की सामाजिक प्रतिष्ठा एवं आत्मसम्मान को ठेस पहुँचती है। ऐसे में उनसे उच्च गुणवत्तापूर्ण एवं चुनौती भरे दायित्व के निर्वहन की अपेक्षा कैसे की जा सकती है?

शिक्षकों की इस विचारणीय स्थिति

से ही सम्बद्ध एक और तथ्य है कि यह अधिनियम यह तो तय करता है कि सभी शिक्षक बी.एड./डी.एड./माण्टेसरी जैसी शिक्षक प्रशैक्षणिक अर्हताएँ अनिवार्यत: प्राप्त करें। यह अपेक्षा उचित भी जान पड़ती है। तथापि विभाग को नियंत्रित करने वाले उच्चाधिकारियों के शिक्षाविद् होने की अनिवार्यता के सम्बंध में अधिनियम मौन है। परिणामत: शिक्षा सिद्धांतों एवं शिक्षा कर्म से अनभिज्ञ ऐसे पदाधिकारी केवल शिक्षकों की वास्तविक परेशानियों और समस्याओं से अबोध रहते हैं। इतना भर नहीं बल्कि वे शिक्षकों को सम्मान दृष्टि से न देखकर दोयम दर्जे का कर्मचारी मान कर व्यवहार करते हैं।

भारतीय संस्कृति परम्परा में ईश्वरतुल्य सर्वोच्च सम्मान प्राप्त शिक्षक का ऐसा अवमान कर हम उससे इन जटिल परिस्थितियों पर विजय पाने की कामना कैसे कर सकते हैं? अत: इस सम्बंध यह सुझाव है कि प्रदेश तथा केन्द्र स्तर पर अन्य सेवाओं के समान ही प्रादेशिक व अखिल भारतीय शैक्षिक सेवाओं की व्यवस्था बनाई जाए तथा शिक्षा विभाग नियुक्तियाँ उसके माध्यम से की जाएँ।

9. शिक्षक की नियुक्ति के लिए अर्हताएँ और सेवा के निबन्धन और शर्तें

इस सम्बंध में अधिनियम की धारा 23 में उल्लिखित है कि कोई व्यक्ति, जिसके पास केन्द्रीय सरकार द्वारा अधिसूचना द्वारा प्राधिकृत किसी अकादमिक प्राधिकरण द्वारा यथा अधिकथित ऐसी न्यूनतम अर्हताएँ हैं, शिक्षक के रूप में नियुक्ति के लिए पात्र होगा।

इस धारा के अनुपालन में सहायक शिक्षक हेतु डी.एड., डी.एल.एड. या समकक्ष तथा उच्च श्रेणी हेतु बी.एड. का प्रशिक्षण तथा इसके अतिरिक्त शिक्षक पात्रता परीक्षा (टी.ई.टी.) उत्तीर्ण करना अनिवार्य किया गया है। यहाँ पर एक समस्या यह है कि डी.एड. या बी.एड. का प्रशिक्षण प्राप्त अभ्यर्थियों का शिक्षक पात्रता परीक्षा (टी.ए.टी. में परीक्षा लगभग 10 से 15 प्रतिशत तक रहता है। बड़ी संख्या में प्रशिक्षण प्राप्त अभ्यर्थी अनुत्तीर्ण हो जाते हैं। इस प्रकार युवाओं का प्रशिक्षण प्राप्ति में लगाया गया समय, धन व्यर्थ हो जाता है तथा प्रतिभागियों में कुण्ठा उत्पन्न होती है। यह परिणाम इन प्रशिक्षण महाविद्यालयों की गुणवत्ता पर बहुत बड़ा प्रश्न चिह्न है। जिन डी. एड. या बी.एड. कॉलेजों में युवा प्रशिक्षित हो रहे हैं उनकी दु:स्थिति सभी जानते हैं। बिना उन प्रतिष्ठानों में उपस्थित हुए ही शिक्षार्थियों को डिप्लोमा या डिग्री प्राप्त हो जाती है। अत: आवश्यक है यह कि प्रशिक्षण महाविद्यालयों में प्रवेश के पूर्व ही अभ्यार्थियों की योग्यता को कड़ाई से जाँचा जाए तथा प्रशिक्षण महाविद्यालयों की गुणवत्ता के उन्नयन की व्यवस्था की बनायी जाए। छात्र द्वारा प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात् नियुक्ति के पूर्व उसकी कोई परीक्षा न ली जाए।

शिक्षण का केन्द्र बिन्दु है शिक्षक। वर्तमान में सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था में वही सर्वाधिक दुर्लक्षित है। अत: शिक्षकों के प्रशिक्षण पर गंभीर विचार किया जाना चाहिए तथा केवल चयन पूर्व ही नहीं तो सेवा कार्य करते समय भी शिक्षकों के सतत् एवम् समुचित प्रशिक्षणों की व्यवस्था की जाने की आवश्यकता है तथा यह प्रशिक्षण केवल ज्ञानात्मक, बोधात्मक व कौशलात्मक ही नहीं, भावात्मक भी होना चाहिए।

10. मूल्यांकन की पद्धति तथा रोकने व निष्कासन का प्रतिषेध -

अधिनियम की धारा 16 में यह उल्लिखित किया गया है कि किसी विद्यालय में प्रविष्ट बालक को किसी कक्षा में नहीं रोका जाएगा या विद्यालय से प्रारम्भिक शिक्षा पूरा किए जाने तक निष्कासित नहीं किया जाएगा। इस धारा के अनुसार किसी भी कक्षा में किसी बच्चे को अनुत्तीर्ण घोषित नहीं किया जा सकता है। भले ही यह प्रावधान बच्चे को प्रोत्साहित करने के लिए किया गया हो पर प्रोत्साहन की यह पद्धति व्यावहारिक तौर पर इसलिए असफल है कि इसमें बच्चा निरंतर अगली कक्षा में प्रोन्नत तो होता जाता है पर उसके द्वारा पूर्व कक्षा का पूर्व निर्धारित पाठ्यक्रम पूरी तरह से अधिगत न होने से उस कक्षा दर कक्षा इस कमी का बोझ बढ़ता जाता है। इस न्यूनताओं के परिणामस्वरूप वह नया सीखने में भी बाधा अनुभव करता है और एक स्थिति तो ऐसी आती है कि वह प्रमाण पत्र तो पा जाता है परन्तु अपने अपूर्ण अधिगम के कारण सामाजिक जीवन की प्रतिस्पर्धा में अपने शैक्षिक ज्ञान के व्यावहारिक प्रयोग के अवसरों पर अपने आपको असफल अनुभव करता हुआ अवसाद का शिकार हो जाता है। इस प्रकार जो प्रक्रिया उसके प्रोत्साहन एवं आत्मबल को बढ़ाने के उद्देश्य से रची गई है वह उसे अवसाद और अपमान के धरातल पर ले जाती है।

अधिनियम सतत एवं समग्र मूल्यांकन की अनिवार्यता बताता है। अत्यन्त उपयोगी, सरल और व्यावहारिक प्रतीत होते हुए भी यह प्रक्रिया व्यवहार

में बहुत जटिल है। बच्चों के सर्वांगीण विकास को दृष्टिगत रखते हुए उसे पाठ्यक्रम के हिन्दी, गणित, सामाजिक विज्ञान आदि विषयों के प्रश्नपत्र हल करने के आधार पर मूल्यांकन करना निश्चित ही अवैज्ञानिक है। इसके लिए बालक की अनेक प्रकार की विकासमान प्रवृत्तियों का आकलन करते हुए उसका समग्र मूल्यांकन हो सकता है, यह बात भी निर्विवाद रूप से सत्य है लेकिन इसका जो स्वरूप विकसित हुआ है और प्रवर्तित है, उससे यह मात्र औपचारिकता भर बनकर रह गया है। अपर्याप्त शिक्षक, शिक्षणेतर एवं शैक्षिक दायित्वों की प्रचुरता और अन्य विसंगतियों के दुष्प्रभावों के चलते किसी शिक्षक द्वारा सारे बच्चों का सतत एवं समग्र मूल्यांकन करना व्यावहारिक सिद्ध नहीं हो पाया रहा है। शिक्षकों में समग्र मूल्यांकन की क्षमता का आभाव एक बड़ी बाधा है। फलत: उसका समग्र आंकलन, मूल्यांकन केवल कागजी कार्यवाही बन गया है।

अत: सतत एवं समग्र मूल्यांकन की प्रक्रिया को अधिक व्यावहारिक बनाने के लिए गहन शोध एवं परिष्कार आवश्यक है।

11. बस्ते का बोझ

यह अधिनियम बच्चों पर बढ़ रहे बस्ते के सम्बंध में पूर्णत: मौन है। निजी क्षेत्र के विद्यालयों में तो पाठ्यक्रम पुस्तकों व अन्य सहायक सामग्री के नाम पर बस्ते को आर्थिक रूप से ही नहीं, भौतिक रूप से भी अत्याधिक भारी बना दिया है। आर्थिक भार तो अभिभावकों पर होता है। परन्तु भौतिक भार तो दिन प्रतिदिन बच्चों के कंधे ही ढोते हैं। अँग्रेजी माध्यम के महँगे पब्लिक स्कूलों की देखा देखी अन्य विद्यालय भी इस अन्धी दौड़ में शामिल हो गए हैं तथा मजबूरी में अभिभावक और बच्चे क्रमश: आर्थिक और भौतिक बोझ ढो रहे हैं।

दिल्ली उच्च न्यायालय का निर्देश है कि किसी भी बच्चे के बस्ते का भार उसके स्वयं के भार के 10 प्रतिशत से अधिक नहीं होना चाहिए। परन्तु व्यवहार में यह देखने को आता है कि बच्चों के बस्ते का वजन उनके वजन का एक चौथाई तक होता है। अधिनियम में इस विषय में कोई भी निर्देश नहीं दिए गए हैं।

12. मातृभाषा में शिक्षा –

मातृभाषा में शिक्षा के सम्बंध में अधिनियम के अध्याय 5(च) में एक छोटा सा वाक्य लिखा है ''शिक्षा का माध्यम जहाँ तक सम्भव है मातृभाषा में होगा।'' केवल इतने से संकेत मात्र से मातृभाषा सम्बंधी गूढ़, महत्त्वपूर्ण और मनोवैज्ञानिक विषय की इतिश्री किया जाना घोर आपत्तिजनक है।

एक ओर संसार के अधिकांश शिक्षाशास्त्री इस विषय पर एकमत है कि बच्चे की प्रारम्भिक शिक्षा का माध्यम उसकी मातृभाषा ही होनी चाहिए। विश्व के सभी समुन्नत देशों में सम्पूर्ण शिक्षा वहाँ की मातृभाषा में प्रदान की जाती है। दूसरी ओर इस सनातन और पुरातन राष्ट्र में प्राथमिक शिक्षा में भी मातृभाषा माध्यम की उपेक्षा मानसिक दासता को ही परिलक्षित कर रही है। वास्तव में अधिनियम में इस बात का स्पष्ट उल्लेख किया जाना चाहिए था कि प्रारम्भिक शिक्षा का माध्यम मातृभाषा ही होगा। शिक्षा क्षेत्र के मान्य विद्वानों के इतने महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष की इस प्रकार से अनदेखी करना पूर्णत: अनुचित है। आज उच्च वर्ग तथा उसकी देखादेखी अन्य वर्ग भी मातृभाषा में शिक्षा की वैज्ञानिकता को न समझकर अँग्रेजी भाषा के माध्यम से शिक्षा की मृगमरीचिका में भटक रहे हैं और बच्चों को न तो मातृभाषा का ज्ञान ठीक प्रकार से हो रहा है न अँग्रेजी का। मातृभाषा में शिक्षा से विहीन बच्चे अपनी संस्कृति से भी पूर्णत: कट जाते हैं। उन्हें अपनी संस्कृति की श्रेष्ठता का ज्ञान ही नहीं होता। वे अपने साहित्य, परंपरा तथा समाज से कट जाते हैं और ऐसी पीढ़ियाँ निर्माण होने लगती हैं जिनमें राष्ट्र के प्रति गौरव का भाव ही विकसित नहीं होता तथा ऐसे राष्ट्रों का भविष्य कभी भी उज्ज्वल नहीं होता।

अभिभावक की अविचारपूर्ण स्पर्धा और मानसिक दबाबों के कारण इस महत्त्वपूर्ण लक्ष्य की अनदेखी कर, मातृभाषा माध्यम को छोड़कर अँग्रेजी माध्यम में पढ़ाने की ओर प्रवृत्त हो जाते हैं। जिस प्रकार शिक्षा प्राप्त करना हर बच्चे का अधिकार है ठीक उसी प्रकार से मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त करना भी उसका अधिकार है जो वर्तमान युग की चकाचौंध में, प्रचार के दुष्प्रभाव में अभिभावकों के असमंजस में बच्चों से छीन लिया गया है।

कुछ अन्य महत्त्वपूर्ण बिन्दु

सामाजिक सरोकारों से सम्बंधित एक महत्त्वपूर्ण तथ्य यह है कि इस अधिनियम के कारण शिक्षा की विषयवस्तु के रूप में सभी प्रदेशों में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् (एन.सी.ई.आर.टी.) द्वारा प्रकाशित पाठ्यपुस्तकों को अंगीकार करने का भाव प्रबल हो रहा है। परन्तु सम्पूर्ण देश के लिए एक सी पाठ्यपुस्तकें लागू करने में एक दोष यह है कि इसके

कारण स्थानीय भाषा, भूगोल, इतिहास आदि के ज्ञान से छात्र अनभिज्ञ रहते हैं। जो प्राथमिक कक्षाओं के पाठ्यपुस्तकों का अभिन्न अंग होना चाहिए। ज्ञात से अज्ञात की ओर और यह महत्त्वपूर्ण शिक्षण सूत्र है बच्चों को प्रारम्भिक कक्षाओं में अपने नगर, जिले, प्रदेश आदि के पर्यावरण, इतिहास, भूगोल, सामाजिक संरचना, सांस्कृतिक विशेषताओं तथा क्षेत्र की समस्या एवं चुनौतियों का ज्ञान होना चाहिए। यह उसके क्रमिक अध्ययन का प्रारम्भिक सोपान है। एन.सी.ई.आर.टी. की पुस्तकें इस अभाव की पूर्ति नहीं कर सकती। अत: प्रारम्भिक कक्षाओं की पाठ्यपुस्तकों को स्थानीय परिवेश तथा प्रादेशिक जानकारियों से परिपूर्ण होना आवश्यक है।

उपसंहार

शिक्षा के बारे में मार्गदर्शन तथा संशोधन करने का अधिकार वस्तुत: शिक्षाविदों को ही दिया जाना चाहिए। परन्तु अभी तो शिक्षा क्षेत्र के सम्बन्ध में सभी निर्णय राजनेता और नौकरशाही ही लेती है। वास्तव में इस हेतु स्वतंत्र शिक्षा आयोग स्थापित किया जाना चाहिए।

इस प्रकार नि:शुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार देने वाला यह महत्त्वपूर्ण अधिनियम अपनी मूल भावना में अत्यन्त असरकारी होते हुए भी मात्र एक सरकारी योजना बन कर औपचारिकता की भेंट न चढ़ जाए इसके लिए आवश्यक है कि इसकी आंतरिक विसंगतियों को दूर किया जाए। इसके क्रियान्वयन की बाधाओं के व्यावहारिक हल खोजे जाएँ। अनुभवों को आधार बना कर इसकी समय-समय पर समीक्षा करते हुए इसे अधिकाधिक प्रभावी बनाया जाए। यह अधिनियम राष्ट्र का भविष्य माने जाने वाले बच्चों के व्यक्तित्व के समग्र विकास के पथ को प्रशस्त करने के लिए निर्मित है। इसे अपने अभीष्ट तक पहुँचाने के लिए प्रेरणा और योजना दोनों को ध्यान में रखकर क्रियान्वित करना होगा। बाधाएँ और विसंगतियाँ जितनी शीघ्र निवारित होंगी, लक्ष्य उतना ही सन्निकट होगा। राजनैतिक सत्ताएँ परिवर्तनशील हैं परन्तु राष्ट्र, समाज और संस्कृति का अस्तित्व निरतंर-चिरन्तन रहता है। संस्कृति निरंतर है, राष्ट्र अमर है तथा बच्चे राष्ट्र का भविष्य हैं। उनके लिए की गई योजना सदैव सुनिश्चित, दूरगामी और बहुआयामी होनी चाहिए जिसे समय-समय पर परिष्कृत भी किया जाना चाहिए। अनुभव प्रत्येक योजना के परिष्कर का महत्वपूर्ण कारक है। अनुभवों की उपेक्षा योजना को निस्सार बना देती है।

यह अधिनियम आधुनिक भारत में प्रारम्भिक कक्षाओं की शिक्षा की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण प्रयोग है। प्रसन्नता का विषय है कि यह अधिनियम समाज के वंचित बच्चों को अज्ञान के अंधकार से ज्ञान के प्रकाश की ओर बढ़ने का मार्ग प्रशस्त कर रहा है।

सरकारें भी समाज का ही अंग हैं अत: सामाजिक क्षेत्रों से प्राप्त सुझावों एवं संशोधनों को स्वीकारते हुए इस अधिनियम में आवश्यक परिवर्तन कर इसे विश्व की आदर्श शिक्षा योजना के रूप में प्रस्तुत किया जाए जिससे हमारे देश का प्रत्येक बालक सुशिक्षित, संस्कारित व देशभक्त बने तथा राष्ट्र को समुन्नत बनाने में अपना समुचित योगदान प्रदान करे।

– **श्री श्रीराम अरावकर**
राष्ट्रीय महामंत्री,
विद्या भारती अ.भा.शि.सं.

आगामी अंकों के लिए आमंत्रित रचनाओं हेतु प्रमुख विषय

- आपके द्वारा किए गए शैक्षिक प्रयोग (समाज परिवर्तन, शिक्षा, विज्ञान, साहित्य, कला, संगीत, खेल, अध्यात्म आदि क्षेत्रों की विभूतियों के जीवन परिचय)
- मौलिक लेख, कविता, कहानी, महान विभूतियों के विनोद प्रसंग, व्यंग्य एवं जीवन प्रसंग।
- नवीनतम वैज्ञानिक अनुसंधान एवं सिद्धांतों पर आधारित लेख एवं जीवन प्रसंग।
- विभिन्न क्षेत्रों में भारत की प्रगति की जानकारी देने वाले लेख एवं विवरण, संस्मरण।
- भारत के गौरवशाली अतीत के अनछुए पहलू व प्रसंग।

हमारे विद्यालय बहुआयामी विकास के आधार

प्रयाग विश्वविद्यालय के भौतिकी विभाग के अध्यक्ष रहे पूजनीय सरसंघचालक रज्जूभैया राष्ट्रीय शिक्षा नीति के विकास के साथ अनन्य रूप से जुड़े रहे हैं। सरल भाषा और सूक्ति शैली उनकी विशेषता थी। प्रस्तुत है विद्या भारती के चिन्तन को प्रकट करता उनका लेख विद्यालय का स्वरूप।

कभी-कभी मन में उठ सकता है हमने जगह-जगह अनेक परिसंवाद आयोजित किए। इतने बुद्धिमान विचारशील लोगों को बुलाया, कुछ चिंतन हुआ कुछ विचार आए।

गोष्ठी की वास्तविक उपयोगिता

प्रथम तो भारतीय चिंतन आधारित शैक्षिक गोष्ठियों में अपने विचार और अधिक स्पष्ट होते हैं। अन्य लोगों के साथ जब विचारों का आदान-प्रदान होता है तो अपने विचारों की काट-छाँट होती है। जो अस्पष्ट होते हैं वे और स्पष्ट हो जाते हैं। हम लोग हजारों विद्यालय चलाते हैं, हम को तो किसी ने नहीं रोका। हम साकारात्मक विचारों को अपने विद्यालयों के अंदर क्रियान्वित करके देखें तो हमारे मन में यह भावना (जिसे कुंठा कहते हैं) निर्माण नहीं होगी कि हमने इतनी मेहनत की और सरकार ने केवल एक लघु अंश को लिया।

धार्मिक शिक्षा का महत्त्व

शिक्षा के उद्देश्य की दृष्टि से विचार हुआ कि ऐसा-ऐसा मानव हमें शिक्षा के माध्यम से तैयार करना है। मानव के उस रूप का शब्दों में थोड़ा हेर-फेर होगा मगर श्रेष्ठ मानवता ही धर्म है-बहुसंख्यक समाज को उससे वंचित करना संविधान की गलत व्याख्या है। सम्पूर्ण विद्यालयों में धर्म की शिक्षा देना हमारा अधिकार है। हिम्मत के धर्म की शिक्षा दें। यदि कोई चुनौती देता है तो उसकी चुनौती को स्वीकार करें। हमारा धर्म किसी मत की संकुचित धारणा से जुड़ा हुआ नहीं है। यह ऐसा धर्म है, जिसकी परिभाषा सरल शब्दों में स्पष्ट है जो ऋषि-मुनियों ने दी है। चाहे वेदव्यास हो या तुलसीदास जी "जो परहित सरिस धर्म नहीं भाई। परपीड़ा सम नहिं अधमाई।।" पाप और पुण्य को धर्म और अधर्म की व्याख्या स्पष्ट रूप से की है। दूसरे की सेवा करना, दूसरे के दुःख से दुखित होना, दूसरे के प्रति अपनत्व जागृत करना यही मानव का धर्म है। इसकी शिक्षा देना कौन सा विधान रोक सकता है? इसलिए हिम्मत के साथ इस विचार को लेकर आगे बढ़ें। अपने प्रार्थना के कालांश के अंदर, अपने विद्यालय के अंदर इस प्रकार की शिक्षा दें, इस प्रकार के उदाहरण हेतु लघु कथाएँ बताएँ। 1968 में जो शिक्षा का मसौदा बनाया गया डॉ. कोठारी कमीशन के आधार पर उसमें स्पष्ट रीति से इस आवश्यक बताते हुए बल दिया गया परन्तु यह क्रियान्वित नहीं हुआ। परन्तु हमें अपने विद्यालयों में इस प्रकार की शिक्षा को सुदृढ़ता से लागू करना है।

इतिहास एवं भूगोल का शिक्षा में स्थान

इसी प्रकार की दूसरी बात है देश की एकात्मता को सुरक्षित रखना। यह अब सारे देश के लोगों की समझ में आ रहा है। प्रायः सभी भाषणों व चिंतनों में दो ही विषय आते हैं हमारे नेता और कोर्स में दोहराने वाले लोग भी कहते हैं कि हम अपनी सांस्कृतिक विरासत और आध्यात्मिकता को नहीं भूलें।

विज्ञान की प्रगति के साथ-साथ हम इसकी चकाचौंध के अधीन न हो जाएँ। डॉ. कोठारी इसे इसे राम और रोटी कहते हैं, आचार्य विनोबा भावे उसको आध्यात्मिक और भौतिक शिक्षा कहते हैं। कई शब्द अलग होंगे। सभी देश की एकात्मता, देश की अखंडता के बारे में कहते हैं। अब प्रश्न यह है कि हम लोग ठीक से इतिहास और भूगोल नहीं पढ़ायेंगे तो कैसे एकात्मता और अखंडता को समझा जा सकता है। हमारे देश की एकात्मता में जब-जब विघ्न पड़ा है तब तब क्या-क्या कठिनाइयाँ उपस्थित हुईं, बिना इतिहास पढ़े यह समझ में नहीं आएगा।

जब हम छोटे-छोटे राजाओं के राज्यों में बँटे रहे और आपस में सम्बन्ध दृढ़ नहीं रहे तो वह एकात्मता शिथिल हो गई। तभी देश विदेशियों के चंगुल में फँसा विदेशियों का गुलाम बना। इसलिए अगर इस इतिहास को नहीं जानेंगे तो यह बात कहने मात्र से हृदय के अंदर आस्था के नाते बैठेगी नहीं कि सम्पूर्ण देश को एक रहना चाहिए। ठीक है शिक्षा के लिए स्वायत्तता की बात। स्वायत्तता तो ग्रामीण अंचलों तक भी पहुँचनी चाहिए। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि इतिहास की सच्ची सीख के लिए इतिहास को ही न पढ़ाया जाए, भूगोल को न पढ़ाया जाए। हमारे महापुरुषों ने इसके लिए प्रयास किए। शंकराचार्य जी ने देश के चारों दिशाओं में मठों की

स्थापना की। हमारे देश के साधु-संतों ने चाहे वे किसी भी मत के क्यों न हों चाहे ज्यातिर्लिंग की ही स्थापना क्यों न हो, चाहे शक्तिपीठों का हो, चाहे बौद्ध-जैन के तीर्थ हों सम्पूर्ण देश के अंदर एकता का जाल बिछाया है ताकि सम्पूर्ण देश में देश को जानने के लिए भक्ति भाव से यात्रा हो। रामजन्म का महोत्सव होता है। आप तो परिचित ही हैं। अयोध्या के अंदर राम जन्मभूमि पर भव्य मंदिर का निर्माण होना चाहिए। लाखों लोग विदेशों से आते हैं उनके मन में एक भावना रहती है कि हमारे देश के महापुरुष भगवान श्रीराम का जो जन्म स्थान है वह भी भव्य हो।

हमारे यहाँ तो भूगोल की जानकारी हेतु श्लोक है :-

''अयोध्या, मथुरा, माया, काशी,
काञ्ची अवन्तिका।
पुरी द्वारावती चैव सप्तैते
मोक्षदायिका॥''

हमें आग्रह के साथ शिक्षा द्वारा इतिहास और भूगोल के प्रति रुचि उत्पन्न करनी होगी तभी हमारे विद्यार्थी भावी नागरिक के रूप में राष्ट्र और उसकी एकता को समझ सकेंगे।

पर्यावरण के प्रति सजगता

एक शिक्षा और भी आवश्यक है कि आज हमें पर्यावरण के प्रति और सजग होना चाहिए। यह बिगड़ रहा है। हमारी प्रचीन शिक्षा में दो शब्द आए थे ऋषि ऋण और देव ऋण। पितृ ऋण का स्मरण दिलाने के लिए तो घर में पिता जी बताते हैं कि शादी नहीं करोगे तो परिवार कैसे बढ़ेगा, काम नहीं करोगे तो हमारा घर और कुटुम्ब कैसे चलेगा? परन्तु इन दोनों ऋणों के प्रति यानि पर्यावरण और समाज के प्रति आवश्यक संवेदनशीलता कैसे सिखाई जाए। पूर्वजों ने भी इसका विचार किया कि प्रकृति के प्रदूषण को कैसे रोका जाए। नहीं तो शायद प्रगति की अंधी दौड़ में सम्पूर्ण वायुमंडल ही प्रदूषित हो जाएगा। शायद हम सब का जीवन ही संकट में पड़ जाए। उसी प्रकार हम स्मरण करें कि समाज से हमें क्या मिला और हमने समाज को क्या दिया। ऐसे महापुरुषों की जीवनियाँ मिली हैं कि जिनको केवल पढ़ने मात्र से हमारे जीवन में श्रेष्ठ कर्म करने के संस्कार आते हैं। ऐसे महापुरुषों के प्रति ऋषि ऋण अर्थात् कृतज्ञता प्रकट करें। हम भी इस सांस्कृतिक धरोहर को बढ़ाने व इसकी रक्षा करने में अवश्य कुछ योगदान दें। इस प्रकार की शिक्षा हमें विद्यार्थियों को देनी चाहिए।

भाषा

इसी के साथ-साथ जुड़ा है भाषा का विषय जो थोड़ा संवेदनशील है। धीरे-धीरे एक बात का प्रयास होना चाहिए और यह प्रयास करने से ही सफलता मिलेगी कि देवनागरी लिपि के साथ हम आजादी के पहले और बाद से अब तक जुड़े हैं आगे भी जुड़े रहेंगे। अपनी भावी पीढ़ी को भी देवनागरी लिपि हम सिखाएँ। आज भी संस्कृत इसी भाषा में लिखी जाती है। मराठी भी इसी भाषा में लिखी जाती है। हिन्दी, नेपाली, डोगरी की भी लिपि वही है। गुजराती की भी लिपि वही है, बस सिर के ऊपर रेखा नहीं है शेष सब कुछ वही है। इसलिए पढ़ने में कोई कठिनाई नहीं है। तीन चार दिन में हम इसको पढ़ने लगते हैं। यह देवनागरी कैसे प्रचलित हो, कैसे सीखी जाए और कैसे सिखाई जाए यह सोचेंगे तभी यह स्वाभाविक रीति से आगे बढ़ेगी। विनोबा जी का भी यही सुझाव था कि देवनागरी लिपि को प्रचारित किया जाए, प्रसारित किया जाए और लोगों तक पहुँचाई जाएँ ताकि लोग इसमें अपनी भाषा लिख सकें। इसकी बड़ी ही आवश्यकता है। मैं समझता हूँ कि देवनागरी लिपि का अभ्यास होने से बहुत सी बातें सुविधाजनक हो जाएँगी। किसी की भी भावनाओं को चोट न पहुँचाते हुए भी देश की एकात्मता, देश का स्वाभिमान इसको जितना जगाते चलेंगे उतना ही अच्छा होगा। हमें अन्य भाषा को भी पढ़ना चाहिए, साइन बोर्ड पढ़ सकेंगे, इधर-उधर जाएँ अथवा पूरे देश में आना जाना हो तो आसानी रहेगी। इसका दूसरा भी पक्ष है कि हिन्दी भाषी बंधु अन्य लिपि और भाषा को भी सीखें। जब में दक्षिण में जाता हूँ तो प्रदेशवासियों से यहीं आग्रह रहता है। दक्षिण के चारों प्रदेश अगर एक लिपि में पढ़ने लगेंगे तो उत्तर के लोगों को बड़ी आसानी होगी। बस एक लिपि दक्षिण की सीख ली और एक देवनागरी सीख ली। इससे एकात्मता आएगी।

प्रधानाचार्य का दायित्व सर्वोपरि

हम स्थानीय समाज में कार्य करते हुए राष्ट्र का विचार करते हैं। समाज के बहुआयामी विकास का आधार हमारे विद्यालय बनेंगे, योजनाएँ क्रियान्वित होंगी तभी वास्तविक प्रगति होगी। इस प्रक्रिया में प्रधानाचार्य ही मुख्य कुंजी है। किसी विद्यालय में भवन अच्छा है, पुस्तकालय अच्छा है, किन्तु यदि प्रधानाचार्य अच्छा नहीं है तो वह विद्यालय भी विकास नहीं कर पाएगा। प्रधानाचार्य कर्मठ और अच्छा मिल गया तो समय तथा अवसर कमजोर विद्यालय भी बहुत अच्छा बन जाता है। विद्यालय को चलाने में प्रधानाचार्य ही सबसे प्रमुख नायक है इसलिए उसका महत्वपूर्ण स्थान है।

स्वयं स्वीकृत दायित्व

मैं यह कहना चाहता हूँ कि सबसे

पहली बात है कि प्रधानाचार्य या आचार्य अध्यापक अपनी रुचि के अनुसार हो, अर्थात् अध्यापन कार्य में उसकी लगन हो। आज लोग अध्यापन कार्य को नीचा (छोटा) कार्य समझते हैं। मेधावी व्यक्ति पहले आई.ए.एस. आदि विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में बैठेंगे और जब उनको कहीं स्थान नहीं मिलता है तो शिक्षा के क्षेत्र में अध्यापक बनना चाहते हैं। किन्तु अच्छे मेधावी लोग शिक्षा के क्षेत्र में रुचिपूर्वक आने चाहिए।

एक बार सन्त प्रभुदत्त ब्रह्मचारी से किसी ने पूछा कि संस्कृत इतनी श्रेष्ठ भाषा होते हुए भी आज उसकी समाज में कोई प्रतिष्ठा क्यों नहीं है? उसकी इतनी दुर्दशा क्यों है? उन्होंने बताया कि आज संस्कृत का पंडित भी मेधावी लड़के को इंजीनियरिंग या मेडिकल में भेजेगा। यदि उसका कोई लड़का बिल्कुल पिछड़ा हुआ मंदबद्धि है तो उसको संस्कृत पढ़वाता है ताकि वह अपना जीवनयापन कर सके। हम रुचिपूर्वक अध्यापक बनें तभी इसका महत्त्व बढ़ेगा। रुचि होने से ही हमारे विद्यालय अपने उद्देश्य की पूर्ति कर सकेंगे।

अर्थ का अध्यापन कार्य में स्थान

यह ठीक है कि अध्यापक को वेतन कम मिलता है किन्तु विश्व में सभी देशों में अध्यापक को अन्यों के अपेक्षा कम ही वेतन मिलता है। परन्तु बच्चे अध्यापक को देवस्वरूप मानते हैं -आचार्य देवो भव। अतः यह संतोष और सम्मान का भाव रहने पर ही अध्यापक श्रेष्ठ बन सकता है।

प्रधानाचार्य के गुण

प्रधानाचार्य को एक श्रेष्ठ अध्यापक तो होना ही चाहिए। हर व्यक्ति जो योग्य प्रशासक है, श्रेष्ठ अध्यापक नहीं हो सकता है परन्तु प्रयत्न से तो बन ही सकता है। प्रधानाचार्य को यह नहीं सोचना चाहिए कि मेरा कार्य तो केवल प्रशासन करना है। प्राथमिक रूप पहले उसे अच्छा अध्यापक होना चाहिए तभी अपने विद्यालय में अध्यापकों और छात्रों पर उसका अच्छा प्रभाव पड़ सकता है।

प्रधानाचार्य को कुछ कालांश भी लेने चाहिए। सभी इस ओर देखते हैं कि इस विद्यालय का परीक्षाफल कैसा है, यह शिक्षण के स्तर से ही पता चलता है। अतः अध्यापक किस प्रकार की रुचि अध्यापन में लेते हैं, कैसा पढ़ाते हैं, प्रधानाचार्य को इस पर पूरा ध्यान देना चाहिए। इससे विद्यालय का शिक्षण का स्तर उन्नत होता है। अध्यापकों को चयन करते समय जिनमें पढ़ाने की क्षमता अच्छी हो उनका ही चयन करना चाहिए।

अच्छी टीम विकसित करने की क्षमता

दूसरी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि विद्यालय में योग्य वातावरण निर्माण के लिए प्रधानाचार्य के साथ अध्यापकों की एक अच्छी टोली हो। प्रधानाचार्य उस टोली का एक योग्य कप्तान के समान हो। प्रधानाचार्य को सभी अध्यापकों से सहयोग प्राप्त करना चाहिए। उनसे विचार विमर्श करना चाहिए। अध्यापकों यह लगना चाहिए कि प्रधानाचार्य जो हमारी बात सुनते हैं हमें उनका विश्वास अर्जित करना चाहिए। विद्यालय के शिक्षण सम्बंधी तथा शिक्षणेतर काम भी सभी अध्यापकों में बँटे हुए हों। किसी को बाल भारती का, किसी को पुस्तकालय का, किसी को कार्यालय का, इस प्रकार का काम बाँटकर सबको सहयोग लेना चाहिए। प्रत्येक अध्यापक की योग्यता और अनुभव बढ़ाने में सहयोग दें ताकि वह अधिक से अधिक दायित्व निभा सकने योग्य बने। उनमें प्रधानाचार्य रुचि लेते हैं तो ऐसे अध्यापक भी उनके सहयोगी हो सकते हैं।

निष्पक्ष और न्यायप्रिय भाव

अध्यापकों की योग्यता को परखने और उसको प्रोत्साहन देने के साथ प्रधानाचार्य को निष्पक्ष होना चाहिए। उसका किसी भी विशिष्ट अध्यापक से लगाव या दुराव नहीं हो। अध्यापकों और छात्रों को लगना चाहिए कि हमारे प्रधानाचार्य निष्पक्ष हैं और न्यायप्रिय हैं। विश्वकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर ने लिखा है कि बच्चों को भी अन्याय कष्ट सबसे अधिक कष्ट देता है। हमारी निष्पक्षता और न्यायप्रियता सभी के हृदय में हमारा स्थान बना लेती है।

सुव्यवस्था निर्माण करने कार्य

विद्यालय बहुत ही अच्छा व स्वच्छ तथा सुव्यवस्थित हो। कहा भी है स्वच्छता में ही ईश्वर का वास होता है। कोई गृहणी कितनी स्वच्छप्रिय है यह स्नानघर व शौचालय की स्वच्छता देखकर ही पता चल जाता है। सामान्यतः घरों में सुन्दर व स्वच्छ सोफासेट मिलेंगे, कमरा सज्जा हुआ होगा किन्तु स्नानघर या शौचालय में मकड़ी के जाले या गंदगी रहती तो स्वच्छ नहीं कहा जाएगा। उसी प्रकार विद्यालय में भी शौचालय आदि स्थान स्वच्छ होना चाहिए। प्रधानाचार्य को चाहिए कि वह सारे परिसर का चक्कर लगाए व स्वच्छता का पूर्ण निरीक्षण करे। स्वच्छता व व्यवस्थिता की छाप सभी के मन में अंकित करवाना प्रधानाचार्य का कार्य है। साथ ही स्वच्छता को आधार बनाकर विद्यार्थियों तथा सहयोगियों में श्रम की भावना का भी निर्माण करे। समय-समय पर इस प्रकार की स्वच्छता का अभियान भी लें।

आज के अशांत युग में महावीर वाणी की उपादेयता

आज सम्पूर्ण विश्व में मनुष्य शांति की खोज में विभिन्न उपक्रम कर रहा है परन्तु कहीं भी शांति नहीं दिख रही है। केवल सामान्य सा जीवन जीने के लिए भी मनुष्य अपार चिन्ताओं एवं निराशाओं से ग्रसित है। जीवन को शांति पूर्वक जीने व संतुष्ट रहने का मार्ग दिखा रहे हैं **मा० दुलीचंद जैन**।

आधुनिक युग में विज्ञान और तकनीकी ने आशातीत प्रगति की है। आज मनुष्य ने प्रकृति के साधनों पर विजय प्राप्त कर ली है। आवागमन ने साधनों के विकास ने राष्ट्रों के बीच की दूरियाँ को कम कर दिया है। लेकिन क्या हम कह सकते हैं कि आज का मानव प्राचीन युग की तुलना में अधिक सुखी, आनन्दित एवं प्रसन्न है? शायद नहीं इसका कारण यह है कि मनुष्य के मन और बुद्धि का विकास तो हुआ है पर उसके हृदय का विकास नहीं हो सका है। महाकवि रामधारी सिंह दिनकर के शब्दों में –

बुद्धि तृष्णा की दासी हुई,
मृत्यु का सेवक है विज्ञान।
चेता अब भी नहीं मनुष्य,
विश्व का क्या होगा भगवान्?

आज दुनिया के विकसित कहे जाने वाले राष्ट्र अनेक प्रकार के भीषण शक्तिशाली अस्त्र-शस्त्रों के उत्पादन में लगे हुए हैं। पिछले विश्वयुद्ध में जापान के हिराशिमा और नागासाकी में जो बम गिरे थे, उससे लाखों व्यक्ति हताहत हुए थे तथा वहाँ जल और वायु विषाक्त हो गई थी और अनेक बीमारियाँ फैल गई थीं। लेकिन आज उनसे बहुत अधिक शक्तिशाली अणु और परमाणु ही नहीं, इस प्रकार के रासायनिक बमों व आयुधों का निर्माण हो चुका है, जो कुछ ही समय में समस्त मानव जाति के विनाश का सामर्थ्य रखते हैं। आर्थिक प्रतियोगिता की अंधी दौड़ तथा अनियंत्रित स्वतंत्रता ने मनुष्य का जीवन अशांत बना दिया है। दैनिक 'इण्डियन एक्सप्रेस' (16.1.94) की रिपोर्ट में बताया गया था कि अमेरिका जैसे भौतिक दृष्टि से अति समृद्ध राष्ट्र के एक तिहाई व्यक्ति मानसिक बीमारियों से पीड़ित हैं।

इस प्रकार की भीषण परिस्थितियों में विश्व के चिंतक अब सोचने हेतु बाध्य हो रहे हैं कि इन कठिनाइयों से मानव के त्राण का, क्या उपाय हो सकता है?

जैन आगम ग्रंथों में इन समस्याओं के समाधान का विशद् विवेचन मिलता है। वहाँ पर हिंसा और अहिंसा की गंभीर व्याख्या उपलब्ध है। अहिंसा जैन धर्म का प्राण है। अहिंसा का अर्थ मात्र इतना ही नहीं है कि किसी प्राणी की हिंसा न की जाए, इसका विधेयात्मक अर्थ है, विश्व के समस्त प्राणियों के प्रति प्रेम, बंधुत्व एवं आत्मीयता की भावना का विकास किया जाए। यह भावना मात्र मनुष्य जाति के प्रति ही नहीं किन्तु समस्त प्राणी जगत् के प्रति व्याप्त हो। जैन धर्म की मान्यता है कि मनुष्य और प्रकृति में घनिष्ट सम्बंध है तथा दोनों एक दूसरे पर आश्रित हैं। सृष्टि के प्रत्येक जीव को जीने का अधिकार है-केवल मनुष्य मात्र को ही नहीं पशु-पक्षी, वनस्पति इत्यादि सभी को जीने का हक है। भगवान महावीर ने कहा-

सव्वे पाणा पियाउया,
सुहसाया दुक्खपडिकूला।
अप्पियवहा पियजीविणो,
जीविउकामा सव्वेसिं जीवियं पियं॥

अर्थात् सभी प्राणियों को अपना जीवन प्रिय है, सुख अनुकूल है, दु:ख प्रतिकूल है। वध सबको अप्रिय है। सभी दीर्घ जीवन की कामना करते हैं।

यह समझकर किसी जीव को त्रास नहीं पहुँचाना चाहिए।

('न य वित्तासए परं)

किसी जीव के प्रति वैर विरोध भाव नहीं रखना चाहिए।

('ण विरुज्झेज्ज केणई)

सब जीवों के प्रति मैत्री भाव रखना चाहिए।

(मित्तिं भूएहिं कप्पए)

प्राणी मात्र के प्रति प्रेम व आत्मीयता की भावना की विस्तृत व्याख्या आचारांग सूत्र के निम्न पदों में मिलती है।

तुमंसि णाम सच्चेव (तं चेव)
जं हंतव्वं ति मण्णसि।
तुमंसि णाम सच्चेव
जं अज्जावेयव्वं ति मण्णसि।
तुमंसि णाम सच्चेव
जं परियावेयव्वं ति मण्णसि।
तुमंसि णाम सच्चेव
जं परिघतव्वं ति मण्णसि।
तुमंसि णाम सच्चेव

जं उद्दवेयव्वं ति मण्णसि।
अज्जू चेय पडिबुद्धजीवी।
तम्हा ण हंता ण वि घायए।
अणुसंवेयणमप्पाणेणं
जं हंतव्वं णाभिपत्थए।

अर्थात् हे पुरुष! जिसे तू मारने की इच्छा करता है, विचार कर वह तू ही है-तेरे जैसा ही सुखदुःख का अनुभव करने वाला प्राणी है, जिस पर तू हुकूमत करने की इच्छा करता है, विचार कर, वह तेरे जैसा ही प्राणी है, जिसे परिताप-दुःख देने योग्य समझता है, चिन्तन कर वह तेरे जैसा ही प्राणी है, जिसे तू वश में करने की इच्छा करता है। जरा सोच वह तेरे जैसा ही प्राणी है, जिसके तू प्राण लेने की इच्छा करता है, विचार कर वह तेरे जैसा ही प्राणी है।

सत्पुरुष इसी तरह विवेक रखता हुआ जीवन बिताता है। वह न स्वयं किसी का हनन करता है और न औरों द्वारा किसी का हनन करवाता है। भगवान महावीर ने अहिंसा को धर्म के लक्षणों में सर्वप्रथम स्थान दिया। दशवैकालिक सूत्र में कहा गया है-धर्म उत्कृष्ट मंगल है। अहिंसा, संयम और तप उसके लक्षण हैं। जिसका मन सदा धर्म में रमता रहता है, उसे देवता भी नमस्कार करते हैं।

प्रत्येक जैन श्रमण को पाँच महाव्रतों-अहिंसा, सत्य, अस्तेय, बह्मचर्य एवं अपरिग्रह का आजीवन पूर्णतया पालन करना आवश्यक है। इस सब में अहिंसा का प्रथम स्थान है। सत्यादि दूसरे गुण अहिंसा के पोषक व रक्षक है।

विश्व में अशांति का पहला कारण हिंसा की भावना है, जिसके निराकरण के लिए अहिंसा की भावना को व्यवहार में लाना अतिआवश्यक है। विश्व में अशांति का दूसरा बड़ा कारण है-मनुष्य का अपने आत्म तत्व का विस्मरण। संसार में जितने भी तत्व हैं, उन्हें तीन भागों में विभक्त किया गया है- हेय, ज्ञेय और उपादेय। तत्त्व कुल नौ हैं। इनमें जीव (आत्म-तत्त्व)मुख्य है। जीव, अजीव व पुण्य को ज्ञेय, पाप, आश्रव व बंध को हेय तथा संवर, निर्जरा व बंध को उपादेय कहा है।

जीव आत्मा को कर्मों का कर्त्ता माना गया है। द्वादशांग अनुप्रेक्षा में कहा है कि आत्मा उत्तम गुणों का आश्रय है, समग्र द्रव्यों में उत्तम द्रव्य है और सब तत्त्वों में परम तत्त्व है आत्मा तीन प्रकार की है-बहिरात्मा, अंतरात्मा और परमात्मा। आत्मा और शरीर पृथक-पृथक हैं। आत्मा अविनाशी तत्त्व है। शरीर विनाशी-विनष्ट होने वाला तत्व है। इसीलिए इसे पुद्गुल कहा गया है। आत्मा को कैसे जाना जा सकता है? इसका उत्तर आचार्य कुंदकुंद ने 'समयसार' की गाथा 296 में दिया है। वहाँ पर कहा गया है कि आत्मा को आत्म प्रज्ञा अर्थात् भेदविज्ञान रूप बुद्धि द्वारा ही जाना जा सकता है।

आत्मा के बारे में भगवान् महावीर ने कहा-

अप्पा कत्ता विकत्ता य,
दुहाण य सुहाण य।
अप्पा मित्तममित्तं च,
दुप्पटिठ-सुपट्ठिओ।।

अर्थात् आत्मा ही सुख और दुःख को उत्पन्न करने वाली और न करने वाली है। आत्मा ही सदाचार से मित्र और दुराचार से शत्रु है। अपनी आत्मा को जीतना ही सबसे कठिन कार्य है-

जो सहस्सं सहस्साणं,
संगामे दुज्जए जिणे।
एगं जिणेज्ज अप्पाणं,
एस से परमो जओ।।

अर्थात् दुर्जय संग्राम में सहस्र सहस्र शत्रुओं को जीतने की अपेक्षा एक अपनी आत्मा को जीतना परम जय है-महान विजय है। जो अपनी आत्मा को जीत लेता है, वही सच्चा संग्राम विजेता है।

आत्मा पर विजय प्राप्त करने के लिए आवश्यक है कि चार कषायों पर विजय प्राप्त की जाए। आत्म-विजय का सुंदर विश्लेषण निम्न सूत्र में उपलब्ध है-

एगे जिए जिया पंच,
पंच जिए जिया दस।
दसहा उ जिणित्ताणं,
सव्वसत्तू जिणामहं।।

अर्थात् एक को जीत लेने पर मैंने पाँच को जीत लिया, पाँच को जीत लेने से मैंने दस को जीत लिया और दसों को जीत लेने पर मैंने सभी शत्रुओं को जीत लिया है। मनुष्य को चार कषायों पर कैसे विजय प्राप्त करनी चाहिए-

उवसमेण हणे कोहं,
माणं मद्दवया जिणे।
मायं अज्जुवभावेणं,
लोभं संतोषओ जिणे।।

अर्थात् क्रोध को उपशम-शांति से क्षमा से, मान को मार्दव-मृदुता से, माया को ॠजुभाव-सरलता से और लोभ को संतोष से जीतें।

इन कषायों के कारण सद्गुणों का विनाश होता है, यथा-

कोहो पीइं पणासेई,
माणो विणय नासणो।
माया मित्ताणि नासेई,
लोहो सव्व विणासणो।।

अर्थात् क्रोध प्रीति को नष्ट करता है, मान विनय को नष्ट करता है, माया धूर्तता (जालसाजी) मैत्री को नष्ट करती

है और लोभ सब कुछ नष्ट कर देता है।

भगवान महावीर ने कहा कि संसार के प्राणियों के लिए चार बातें बहुत दुर्लभ हैं–

चत्तारि परमंगाणि,
दुल्लहाणीह जंतुणो।
माणुसत्तं सुई सद्धा,
संजमम्मि य वीरियं॥

अर्थात् संसार के प्राणियों को चार परम अंग–उत्तम संयोग, अत्यंत दुर्लभ हैं–

मनुष्य, भव, धर्म–श्रुति (धर्म को सुनना), धर्म में श्रद्धा और संयम में वीर्य पराक्रम।

माणुसत्तं आयाओ,
जो धम्मं सोच्च सदृहे।
तवस्सी वीरियं लद्धुं,
संवुडे निद्धुणे रयं॥

अर्थात् मनुष्य जन्म पाकर जो धर्म को सुनता और उसमें श्रद्धा करता हुआ उसके अनुसार पुरुषार्थ–आचरण करता है, वह तपस्वी आगामी कर्मों को रोकता हुआ संचित कर्म रूपी रज को धुन डालता है।

मनुष्य जीवन के उत्थान का जो मार्ग है, उसे रत्न–त्रय (त्रि–रत्न) कहा गया है। तत्त्वार्थ सूत्र में कहा है–

'सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः।'

अर्थात् सम्यगदर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक् चारित्र–इन तीनों का समन्वित रूप (ये तीनों मिलकर) मोक्ष का साधन है।

पँचास्तिकाय सूत्र सं 160 में कहा गया है–धर्मास्तिकाय आदि (छह द्रव्य) तथा तत्वार्थ आदि में श्रद्धान करना सम्यग्दर्शन है। अंगों और पूर्वो का ज्ञान सम्यक् ज्ञान है। तप में प्रयत्नशीलता सम्यक् चारित्र है। यह व्यवहार–आचार मोक्ष मार्ग है।

सम्यग्दर्शन के बिना ज्ञान नहीं होता है। ज्ञान के बिना चरित्र नहीं सधता। जीवन के उत्थान के लिए ज्ञान और क्रिया का समन्वय होना जरूरी है। यह बात आचरांग निर्युक्ति में बड़े ही सुन्दर ढंग से स्पष्ट की गई है–

'हयं नाणं किया हीणं,
हया अण्णाणओ किया।
पासंतो पंगुलो दड्ढो,
धावमाणो य अंधओ॥'

अर्थात् क्रियाहीन का ज्ञान व्यर्थ है और अज्ञानी की क्रिया व्यर्थ है। जैसे एक पंगु वन में लगी हुई आग को देखते हुए भी भागने में असमर्थ होने से जल मरता है और अंधा व्यक्ति दौड़ते हुए भी देखने में असमर्थ होने से जल मरता है। भगवान महावीर की धर्म–क्रान्ति की मुख्य उपलब्धि–उन्होंने ईश्वर की जगह कर्म को प्रतिष्ठा दी। उन्होंने भक्ति के स्थान पर सत्कर्म व सदाचार का सूत्र दिया। उन्होंने कहा–

सुचिण्णा कम्मा
सुचिण्णाफला भवन्ति।
दुचिण्णा कम्मा
दुचिण्णाफला भवन्ति॥

अर्थात् अच्छे कर्म अच्छे फल देने वाले होते हैं और बुरे कर्म बुरे फल देने वाले होते हैं । मनुष्य अपने संचित कर्मों के अनुसार ही सुख–दुख प्राप्त करता है–

जमिणं जगई पुढ़ो जगा,
कम्मेहिं लुप्पंति पाणिणो।
सयमेव कडेहिं गाहती,
नो तस्स मुच्चेज्जऽपुट्ठयं॥

अर्थात् इस जगत् में जो प्राणी हैं, वे अपने–अपने संचित कर्मों से ही संसार भ्रमण करते हैं और किए हुए कर्मों के अनुसार ही भिन्न–भिन्न योनियों में जन्म लेते हैं। फल भोगे बिना उपार्जित कर्मों से प्राणी का छुटकारा नहीं होता।

कर्म बंध का मूल कारण राग–द्वेष की प्रवृत्ति है –

रागो य दोसो वि य कम्मबीयं,
कम्मं च मोहप्पभवं वयंति।
कम्मं च जाई-मरणस्य मूलं,
दुक्खं च जाई मरणं वयंति॥

अर्थात् राग और द्वेष कर्म के बीज (मूल कारण) हैं। कर्म मोह से उत्पन्न होता है। वह जन्म–मरण का मूल है। जन्म–मरण को दुःख का मूल कहा गया है।

साधक के लिए यह आवश्यक है कि वह अपने मन पर नियंत्रण करे। भगवान् ने कहा –

पहावंतं निगिण्हामि,
सुयरस्सी-समाहियं।
न मे गच्छइ उम्मग्गं,
मग्गं च पडिवज्जई॥

अर्थात् भागते हुए दुष्ट अश्व को मैं ज्ञान रूपी लगाम के द्वारा अच्छी तरह निगृहीत करता हूँ। इससे मेरा अश्व उन्मार्ग में–गलत रास्ते पर नहीं जाता। वह ठीक मार्ग को ग्रहण करता हुआ चलता है। मन के बारे में कहा गया है–

मणो साहस्सिओ भीमो,
दुट्ठसो परिधावई।
तं सम्मं तु निगिण्हामि,
धम्मसिक्खाई कन्थगं॥

अर्थात् मन ही वह साहसिक (दुःसाहसी), रौद्र (भयावह) और दुष्ट अश्व है, जो चारों ओर दौड़ता है। मैं उसे कन्थक–उच्च जाति–सम्पन्न, सुधरे हुए अश्व की भाँति धर्मशिक्षा द्वारा अच्छी तरह निगृहीत, नियंत्रित करता हूँ।

आज का मानव समझता है कि संसार के भौतिक साधनों द्वारा ही सुख मिल सकता है। अतः उनकी प्राप्ति व अभिवृद्धि में अपनी पूर्ण शक्ति लगा देता है। इच्छाओं को बढ़ाते जाना, उनकी पूर्ति के लिए उत्पादन के साधनों की वृद्धि करते जाना उनके द्वारा इच्छाओं को तृप्त करते जाना यही भोगवादी मनुष्य का जीवनक्रम है। भगवान् महावीर ने कहा कि सभी भौतिक साधन मनुष्य को सुख देने में असमर्थ हैं –

सव्वं जगं जइ तुहं,
सव्वं वा वि धणं भवे ।
सव्वं पि ते अपज्जत्तं,
नेव ताणाय तं तवे॥

अर्थात् यह सारा जगत् और यह सारा धन भी तुम्हारा हो जाए, तो भी सब अपर्याप्त ही होंगे और न ही ये सब तुम्हारा रक्षण करने में ही समर्थ होंगे।

लेकिन इस विवेचन का यह अर्थ नहीं लेना चाहिए कि जैन धर्म के सिद्धांत अव्यवहारिक तथा आधुनिक जीवन से मेल नहीं खाते। यह एक अत्यंत भ्रांत धारणा है जिसका निराकरण होना आवश्यक है।

भगवान महावीर ने धर्म प्रचारार्थ चतुर्विध संघ की स्थापना की। श्रमण-श्रमणी, श्रावक और श्राविका। उन्होंने श्रमण-श्रमणियों के लिए पंच महाव्रतों का पालन करना अनिवार्य बतलाया तथा काफी कठिन चर्या का निर्धारण किया। इसका कारण था-श्रमण-श्रमणियों का आत्म-साधना के कठिन मार्ग में जीवन व्यतीत करना था। वे किसी एक स्थान (चार्तुमास के काल के अतिरिक्त) नहीं रह सकते थे तथा पैदल विहार करते थे। अपने साथ में संयम साधना के लिए आवश्यक उपकरणों के अतिरिक्त कुछ नहीं रख सकते थे।

लेकिन गृहस्थों के लिए उनके नियम अपेक्षाकृत सरल थे। श्रावक से उनकी अपेक्षा थी कि वह पाँच अणुव्रतों का पालन करे। प्राणी वध (हिंसा), असत्य, चोरी, अब्रह्मचर्य व अपरिमित कामना (परिग्रह) इन पाँच पापों से सापवाद-अपने सामर्थ्य के अनुसार विरत होना अणुव्रत है। इसी प्रकार उससे तीन गुण-व्रतों एवं चार शिक्षा-व्रतों का पालन करने की अपेक्षा की जाती है। श्रावक का जीवन पूर्णतः सदाचार युक्त होना चाहिए। वह प्रामाणिकता-सच्चरित्रता से जीवन बिताए, यह अपेक्षित है। विशेषतः उसके लिए सात प्रकार के दुर्व्यसनों से विरत रहना आवश्यक है। ये व्यसन हैं :-

जूयं मज्जं मंसं वसा,
पारद्धि चोर परयारं।
दुग्गई-गमणस्सेदाणि,
हेड भूदाणि पावाणि॥

अर्थात् जुआ, माँस-भक्षण, वैश्यागमन, मद्यपान, शिकार, चोरी और परस्त्री सेवन ये सात व्यसन हैं। माँसाहार से दर्प-उन्माद बढ़ता है। दर्प से मनुष्य में मद्यपान की अभिलाषा जगती है और तब वह जुआ खेलता है। इस प्रकार एक माँसाहार से ही मनुष्य उपर्युक्त अनेक दोषों को प्राप्त हो जाता है।

आज भारत वर्ष में लगभग एक करोड़ व्यक्ति जैन धर्म का पालन करते हैं। यह विश्व का सबसे बड़ा शाकाहारी संगठन है। प्राचीनकाल में अनेक राजा, महाराजा एवं व्यवसायिओं ने इस धर्म का पालन किया तथा सफलतापूर्वक अपना जीवन बिताया था। और सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त की थी। मौर्यकाल, नंदवंश एवं गुजरात तथा कलिंग के अनेक शासक महावीर के अनुयायी थे एवं उन्होंने अनेक युद्धों में भाग लिया था महान् योद्धा चामुंडराय 17 युद्धों में लड़े थे तथा विजेता बने थे।

इस प्रकार जैन धर्म जीवन के कर्तव्य पालन से विमुख रहने की शिक्षा नहीं देता। जैन धर्म में कहा गया है कि अहिंसा शूरवीरों का धर्म है, कायरों का नहीं।

जैन धर्म पुरुषार्थवादी धर्म है। यह प्रत्येक क्षेत्र में विवेकपूर्वक कार्य करने का निर्देश देता है। जो विवेकपूर्वक कार्य करता है, वह कर्म-बंध नहीं करता। दशवैकालिक सूत्र में कहा है –

जयं चरे, जयं चिट्ठे,
जयमासे, जयं सए।
जयं भुजंतो भासंतो,
पावकमं न बंधई॥

अर्थात् साधक विवेकपूर्वक चले, विवेकपूर्वक खड़ा हो, विवेकपूर्वक बैठे और विवेकपूर्वक सोए। इस प्रकार विवेकपूर्वक सब क्रियाओं को करता हुआ, विवेकपूर्वक भोजन करता हुआ व संभाषण करता हुआ वह पाप कर्म नहीं करता।

भगवान् महावीर के उपदेश मानव को मैत्रीपूर्ण, नैतिक एवं प्रामाणिक जीवन जीने की प्रेरणा देते हैं। अहिंसा, समता, सरलता एवं अपरिग्रह के सिद्धांतों का पालन करने से व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय जीवन का शांतिपूर्ण ढंग से विकास हो सकता है तथा विश्व में शांति की स्थापना हो सकती है।

– **दुलीचंद जैन,**
अध्यक्ष करुणा अन्तर्राष्ट्रीय,
चेन्नई
मो०-94444047263

संदर्भ सूचि -

1. आचारांग सूत्र 1/2/3/63 सूक्ति त्रिवेणी, उपाध्याय अमरमुनि पृष्ठ संख्या-9, प्रकाशक सन्मति ज्ञानपीठ, लोहामंडी, आगरा 2016 संस्करण
2. उत्तराध्ययन सूत्र 2/20 साध्वी चंदना, प्रकाशक सन्मति ज्ञानपीठ, प्रथम संस्करण 1972 पृष्ठ 103
3. सूत्रकृतांग सूत्र 1/15/13 उपरोक्त सूक्ति त्रिवेणी पृष्ठ 47 उपाध्याय अमरमुनि
4. उत्तराध्ययन सूत्र 6/2 उपरोक्त साध्वी चंदना पृष्ठ 107
5. आचारांग सूत्र 1/5/5/170 उपरोक्त उपाध्याय अमरमुनि पृष्ठ 23
6. उत्तराध्ययन सूत्र 20/37 उपरोक्त साध्वी चंदना
7. उत्तराध्ययन सूत्र 9/34 उपरोक्त साध्वी चंदना
8. उत्तराध्ययन सूत्र 23/36 उपरोक्त साध्वी चंदना
9. दशवैकालिक सूत्र 8/39 उपरोक्त सूक्ति त्रिवेणी पृष्ठ 93, उपाध्याय अमरमुनि
10. दशवैकालिक सूत्र 8/38 उपरोक्त उद्धृत सूक्ति त्रिवेणी पृष्ठ 91
11. उत्तराध्ययन सूत्र 3/1 उपरोक्त संस्करण साध्वी चंदना
12. उत्तराध्ययन सूत्र 3/11 संस्करण साध्वी चंदना
13. तत्त्वार्थ सूत्र 1/1 डॉ०दुलीचंद्र जैन, प्रकाशक हिन्दी ग्रंथ कार्यालय, मुम्बई सन् 20112
14. आचारांग निर्युक्ति 101 सूक्ति त्रिवेणी उपरोक्त पृष्ठ 135 उपाध्याय अमरमुनि
15. औपपातिक सूत्र 71 सूक्ति त्रिवेणी उपरोक्त संस्करण
16. सूत्रकृतांग सूत्र 1, 2/1:4 सूक्ति त्रिवेणी उपरोक्त संस्करण
17. उत्तराध्ययन सूत्र 32:7 उपरोक्त संस्करण पृष्ठ 33 साध्वी चंदना
18. उत्तराध्ययन सूत्र 23/56 उपरोक्त संस्करण साध्वी चंदना
19. उत्तराध्ययन सूत्र 23/58 उपरोक्त संस्करण साध्वी चंदना
20. उत्तराध्ययन सूत्र 14/39 उपरोक्त संस्करण साध्वी चंदना
21. वसुनन्दि श्रावकाचार 59 उपरोक्त सूक्ति त्रिवेणी पृष्ठ 235 उपाध्याय अमरमुनि
22. दशवैकालिक सूत्र 4/8 सूक्ति त्रिवेणी उपरोक्त संस्करण पृष्ठ 85 अमरमुनि

श्री डी. रामकृष्ण राव
अध्यक्ष विद्या भारती

विद्या भारती आंध्र प्रदेश के गुड्डीलोवा नामक स्थान पर विज्ञान विहार आवासीय विद्यालय के प्रधानाचार्य के रूप में अनेक वर्षों तक कार्य करने के पश्चात् उसी विद्यालय के निदेशक का पदभार भी निभाया। प्रधानाचार्य रहते हुए आपने विद्यालय के आसपास के गाँवों का सर्वेक्षण कराकर कर उनमें पिछड़े हुए समाज के लोगों के लिए शिक्षा व सेवा का कार्य प्रारम्भ किया, परिणाम स्वरूप आसपास के गाँवों में उन्नति हुई।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रांत स्तर के कार्यकर्ता के नाते कार्य करते हुए आपने दक्षिण मध्य क्षेत्र के क्षेत्रकार्यवाह का दायित्व भी निर्वहन किया है। साथ ही विद्या भारती में आपने नौ वर्षो तक अखिल भारतीय उपाध्यक्ष के दायित्व को भी कुशलतापूर्वक सम्भाला है।

लेखन में आपकी रुचि होने के कारण प्रधानाचार्य पद का दायित्व सम्हालने से अभी तक विद्या भारती प्रदीपिका में आपके द्वारा भारतीय विचार धारा से ओतप्रोत विचार व आचार्यों, प्रधानाचार्यों के लिए शैक्षिक उन्नयन हेतु उपयोगी लेख निरन्तर प्रकाशित होते रहते हैं।

वर्तमान में आप दिनांक 17 मार्च 2019 को कुरुक्षेत्र में सम्पन्न विद्या भारती साधारण सभा बैठक में अध्यक्ष हेतु निर्वाचित हुए हैं।

स्वाभाविक विकास

किसी ने एक को सलाह दी कि गधे को पीटने से घोड़ा बन जाता है। गधे के मालिक ने उसे घोड़ा बनाने की इच्छा से इतना पीटा कि बेचारा गधा मर ही गया। तो इस प्रकार लड़कों को ठोक पीट कर शिक्षित बनाने की जो प्रणाली है, उसका अन्त कर देना चाहिए। माता-पिता के अनुचित दबाव के कारण हमारे बालकों को विकास का स्वतंत्र अवसर नहीं मिलता। हर एक में ऐसी प्रवृतियाँ रहती हैं जिनके विकास के लिए समुचित क्षेत्र की आवश्यकता होती है। सुधार के लिए बलात् उद्योग करने का परिणाम सर्दव उल्टा ही होता है। यदि तुम किसी को सिंह बनने न दोगे तो वह सियार ही बनेगा। - **विवेकानन्द**

मैंने कहा, प्रिय भैया-बहनों ने कहा और आदरणीय आचार्य गणों ने कहा

- पंकज सिन्हा, डीमापुर

गोरक्ष प्रांत में जिला केन्द्रित 10 विद्यालयों के प्रवास काल का आनंद चिरस्मरणीय रहेगा। इसका कारण था आनंदपूर्ण प्रेरक चर्चाओं से प्राप्त प्रेरक अनुभूतियाँ-चर्चा में सबकी सहभागिता विद्या भारती का कार्य प्रणाली का ही आदर्श विश्लेषण था-तो आइए किसने क्या कहा उसे लिपिबद्ध करते हैं :-

प्रश्नोत्तर प्रिय भैया बहनों (षष्ठम्, सप्तम् एवं अष्टम्) से

मैं- मेरे जैसे कार्यकर्ता आते हैं, आपके साथ बैठते हैं तो आपका मन क्या कहता है?

विद्यार्थी- आप अच्छी बात बताएँगे जिससे हमारा ज्ञान बढ़ेगा,

मैं- विद्यालय की व्यवस्था के विषय में बात करेंगे अपने अनुभवों को बताएँगे, पूर्वोत्तर के रीति-रिवाज की जानकारी देंगे। आप अपने मन को देखें और पहचाने फिर बताएँ आपका मन क्या कहता है।

विद्यार्थी- कुछ नया करने की चाह, समाज के लिए कुछ करने की भावना, कैरियर की इच्छा, जिम्मेदारियाँ ध्यान में आती हैं।

मैं- पढ़ना अथवा शिक्षा लेने से क्या फायदा, आपको शिक्षा से क्या मिलता है?

विद्यार्थी- जीवन व्यतीत करने का ढंग, माता-पिता के सपनों का साकार करना, नेतृत्व क्षमता का बोध समाज में सम्मान, सही गलत का ज्ञान, दायित्व का बोध, विवेक का समझ, प्रवृत्तियों का निर्माण, एक नया सोच एवं नई दिशा आगे बढ़ने की प्रेरणा।

मैं- जो अनपढ़ हैं, जिन्हें शिक्षा प्राप्त करने का अवसर नहीं मिलता क्या वे अच्छे नहीं अथवा पढ़ने वाले से अच्छे नहीं होते।

विद्यार्थी- अनपढ़ भी अपने माता-पिता तथा समाज से संस्कार प्राप्त करते हैं, दोनों में जो समय का सही उपयोग करे वही अच्छा दोनों ही अच्छे होते हैं।

मैं- यदि आप विद्यालय नहीं जा पाते तो अच्छी बातें कहाँ से सीख पाते?

विद्यार्थी- अपने माता-पिता से, अच्छे नागरिकों की संगति से।

मैं- शिक्षा से जो नई दिशा मिलती है, वह दिशा आपको कहाँ ले जाती है?

विद्यार्थी- अच्छे मार्ग की ओर, समाज के लिए जीना जिम्मेदारी का निर्वाह, देश के प्रति प्रेम, ईमानदारी, समाज और देश के लिए कुछ कर देने की चाह, कुछ ऐसा कर देना जो यादगार बन जाए, लक्ष्य को कैसे प्राप्त करें।

मैं- क्या अच्छी पढ़ाई से मात्र ज्ञान प्राप्त करना और मेधावी बनना ही लक्ष्य है।

विद्यार्थी- नहीं-नहीं देश सेवा के लिए हम पढ़ते हैं, अनुशासन में रहते हैं और सामाजिक ज्ञान प्राप्त करते हैं। आचार्य जी द्वारा सुनाई कथा जीवन को संस्कारित करती है, परीक्षा समाप्ति के बाद गुरु जी ने सबको एक-एक आम दिया और कहा कि घर जा कर खाना पर खाते समय कोई देखे नहीं। सभी ने आम लुका-लुका कर खाया किन्तु एक बालक ऐसा था जो नहीं खा पाया, क्योंकि जैसे ही वह लुका कर खाने लगता है वैसे ही उसे लगता है कोई देख रहा है, गुरु जी ने उसी विद्यार्थी को सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थी की उपाधि दी। हमारे पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम जी ने अवकाश ग्रहण के बाद राष्ट्रपति भवन से विदाई ली तो उनके पास वही सामग्री थी जो वे लेकर राष्ट्रपति भवन आये थे, उन्होंने कहा ये सामग्री मेरी नहीं देश की है। उन्होंने कहा मेरा छोटा सा घर है।

मुझे बंगला नहीं चाहिए, मेरा जीवन चलता रहे उसके लिए मेरे पास परिश्रम का धन है, इसलिए मुझे पेंशन नहीं लेनी है, पढ़ाई से हमें त्याग-समर्पण की शक्ति मिलती है।

मैं- परीक्षा में शत-प्रतिशत अंक प्राप्त करना ही लक्ष्य हो गया है, क्या यही बड़ा बनने का मार्ग है?

विद्यार्थी- बड़े केवल अच्छे अंक ही लाने से नहीं बनते, अपितु चलते फिरते, बोलते-हँसते जीवन शैली के समान उच्च शिक्षा ही नहीं । शिक्षा तो जीवन की अच्छाई के लिए होती है।

मैं- स्वयं का निर्माण करने से देश और समाज को क्या लाभ मिलेगा?

विद्यार्थी- स्वयं के निर्माण से दृष्टि का विकास होता है, दृष्टि हमारे गुणों का विकास करती है, इससे समाज और देश को ही लाभ मिलता है।

नवम्, दशम्, एकादश, एवं द्वादश के भैया बहन के साथ प्रश्नोत्तर

मैं- एक कार्यक्रम में मिठाइयाँ बाँटी जा रही थीं विद्यार्थीगण मिठाइयाँ

ले कर खुश थे। पर एक बालक खुश नहीं था, उसने मिठाई को फेकते हुए कहा इससे गुलामी की दुर्गंध आती है वह बालक कौन था?

विद्यार्थी (एक स्वर में)- बालक केशव

मैं- एक 9 वर्ष का बालक विद्यालय से घर नहीं पहुँचा, एक दिन गया, दो दिन गया, पूरा आठ दिन चला गया। सभी उस बालक के तलाश में जुटे थे, बालक की माँ दरवाजे पर टकटकी लगाए अपने पुत्र की प्रतीक्षा कर रही थी, 8वें दिन वह बालक अपने घर पहुँचा, दरवाजे पर खड़ी अपनी माता से लिपटकर मैले कुचैले बालक ने कहा -'माँ विद्यालय में गुरुजी ने बताया जाजपुर गाँव में हैजा फैला है, लोग मर रहे हैं, उन्हें सेवा-चिकित्सा जरूरी है, उस दर्द को सुनकर माँ मैं विद्यालय से सीधा जाजपुर चला गया, उनकी सेवा की। तुम्हारी याद आई, तो मैं आ गया माँ। वह बालक बड़ा होकर देश की सेवा में किस नाम से प्रसिद्ध हुआ ?

विद्यार्थी- (कुछ देर बाद)-नेताजी, नेता जी सुभाष चन्द्र बोस(अकस्मात् एक बालक खड़ा होकर धीरे से बोला।)

मैं- एक पढ़ा लिखा स्नातक (ग्रेजुएट) युवक परेशान था, उसे कुछ भी अच्छा नहीं लगता था। वह ईश्वर को भी नहीं मानने लगा था, उसके मित्र उसके दर्द भरी परेशानी से चिंतित रहते थे। एक मित्र ने उस युवक को एक सन्यासी से मिलने की प्रेरणा दी। वह युवक संन्यासी के पास गया और बोला आपने भगवान को देखा है, संन्यासी बोला -जैसे मैं तुमको देख रहा हूँ वैसे ही हमेशा भगवान को देखता हूँ। उस युवक का जीवन बदल गया। एक दिन उसने शिकागो में भारत और हिन्दू धर्म की व्याख्या कर सम्पूर्ण विश्व को चकित कर डाला, वह युवक कौन था?

विद्यार्थी- (एक स्वर में)-नरेन्द्र।

मैं-इन प्रसंगों से आप सबों को क्या मिलता है, यह तो शिक्षा में पढ़ाई नहीं जाती हैं?

विद्यार्थी- हमें प्रेरणा मिलती है, ऐसे प्रसंग हमारे आचार्य बताते हैं। पुस्तकालय में हम पुस्तकों से पढ़ते हैं।

मैं- विद्यालय में पढ़ाई से आपको क्या मिलता है ?

विद्यार्थी- विद्या, ज्ञान, अनुशासन, विनम्रता, सहजता।

मैं- ऐसी शिक्षा से क्या लाभ जिससे यही सब कुछ मिलता है।

विद्यार्थी- इससे जीवकोपार्जन में सहायता भी मिलती है, धन मिलता है, सम्मान मिलता है, पहचान मिलती है, व्यक्तित्व का निर्माण होता है, व्यक्ति का विकास होता है, दूसरे के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए, यह स्वभाव बनता है।

मैं- क्या देश भक्ति की भावना का विकास होता है?

विद्यार्थी- हाँ।

मैं- कैसे, कोई उदाहरण?

विद्यार्थी- उत्तर देने असमर्थ दिखाई देने पर?

मैं- हमारे प्रधानमंत्री नरेन्द्रमोदी ने देश के विद्यार्थियों को वार्ता के लिए दिल्ली में बुलाया, हजार से ऊपर की संख्या थी। इसमें छठी से बारहवीं तक के विद्यार्थियों को बुलाया। कॉन्फ्रेस के माध्यम से पूरे देश के लाखों विद्यार्थी भी उस कार्यक्रम में जुड़ गए थे। उस कार्यक्रम में एक बालिका ने प्रधानमंत्री से प्रश्न किया-मैं देशभक्त कैसे बनूँ। प्रधानमंत्री अवाक् थे, प्रश्न सुनकर। फिर उन्होंने विद्यार्थियों से पूछा आपके घर में बिजली का बिल प्रति महीने में कितने का आता है। एक ने उत्तर दिया 328 रु का।

प्रधानमंत्री ने कहा क्या इसे 228 रु. किया जा सकता है। सभी अवाक् थे। तब उन्होंने कहा आप अपने घर में माता-पिता के साथ बैठ कर विचार करे, कैसे बिजली बिल की राशि कम हो सकती है? फिर विद्यार्थियों से प्रश्न किया? क्या आप अपने कमरे से बाहर निकलते ही बिजली का बटन बंद करते हैं। पंखे बंद करते हैं। विद्यार्थियों का उत्तर नहीं के समान था। प्रधान मंत्री ने कहा आप ऐसा करते हैं तो आपके घर का बिजली बिल महीने में 100 रुपया हो सकता है। इससे उर्जा बचेगी। यह उर्जा ग्रामों में किसान को मिलेगा और हमारी कृषि मजबूत होगी। यही देशभक्त बनने का मार्ग है। ऐसा देशभक्त आप बनेंगे। विद्यार्थियों का उत्तर हाँ था।

मैं- शिक्षा से और क्या-क्या दिशा मिलती है?

विद्यार्थी- ईमानदारी, सेवा और समर्पण।

मैं- परीक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त करना ही शिक्षा का लक्ष्य है क्या?

विद्यार्थी- नहीं।

मैं- फिर और क्या है?

विद्यार्थी- सर्वाधिक अंक प्राप्त करना जरूरी है। किन्तु क्या अपने जीवन के महत्त्व को शैक्षिक आधार पर विकसित करना ज़रूरी नहीं है।

मैं- मुझे समझ में नहीं आ रहा है, स्पष्ट बोलो।

विद्यार्थी- हमारी सोच सकारात्मक होनी चाहिए, हमारी दृष्टि सही हो इससे हमारी सोच और जीवन का महत्त्व

बढ़ता है, नीयत साफ रहती है।

मैं- भैया सही कहा आपने, शिक्षा में जीवन मूल्यों का बहुत बड़ा महत्त्व है। आप 12वीं के बाद युवा पायदान पर कदम रखने वाले हैं, आगे की शिक्षा के लिए आप उस स्थान पर जाएँगे जहाँ विद्या मंदिर की शिक्षा के जीवन मूल्यों को शायद आप न खोज पाएँ फिर आप क्या करेंगे?

विद्यार्थी- कोई भी जबाब नहीं आ रहा था।

मैं- सोचो, सोचना ही होगा। क्योंकि विद्या भारती जीवन मूल्यों की शिक्षा के वैचारिक युद्ध की परीक्षा में भी आपको सर्वोच्च अंकों से सफल होना है। जहाँ आप उच्च शिक्षा लेने के लिए जाएँगे, वहाँ आपको वैचारिक संघर्ष का सामना करना होगा। आप इस संघर्ष में सफल हों और भारत माता की जय का शंखनाद करें। अंत में आपको यही कहना चाहूँगा-हमारी राष्ट्रीय शिक्षा, उससे प्राप्त जीवन मूल्यों की दिशा और विकसित दृष्टि से प्राप्त संस्कार द्वारा निर्मित स्वभाव के क्रियान्वयन व व्यवहार से ही समाज और देश में भारत माता की जय का शंखनाद होगा। यही आज के युवाओं से अपेक्षा है। युवाओं के लिए सन्देश है।

आदरणीय आचार्यगण के साथ वार्तालाप के अंश

मैं- आपका मन कभी विद्या मंदिर को छोड़कर चले जाने को करता है क्या?

आचार्य- नहीं, बिल्कुल नहीं करता है।

मैं- क्यों? फिर कौन सा ऐसा तत्त्व है जो आप आचार्यो को विद्या मंदिर से जोड़ कर रखता है।

आचार्य- निष्ठा, प्रेम-व्यवहार, राष्ट्रप्रेम, एवं संस्कार की प्रक्रिया हमें विद्या मंदिर से बाँध कर रखती है।

मैं- आप शिक्षा एवं शिक्षण के कार्य से जुड़े हैं, आप सबकी शैक्षिक योग्यता उच्च है। शैक्षिक शिक्षण में निपुण भी हैं, भावनात्मक शिक्षण से भी आप जुड़े होंगे, ऐसा कोई उदाहरण रखें जिससे हम सभी को प्रेरणा मिले।

आचार्य- विद्या भारती की शिक्षा ही भावनात्मक शिक्षा है। इससे हमारी राष्ट्रीय शक्ति को बल मिलता है और मैकाले द्वारा थोपी गई शिक्षा-शिक्षण का विकल्प स्थापित कर पाते हैं।

मैं- क्या सचमुच ऐसा हम कर पा रहे हैं, मैकाले क्या हमारे शिक्षण को आज प्रभावित करता नहीं जा रहा है। हम सभी शिक्षा स्नातक हैं, हमारी यह शिक्षा मैकाले की शिक्षा-शिक्षण से जुड़ी है। फिर क्या हम विद्या भारती की शिक्षा-शिक्षण का क्रियान्वयन कक्षा-कक्ष में सरलता से कर पा रहे हैं।

आचार्य- पठन-पाठन में विद्या भारती शिक्षण का अलग स्वरूप यह ठीक है क्या?

मैं- यह अलग स्वरूप बिलकुल नहीं है, यह तो शिक्षा-शिक्षण के क्षेत्र में हमारी राष्ट्रीय शिक्षा के प्रति स्वाभिमान का परिचय प्रकट करता है। विद्या भारती राष्ट्रीय शिक्षा के क्षेत्र में एक राष्ट्रीय शैक्षिक आन्दोलन है। हमारी राष्ट्रीय शिक्षा को पुनर्स्थापित करने का संकल्प है। हमारा एक-एक विद्यालय विद्या भारती राष्ट्रीय शिक्षा की प्रयोगशाला है। क्या आप बता सकते हैं कि विद्या भारती संगठन की स्थापना की पृष्ठभूमि क्या रही होगी।

आचार्य- हमारी भारतीय हिन्दू संस्कृति के अनुकूल शिक्षा।

मैं- बिलकुल उचित कहा आपने, पर यह पूर्ण सत्य नहीं है। इस दृष्टि से विद्या भारती को हम कितना जानते हैं, पहचानते हैं, विद्या भारती के पहले संगठन मंत्री कौन थे, किस स्थिति में और किस कठिन परिस्थिति को पार करने के बाद विद्या भारती की स्थापना हुई।

आचार्य- उत्तर ऐसा था जिसे लिपि बद्ध नहीं कर रहा हूँ।

यह कहना गलत नहीं होगा कि आचार्यगण विद्या भारती शब्द से परिचित तो हैं पर विद्या भारती राष्ट्रीय शिक्षा-शिक्षण की शैली से बिलकुल अनभिज्ञ दिखे।

मैं- देश स्वतंत्र हुआ 1947 में, स्वतंत्रता से पूर्व 1946 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वितीय सरसंघचालक श्रीगुरुजी (माधव राव सदाशिव राव गोलवलकर) जी ने गीता विद्यालय कुरुक्षेत्र का उद्घाटन किया। 1952 के गोरक्ष प्रांत के गोरखपुर नगर में सरस्वती शिशु मंदिर की स्थापना हुई। योजना से शिशु मंदिर सम्पूर्ण देश के स्वयंसेवकों ने चलाना शुरू किया। सम्पूर्ण देश में शिशु मंदिर प्रणाली की शिक्षा ने समाज को आकर्षित किया। एक राष्ट्रीय शक्ति शिशु मंदिरों में खड़ी होने लगी।

श्रीमती इन्दिरा गाँधी ने सन् 1975 में देश में आपात्काल लगा दिया। शिशु मंदिरों पर भी कहर आया। देश की सभी प्रमुख हस्तियों के साथ देशभर के शिशु मंदिरों के प्रभावी संरक्षकों, प्रध ानाचार्यो को जेल में बंद कर दिया गया। आचार्यो को शिशु मंदिर से निकाल बाहर कर दिया गया। शिशु मंदिरों में सरकारी नियुक्तियाँ कर दीं। बिगड़ते शिशु मंदिर के वातावरण ने अभिभावकों

और समाज को चकित कर डाला। प्रचंड विरोध के बाद श्रीमती इंदिरा गाँधी को आपात्काल हटाना पड़ा। देश में चुनाव आया। इंदिरा गाँधी की तानाशाही से देश मुक्त हुआ। शिशु मंदिरों को पुनः सँवारा गया। निष्कासित आचार्यों की बहाली हुई। नई दिल्ली में शिशु मंदिरों के 16500 शिशुओं का शिशु संगम किया गया।

उस समय के राष्ट्रपति नीलम संजीव रेड्डी ने शिशु संगम का उद्घाटन किया। एक पुनः नया शंखनाद हुआ। शिशु संगम की समाप्ति पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के तत्कालीन सह कार्यवाह श्री भाऊरावदेवरस की उपस्थिति में अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान के संगठन मंत्री का दायित्व आगरा के सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कॉलेज के यशस्वी प्राचार्य श्री लज्जाराम तोमर पहले अखिल भारतीय संगठन मंत्री बनाए गए। श्री भाऊराव देवरस के संरक्षण में एक अखिल भारतीय संगठन की स्थापना 1977 में हुई। कालान्तर में अखिल भारतीय स्वरूप विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान हुआ।

आचार्य– यह इतिहास हमें प्रेरणा दे रहा है, इससे हम अनभिज्ञ थे।

मैं– विद्या मंदिरों के पुस्तकालयों का अवलोकन करते समय मैंने विद्या भारती राष्ट्रीय शिक्षा को प्रतिपादित करने वाली पुस्तकों को नहीं देखा। कहीं कोई दिख भी रहा था तो अलमीरा में यूँ ही रखा है, जैसा उसका मूल्य ही नहीं।

आचार्य– विद्या भारती ने राष्ट्रीय शिक्षा-शिक्षण पद्धति को प्रतिपादित करने वाली पुस्तकों की रचना की है क्या ?

मैं सुनकर आश्चर्य चकित था। पूछा– स्व०लज्जाराम तोमर, श्री दीनानाथ बत्रा, स्व०श्री मोहन लाल जी जैसे कई वरिष्ठ कार्यकताओं ने विद्या भारती राष्ट्रीय शिक्षा-शिक्षण को प्रभावित करने के लिए कई पुस्तकों की रचना की है। जैसे-राष्ट्रीय शिक्षा के मूल तत्त्व, भारतीय शिक्षा मनोविज्ञान, शिक्षा में भारतीयता, विद्या भारती अभिनव पंचपदी शिक्षण पद्धति आदि कई ग्रंथ हैं। आचार्य परिवार के लिए ये ग्रंथ पठनीय ही नहीं अपितु शिक्षा-शिक्षण में क्रियान्वयन करने हेतु महत्वपूर्ण है। तभी विद्या भारती राष्ट्रीय शिक्षा की पुर्नस्थापना के लिए अपना एक-एक विद्यालय राष्ट्रीय शिक्षा की एक-एक प्रयोगशाला है। आदर्श स्वरूप में ये विद्यालय विकसित हैं, हो रहे हैं और आगे भी होते रहेंगे। इसी से देश में एक राष्ट्रीय वैकल्पिक शिक्षा का विस्तार होगा।

आचार्य– ये पुस्तकें कहाँ मिलेगी?

मैं– विद्या भारती संस्कृति शिक्षा संस्थान कुरुक्षेत्र से सम्पर्क करें। इन सभी पुस्तकों का संग्रह विद्या भारती नाम की एक अलमारी में करें। कुछ पुस्तकें व्यक्तिगत भी रखें। इसका स्वाध्याय करें और शिक्षण में संग्रहीत विन्दुओं का प्रयोग शिक्षण में करें। एक आचार्य का व्यक्तिगत विकास राष्ट्रीय शिक्षा-शिक्षण के परिपेक्ष्य में एक शिक्षाविद् स्वरूप स्तम्भित होना अनिवार्य है। आज पूरे देश में मोंटेसरी, नर्सरी, किंडरगार्डन आदि सर्वसाधारण भारतीय समाज में प्रचलित हैं, परन्तु शिशु मंदिर शिक्षा-शिक्षण प्रणाली, शिशु वाटिका-शिशु शिक्षण प्रणाली, भारतीय पंचपदी शिक्षण पद्धति आदि से हम भी अनभिज्ञ हैं। विद्या भारती विद्यालयों में ये समस्त प्रणालियाँ किसी न किसी प्रकार क्रियान्वित हैं, ये प्रणालियाँ हमारे विद्यालयों के परिसर से बाहर निकलकर समाज में व्याप्त विभिन्न विद्यालयों में स्वीकार जब तक नहीं होंगी, हमारी राष्ट्रीय शिक्षा की पुर्नस्थापना का शैक्षिक आन्दोलन सफलता से दूर खड़ा दिखाई देगा। इसके लिए एक-एक आचार्य की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। हमें विद्या भारती राष्ट्रीय शिक्षा-शिक्षण को समाज और देशव्यापी बनाने के लिए अपने आप को विद्या भारती शिक्षा शिक्षण का एक कुशल शिक्षाविद् बनना होगा।

विद्या भारती प्रदीपिका विज्ञापन दर

विज्ञापन पृष्ठ	विद्याभारती संस्थाएँ	अन्य
आवरण पृष्ठ :		
पृष्ठ 4	15000 रुपए	25000 रुपए
पृष्ठ 2, 3	15000 रुपए	22500 रुपए
पृष्ठ 2, 3 आधा :	8000 रुपए	
मध्य में रंगीन :	12000 रुपए	20000 रुपए
मध्य रंगीन (आधा) :	6000 रुपए	
साधारण पृष्ठ (श्याम-श्वेत) :	10000 रुपए	15000 रुपए
आधा पृष्ठ (श्याम-श्वेत) :	5000 रुपए	

सम्पर्क सूत्र : 011-29840126

वैश्विक उन्नति का आधार भारतीय संस्कृति

संतनगर, नई दिल्ली के **श्री विनोद बंसल** ने बड़ी बारीकी से प्रस्तुत लेख में भारतीय संस्कृति के आधारभूत आदर्श बिन्दुओं पर प्रकाश डालते हुए वर्तमान में पैदा हुई सघन समस्याओं से उबरने का मार्गदर्शन किया है, अतः यह लेख केवल पढ़ने ही नहीं अपितु इस मार्ग पर चलने की दृष्टि से अधिक महत्त्वपूर्ण है।

दुनिया में भौतिक उन्नति के नित नए कीर्तिमान स्थापित हो रहे हैं। व्यक्ति जहाँ चन्द्रमा से बहुत ऊपर तक पहुँच गया है वहीं समुद्र तल की गहराइयों की सीमाओं को भी लाँघ चुका है, तकनीक के माध्यम से घर बैठे सफलतापूर्वक ड्रोन हमले संभव हुए हैं वहीं व्यक्ति विकास के नित नए साधनों का आविष्कार किया जा रहा है। किन्तु देखने में आ रहा है कि दुनिया भर में स्वार्थ सिद्धि और भौतिक उन्नति करते-करते व्यक्ति अपने प्राकृतिक सामाजिक, सांस्कृतिक व नैतिक उत्तरादायित्व को भूलता जा रहा है। वह यह भी भूल जाता है कि भगवान द्वारा निर्मित इस प्रकृति के संसाधनों पर सृष्टि के अन्य प्राणियों का भी उतना ही अधिकार है जितना तुम्हारा। एक सुसंस्कृत समाज में रहने वाले संस्कार युक्त व्यक्ति के प्रत्येक क्रिया-कलाप में विश्व कल्याण की भावना सन्निहित रहती है।

संस्कृति किसी भी समाज या राष्ट्र का आइना होता है। हालांकि संस्कृति की अवधारणा इतनी विस्तृत है कि उसे एक वाक्य में परिभाषित करना सम्भव नहीं है। तथापि यह कहा जा सकता है कि मानव जीवन के दिन-प्रतिदिन के आचार-विचार, जीवन शैली, कार्य-व्यवहार, धार्मिक, दार्शनिक, कलात्मक, नीतिगत कार्य-कलापों, परम्परागत प्रथाओं, खान-पान, संस्कार इत्यादि के समन्वय को संस्कृति कहा जाता है। अनेक विद्वानों ने संस्कार के परिवर्तित रूप को ही संस्कृति के रूप में स्वीकार किया है।

भारतीय संस्कृति के प्रेरणादाई बिन्दुओं पर विचार करें तो पाएँगे कि यह उदार, गुणग्राही व समन्वयशील रही है। संवेदना, कल्पना, आचरण, भाव, संयम, नैतिकता, उदारता व आत्मीयता के तत्त्व अविच्छिन्न रूप से जुड़े हैं। नीति और सदाचार द्वारा कर्मफल का सिद्धांत व पुनर्जन्म के प्रति आस्था एक ऐसी उत्तम दार्शनिक ढाल है जो व्यक्ति को अनैतिकता की ओर जाने ही नहीं देती। ईमानदारी, अतिथि सत्कार, दाम्पत्य मर्यादाओं की कठोरता, पुण्य, परोपकार, पाप के प्रति घृणा, जीव दया जैसे तत्व घोर दरिद्रता और सामाजिक अव्यवस्था के रहते हुए चिरस्थायी रहते हैं।

वास्तव में संस्कृति ऐसी आदर्शशृंखला है जिसे कोई झुठला नहीं सकता यहाँ तक कि व्यवहार में उन सिद्धांतों के प्रतिकूल चलने वाला भी खुले रूप में उसका विरोध नहीं कर सकता। गंभीरता से विचार करें तो हम पाएँगे कि चोर अपने यहाँ दूसरे चोर को नौकर नहीं रखना चाहता। व्यभिचारी अपनी कन्या का विवाह व्यभिचारी के साथ नहीं करता और न अपनी पत्नि को किसी ऐसे व्यक्ति से घनिष्ठता बढ़ाने देता है। ग्राहकों के साथ धोखेबाजी करने वाला दुकानदार भी वहाँ से माल नहीं खरीदता है जहाँ धोखेबाजी की आशंका रहती है। झूठ बोलने का अभ्यासी भी सम्बंधित लोगों से यही अपेक्षा करता है कि वे उसे सच बात बताया करें। अनैतिक आचरण करने वालों से पूछा जाए कि आप न्याय अन्याय में से, उचित अनुचित में से, सदाचार दुराचार में से किसे पसंद करते हैं तो वह नीति पक्ष का ही समर्थन करेंगे। अपने सम्बंध में परिचय देते समय हर व्यक्ति अपने को नीतिवान के रूप में ही प्रकट करता है। इन तथ्यों पर विचार करने से प्रकट होता है कि भारतीय संस्कृति की अन्तरात्मा एक ऐसी दिव्य परम्परा के साथ गुँथी हुई है जिसे झुठलाना किसी के लिए भी नहीं, यहाँ तक कि पूर्ण कुसंस्कारी के लिए भी सम्भव नहीं हो सकता है। वह अपने दुराचार के बारे में अनेक विवशताएँ बताकर अपने को निर्दोष सिद्ध करने का प्रयत्न करे तो कर सकता है पर अनीति को नीति कहने का साहस नहीं कर सकता। यही कारण है जिसके आधार पर भारतीय संस्कृति को विश्व की कालजयी संस्कृति कहा गया है।

कोई अन्य हमारा भाग्य विधाता नहीं बल्कि व्यक्ति अपना विकास अपने परिश्रम से स्वयं ही कर सकता है। वह अपने सुख-दुख दोनों का कर्ता स्वयं ही तो है। यम, नियम, योग, ध्यान, प्राणायाम, आसन इत्यादि से जहाँ व्यक्ति स्वयं को मजबूत करता है वहीं 'सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामया' या इदम् राष्ट्राय, इदम् न मम। परमवैभवनेतुमेतत् स्वराष्ट्रं, की प्रार्थना के द्वारा सृष्टि के सभी प्राणियों के कल्याण की कामना करता है।

मातृवत परदारेषु पर द्रव्येषु लोष्टवत् यानि मातृ शक्ति को देवी रूप में मानना तथा दूसरे के धन को मिट्टी के समान मानना हमारी संस्कृति की विशेषताएँ हैं। वर्ण व्यवस्था, जन्म-जाति के साथ जुड़कर भले ही आज विकृत होकर बदनाम हो, पर उसके पीछे अपने व्यवसाय तथा अन्य विशेषताओं को परम्परागत रूप से बनाए व बचाए रखने की सुविधा है। आज छोटे-छोटे कामों के लिए नये सिरे

से ट्रेनिंग देनी पड़ती है जबकि प्राचीन काल में वह प्रशिक्षण वंश परम्परा के आधार पर बचपन में आरम्भ हो जाता था और अपने विषय की प्रवीणता सिद्ध करता था। आश्रम व्यवस्थान्तर्गत ब्रह्मचर्य और गृहस्थ में बीतने वाली व्यक्ति की आधी आयु भौतिक प्रगति के लिए और आधी आयु आत्मिक ज्ञान के संवर्धन के लिए है। वानप्रस्थ और संन्यास आश्रम आत्मिक श्रेष्ठता के संवर्धन तथा लोक मंगलकारी कार्यों में योगदान देने के लिए निश्चित है। इससे व्यक्ति और समाज दोनों की श्रेष्ठता समुन्नत रहती है।

प्राचीन काल से ही हमारे यहाँ तीर्थाटन द्वारा स्वास्थ्य संवर्धन, अनुभव वृद्धि, स्वस्थ मनोरंजन, व्यवसाय वृद्धि, अर्थ वितरण जैसे अनेक लाभ बताए हैं, देवदर्शन के बहाने तीर्थयात्री गाँव-गाँव, गली मुहल्लों में जाकर जहाँ धार्मिक जीवन की प्रेरणा देते हैं, वहीं साधु-संतों, ब्राह्मणों इत्यादि के आतिथ्य सत्कार एवं दान दक्षिणा के पीछे भी यही भावना रही हुई है कि लोक सेवा के लिए स्वयं समर्पित कार्यकर्ताओं को किसी प्रकार की आर्थिक तंगी का सामना न करना पड़े।

पर्वों, त्योहारों और जयन्तियों की अधिकता भारतीय संस्कृति की ऐसी विशेषता है जिसके सहारे सत्य परम्पराओं को अपनाए रहने और प्रेरणाओं को हृदयंगम किए रहने के लिए पूरे समाज को निरंतर प्रकाश मिलता है। व्रत-उपवासों से जहाँ उदर रोगों की कारगर चिकित्सा की पृष्ठभूमि बनती है वही मन शुद्धि का भाव भी जुड़ा है। प्रत्येक शुभ कर्म के साथ अग्निहोत्र (हवन) जुड़ा रहने के पीछे भी लोगों को यज्ञीय जीवन जीने की प्रेरणा सन्निहित है।

आज के भौतिक चिन्तन ने ब्रह्मांड की परिकल्पना एक विराट मशीन के रूप में की है। विकास के नाम पर 24 घंटे बिजली और चमचमाती सड़कों के जाल बिछाने के अलावा विश्व के अधिकांश देश मशीनों के द्वारा अधिकाधिक उत्पादन और उत्पादित सामान की खपत के लिए मंडियों की तलाश के साथ अधिकाधिक पूँजी जुटाने की दौड़ में लगे हैं। इसके लिए प्रकृति का निर्मम दोहन किया जा रहा है। कारखानों का जहरीला धुँआ हवा को तथा केमिकल रूपी ज़हर नदियों के पानी को जहरीला बना रहा है। परिणामतः व्यक्ति को न तो श्वसन हेतु साफ हवा, न पीने को साफ पानी और न ही पेट भरने को पौष्टिक रोटी व सब्जी ही उपलब्ध है। बाज़ारवाद और तथाकथित विकास ने हाथ मिलाकर हवा, पानी, जमीन को ज़हरीला बना दिया है।

इस सबके उलट भारतीय सांस्कृतिक दर्शन सदैव प्रकृति का पुजारी रहा है। इसमें कहा गया है कि प्राकृतिक संसाधनों का उचित उपयोग तो करें किन्तु उसके दोहन की स्पष्ट मनाही है। शायद इसी कारण हमारे यहाँ पेड़-पौधों, नदियों-तालाबों, खेत-खलिहानों, पशु-पक्षियों, कूप बावड़ियों इत्यादि को समय-समय पर पूजे जाने का विधान है, जिससे उनमें हमारी आस्था गहरी बनी रहे और उनके अनावश्यक दोहन से बचें।

मध्य प्रदेश के भीमबेटका में पाये गए शैल चित्र, नर्मदा घाटी में की गई खुदाई तथा सिंधु घाटी की सभ्यता के विवरणों से भी प्रमाणित होता है कि हजारों वर्ष पहले उत्तरी भारत के बहुत बड़े भाग में उच्च कोटि की संस्कृति का विकास हो चुका था। भारतीय संस्कृति की सहिष्णुता एवं उदारता के कारण ही बाहर से आने वाले शक, हूण, यूनानी एवं कुषाण जैसी प्रजातियों के लोग भी घुल मिल कर अपनी पहचान खो बैठे। अन्य देशों की संस्कृतियाँ तो समय की धारा के साथ साथ-साथ नष्ट होती रही हैं, किन्तु भारत की संस्कृति आदि काल से ही अपने परम्परागत अस्तित्व के साथ अजर-अमर बनी हुई है। भारतीय संस्कृति के इस लचीले स्वरूप में जब भी जड़ता की स्थिति निर्मित होती हुई नजर आई, तब किसी न किसी महापुरुष ने इसे गतिशीलता प्रदान की। प्राचीन काल में भगवान बुद्ध और भगवान महावीर, मध्यकाल में जगद्‌गुरु शंकराचार्य, कबीर, गुरु नानक और चैतन्य महाप्रभु तथा आधुनिक काल में स्वामी दयानंद, स्वामी विवेकानंद एवं महात्मा ज्योतिबा फूले इत्यादि द्वारा किये गए प्रयास इस संस्कृति की महत्त्वपूर्ण धरोहर बन गए।

सम्पूर्ण भारत में जन्म, विवाह और मृत्यु के संस्कार, रीति-रिवाज, आचार-व्यवहार और तीज-त्यौहारों में भी समानता है। 1400 बोलियों तथा औपचारिक रूप से मान्यता प्राप्त 18 भाषाओं की विविधता के बावजूद संगीत, कला साहित्य नृत्य और नाट्य के मौलिक स्वरूपों में आश्चर्य जनक समानता है। संगीत के सात स्वर और नृत्य के त्रिताल सम्पूर्ण भारत में समान रूप से प्रचलित हैं। भारत अनेक धर्मों, सम्प्रदायों, मतों और पृथक् आस्थाओं एवं विश्वासों का महादेश है। तथापि इसका सांस्कृतिक समुच्चय और अनेकता में एकता का स्वरूप संसार के अनेक देशों के लिए न सिर्फ विस्मयकारी बल्कि अनुपालन के योग्य बन गया है। आज दुनिया के अनेक देशों ने भले ही अपनी सुख सम्पदा और तरक्की के असीमित साधन जुटा लिए हों किन्तु सच्चा सुख, शान्ति, मानवता, आध्यात्मिकता और प्रकृति प्रेम जो भारत में दिखाई देता है वह अन्यत्र कहीं नहीं, क्योंकि भारतीय संस्कृति जिन मूल गुणों व मूल्यों से भरी हुई है वही इसे महान बनाते हैं। आज जहाँ विश्व की हर बड़ी से बड़ी समस्या का समाधान हमारे सांस्कृतिक मूल्यों में निहित है वही वैश्विक उन्नति का आधार भी भारतीय संस्कृति से प्रेरित है।

हम और पर्यावरण

वर्तमान में ज्वलंत समस्या विश्व भर में चिंता का विषय है, मानव और पर्यावरण के पारस्परिक सम्बंध पर विश्लेषण प्रस्तुत कर प्राचार्य **देवेश कुमार सोनी** हमें पर्यावरण के प्रति जागरूक होने का संदेश दे रहे हैं।

पर्यावरण-वैज्ञानिकों का कहना है कि पर्यावरण संरक्षण सभी प्राणियों के हितार्थ अति आवश्यक है। इसके अन्तर्गत प्राकृतिक सम्पदा एक विशाल ताना बाना है जिसके किसी छोटे से अंश को हानि पहुँचाने से पूरे तंत्र पर प्रभाव पड़ता है। प्रकृति का हर हिस्सा चाहे निर्जीव, जल, वायु, चट्टान या मिट्टी हो या सजीव कीट पतंग, मानव या फसल हों सभी एक दूसरे से जुड़े हैं और एक पर रही क्रिया से सभी देर सबेर प्रभावित होंगे। अगर हम कीड़ों को मारने के लिए रासायनिक कीटनाशकों का प्रयोग करते हैं तो वह न केवल कीड़ों को मारते हैं बल्कि अनाज के माध्यम से हमारे शरीर में भी प्रवेश कर जाते हैं और उन फसलों के भूसे खाने वाले जानवरों के शरीर में प्रवेश कर जाते हैं। वे हमारे शरीर में धीरे-धीरे संचालित होकर कैंसर रोग उत्पन्न कर देते हैं।

अनेक वर्षो से वैज्ञानिक इस प्रश्न पर विचार कर रहें कि 1950 के दशक में पक्षियों की चहचहाहट नहीं सुनने को आ रही है, कीट-पतंगों व भँवरों, मधुमक्खियों की भुनभुनाहट नहीं सुन पा रहे हैं। पता चला कि वे लगातार रासायनिक दवाओं के छिड़कन के कारण खत्म हो रहे हैं। इनकी चुप्पी के पीछे कीटनाशकों का भयावह प्रभाव है जो मनुष्यों पर पड़ रहा है। मच्छरों के नियंत्रण के लिए उपयोग किए जाने वाले डी.डी.टी. का जहर झीलों में रहने वाली मछलियों के शरीर में पहुँच जाती है कुछ मछलियाँ मर जाती हैं कुछ जिंदा रहती हैं जिन्हें मनुष्य खाकर बीमार हो जाता है।

पर्यावरण एवं संसाधनों के गलत उपयोग से प्रकृति विकृत होने लगती है। इनके नव किरण पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। उदाहरण के लिए जल पृथ्वी पर सतत् विद्यमान है। सागरों से जल वाष्पित होकर जलवाष्प बनता है जो संघनित होकर वर्षा के रूप में महाद्वीपों को प्राप्त होता है। वर्षा जल का कुछ भाग भूमि में रिसकर भूजल बनता है और शेष भाग नदियों से बहकर पुनः सागर में चला जाता है। यह प्रक्रिया निरंतर चलती रहती है और जल नवीकृत होता रहता है। हम इन प्राकृतिक प्रक्रियाओं में कई अवरोध पैदा कर देते हैं या गलत उपयोग करके उन्हें प्रभावित करते हैं। इससे नवीकरणीय प्रक्रियाएँ प्रभावित होती हैं। उदाहरण के लिए पृथ्वी पर यदि वन कम हो जाएँ पेड़-पौधों का अभाव हो तो वर्षा के जल को भूमि में रिसने का मौका नहीं मिलेगा। भूजल का स्तर प्रभावित होता है। धीरे-धीरे कुएँ एवं नलकूप सूखने लगेंगे। नदियों में गंदा पानी बहाया जाता है। यदि यह कम मात्रा में हो तो बहता हुआ जल और उसमें मौजूद जीव इसे साफ करने की क्षमता रखते हैं परन्तु आज अत्यधिक मात्रा में कचरा डाला जाता है। बाँध व सिचाई के कारण नदियों में पानी का बहाव भी कम होता जा रहा है। इस कारण नदियाँ अपने आप को साफ नहीं कर पा रही हैं। देखते देखते नदियाँ गंदे नालों में बदल जाती हैं यदि हमें इस प्रदूषण को रोकना है तो हमें कचरे का उपयोग करना होगा जैसे खाद बनाने वाला कोई काम, बगीचे हेतु उपयोगी खाद बनाने हेतु आदि। इसके साथ-साथ उद्योगों द्वारा निकाले जाने वाले कचरे को पुनः उपयोग करना होगा। नदी में पानी की मात्रा बढ़ायी जाए ताकि वे जीवित रह पाएँ और उनकी प्राकृतिक नवीकरण की प्रक्रिया चलती रहे। अतः यह आवश्यक है कि इन संसाधनों का प्रयोग उसके नवीकरण को ध्यान में रखकर करें तो बेहतर होगा। हमें यह भी ध्यान देना होगा कि हम जितने संसाधन का उपयोग कर रहे हैं वे उतने नवीकृत हो पाएँ।

विकास और प्राकृतिक पर्यावरण के बीच विरोधाभास हो यह जरूरी नहीं। न ही विकास के कारण पर्यावरण और संसाधन हमेशा के लिए नष्ट किएँ जाएँ। अगर हम अपने पर्यावरण को बेहतर समझें तो हम विकास के लिए टिकाऊ प्रबंधन भी कर सकते हैं। पर्यावरण-वैज्ञानिकों ने इसके लिए पर्यावरण की शुद्धिकरण क्षमता या सिंक कैपेसिटी की अवधारणा विकसित की है इससे उसमें इतनी क्षमता होती है कि एक सीमा तक पर्यावरण में प्रदूषण किया जाए तो वह उसे समाहित करके हानि रहित कर सकती है। उदारहरण के लिए अगर हम बहती नदियों में घरेलु कचरा बहाते हैं तो नदी के जीवजंतु उन्हें अपना भोजन बनाकर पचा लेते हैं। फिर से पानी उपयोग करने लायक हो जाता है। अगर हम अत्याधिक मात्रा में

नदी की क्षमता से अधिक गंदगी प्रभाहित करें तो साफ पानी वाली नदी गंदा नाला बन जाएगी। आज हमारे प्रमुख शहरों के पास बहने वाली नदियों का यही हाल हो रहा है। यहीं नहीं आज हम नदियों में कई ऐसे तत्व डालते हैं जिन्हें पचाने की क्षमता नदी में नहीं रहती है।

भारतीय भूजल सर्वेक्षण के अनुसार पिछले 20-25 वर्षो में जलस्तर में 4-5 मीटर तक कमी आई है। पर्यावरण के इस दोहन के संदर्भ में हम ही मुख्य भूमिका में नजर आ रहे हैं। भूजल के उपयोग की अधिकता तीव्रगति से है। इसके लिए हमें पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग को नियोजित कर इसका प्रबंधन करना होगा, जिससे वर्तमान की आवश्यकताओं की पूर्ति भी हो सके और भविष्य के लिए प्राकृतिक सम्पदा को संरक्षित भी किया जा सके ताकि संतुलन बना रहे। आज जिस प्रकार भौतिक सुख सुविधाओं को प्राप्त करने के लिए होड़ मची हुई है इससे पर्यावरण व संसाधनों का बहुत दुरुपयोग हो रहा है। जिस प्रकार कुछ लोग जरूरत से ज्यादा पर्यावरण की उपयोगी वस्तुओं का उपयोग अपने जीवन यापन के लिए करते हैं उसी प्रकार सभी मनुष्य करने लगें तो पृथ्वी की इस जनसंख्या की आवश्यकता की पूर्ति के लिए चार पाँच पृथ्वी की जरूरत पड़ेगी। इस विषय पर गाँधी जी ने कहा था कि 'हमारे पास हर व्यक्ति की आवश्यकता की पूर्ति के लिए बहुत कुछ है, लेकिन किसी एक के लालच की पूर्ति के लिए अपर्याप्त है।'

संयुक्त राष्ट्र संघ ने इस साल विश्व पर्यावरण दिवस के आयोजन की मेज़बानी भारत को सौंपी है पर्यावरण संरक्षण की दिशा में भारत और संयुक्त राष्ट्र द्वारा किए जा रहे प्रयासों को दर्शाने के लिए राजपथ पर आयोजित प्रदर्शनी भी संरक्षित है। वानस्पतिक जंतु व विभिन्न जंतुजगत द्वारा पर्यावरण, सामाजिक समूह एवं संगठन की रचना करने के कारण सामाजिक पर्यावरण का निर्माण होता है, जिसके अन्तर्गत प्रत्येक जीवधारी को जीवन निर्वाह अस्तित्व एवं संवर्धन के लिए भौतिक पर्यावरण से पदार्थो को प्राप्त करना पड़ता है, फलस्वरूप आर्थिक पर्यावरण का निर्माण होता है। संक्षेप में पर्यावरण अर्थात् वनस्पतियों, प्राणियों और मानव जाति सहित सभी सजीवों और उनके साथ सम्बंधित भौतिक परिसर को पर्यावरण कहते हैं। अर्थात् वायु, जल, भूमि, पेड़-पौधे, जीव-जंतु, मानव और उसकी विविध गतिविधियों के परिणाम आदि सभी का समावेश। हमारे और पर्यावरण का सम्बंध एक सरल सिद्धांत पर आधारित है कि हमारे अस्तित्व के बने रहने के लिए और मानव कल्याण के लिए जो भी जरूरत की चीज़ें पर्यावरण में हैं वे किसी न किसी रूप में हमें प्राप्त होती हैं। मनुष्य सदैव ही पर्यावरण के आँचल में रहा है। उसके स्नेह और संवर्धन में विकसित होता रहा है। पर्यावरण के सूक्ष्म जगत को प्रकृति कहते हैं। मनुष्य अर्थात् हम सब इसके ऋणी हैं इसके रस-पान से हम सजीव की श्रेणी में आते हैं। हम सदैव विभिन्न प्रकार से इस प्रकृति का स्वलाभ हेतु उपयोग करते रहे हैं। यह सारा संसार ही पर्यावरण का एक नन्हा शिशु है। यह अतिशयोक्ति नहीं है कि हमारा यह जीवन रस, हाड़-माँस, पंच तत्त्व रूपी यह काया बस पर्यावरण के वरदान से ही सुखमय रहता है।

प्रकृति पर्यावरण का संरक्षण, संवर्धन भी हमें ठीक उसी तरह से करना चाहिए जैसा कि यह हम सबका संरक्षण और संवर्धन करती रहती है। पर्यावरण के संतुलन के प्रति हमें भी जागरूक होना चाहिए। उसके लिए यथोचित कदम भी उठाने चाहिए। किसी ने ठीक कहा है कि 'दूध सब पीना चाहते हैं, गाय पालना कोई नहीं चाहता'। 'अच्छी बहू पाना सब चाहते हैं परन्तु बेटी बचाना कोई नहीं चाहता'। इसलिए हम पर्यावरण मित्र बनें। दूसरों को पर्यावरण के संरक्षण, संवर्धन हेतु दिशा निर्देशन दें। स्वयं जल, जमीन, जंगल, वायु, पर्वत भूमि आदि सहित जीव-जन्तु, कीट पंतगा आदि से प्रेम करें। हम और अधिक स्वच्छ पर्यावरण में जीएँ और पर्यावरण को स्वच्छ बनाएँ। अर्थात् जीओ और जीने दो के अंश से उत्प्रेरित हो।

श्रद्धाञ्जलि
श्री मनोहर पर्रिकर

(13 दिसम्बर, 1955 - 17 मार्च, 2019) भारत के एक राजनेता थे जो तीन बार गोवा के मुख्यमंत्री रहे। इसके अलावा वे भारत के रक्षा मन्त्री भी रहे। वे उत्तर प्रदेश से राज्य सभा सांसद भी रहे थे। उन्होंने सन 1978 में आई.आई.टी. मुम्बई से स्नातक की परीक्षा उत्तीर्ण की थी।

विजय के लिए संकल्प शक्ति का निर्माण

क्या कारण है शिक्षित-प्रशिक्षित होकर भी हमारे आचार्य छात्रों में उस शिक्षा का प्रेषण नहीं कर पाते जो इस राष्ट्र को इसकी अस्मिता, संस्कृति तथा छवि अक्षुण्ण रखने में सहायक हो सके। इसका कारण है हमारे शिक्षकों में संकल्प शक्ति का अभाव। एक बार उन्होंने संकल्प लिया तो हम सभी चुनौतियों, समस्याओं और लड़ाइयों को जीत पाएँगे विश्वास दिला रही हैं **श्रीमती किरणमाला नायक**

समस्या

राष्ट्रीय विकास सामाजिक परिवर्तन और सामाजिक नियंत्रण के लिए शिक्षा सर्वाधिक शक्तिशाली माध्यम है। शिक्षा में विद्यालय सर्वाधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि यह विद्यालय तंत्र ही है जहाँ प्रजातंत्र की भावी नागरिक नई पीढ़ी जन्म लेती है। मानव शिशु 10 महीने तक प्रकृति के संरक्षण में माँ के गर्भ में रहता है यह उसका पहला जन्म होता है जो प्राकृतिक जन्म कहलाता है।

10 वर्ष तक वह शिक्षकों की देखभाल के अंतर्गत विद्यालय तंत्र में रहता है और दूसरा जन्म प्राप्त करता है जो सामाजिक, सांस्कृतिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक और दिव्य होता है। प्रत्येक समाज में विद्यालय शिक्षा आवश्यक होती है क्योंकि इसके बिना मानव शिशु से नागरिक नहीं बन सकता। इसलिए विद्यालय तंत्र को किसी समाज का गर्भ कहा जाता है। कोठारी कमीशन (1964-66) ने ठीक ही कहा है ''भारत का भाग्य कक्षाकक्षों में निर्मित किया जा रहा है। यह केवल वाक्‌पटुता ही नहीं है, आज की विज्ञान और तकनीक पर आधारित दुनिया में शिक्षा ही है जो सम्पन्नता, कल्याण और जनता की सुरक्षा के स्तर को निर्धारित करती है।''

भारत विश्व का सबसे बड़ा प्रजातंत्र है और हमारे पास विद्यालय शिक्षा का सबसे व्यापक प्रजातांत्रिक तंत्र मौजूद है जो सर्वसमावेशी, दूरगामी तथा सबको समानता के अवसर प्रदान कर रहा है। हमने देखा है कि साधनहीन परिवारों के बच्चे हमारे इस तंत्र के द्वारा प्रधानमंत्री औश्र राष्ट्रपति बने हैं। ये हमारी बड़ी उपलब्धि है जिसका श्रेय हमारे विद्यालय तंत्र को जाता है।

अभी हमारे सामने बहुत सी गंभीर चुनौतियाँ हैं। संसार की आधी अनपढ़ जनसंख्या हमारे देश में है और इन अशिक्षित लोगों में से अधिकांश गरीबी रेखा से नीचे हैं। गरीबों और अनपढ़ों की बड़ी संख्या ने विकास की गति को विकलांग बना दिया है, विकास अंतिम निचले सिरे तक पहुँच गया है।

शिक्षा वही जो शिक्षक प्रदान करता है। इसलिए जिम्मेदारी सीधे शिक्षकों के ऊपर आती है। स्वतंत्रता के बाद विद्यालय शिक्षा का आधार तंत्र निर्माण हुआ है; लगभग प्रत्येक गाँव में प्राथमिक विद्यालय हैं। पंचायत मुख्यालय पर उच्च विद्यालय है। विद्यालय के अच्छे भवन हैं, आचार्यों को वेतन का प्रावधान है और मध्याह्न भोजन बच्चों को मिलता है। लगभग सभी शिक्षक शिक्षित-प्रशिक्षित हैं और उन्हें सर्वशिक्षा अभियान के अन्तर्गत निरन्तर सेवाकालीन शिक्षण भी प्राप्त होता है। वे जानते हैं कि क्या और कैसे पढ़ाना है। वे सारी विधियाँ और तकनीक भी जानते हैं; सभी साधन उनके हाथ में हैं। सभी विधियाँ उनको ज्ञात हैं फिर उनमें किस बात की कमी है?

कहावत है जहाँ चाह, वहाँ राह। आचार्यों में केवल संकल्प शक्ति की कमी है। ये संकल्प शक्ति विजय प्राप्त करने और संकटों को मात देने की है, समाज और छात्रों का निर्माण करने की है।

मनोविज्ञान की एक परिभाषा यह है कि यह ज्ञान, भावना और इच्छाशक्ति का विज्ञान है। तदनुसार, हमारे पास मानव व्यक्तित्व के तीन आयाम हैं: संज्ञानात्मक, भावनात्मक और क्रियात्मक/ मनश्चालक। क्रियात्मकता के दो पक्ष हैं, जिनका नाम है ध्यान(जो मन शब्द से संकेतित किया जाता है) और क्रिया(जो गतिकारक पद द्वारा वर्णित किया जाता है)।

कोठारी कमीशन(1964-66) ने अपनी प्रस्तावना में ठीक ही कहा है ''हम जानते हैं कि अधिकांश बातें जो हम यहाँ कह रहे हैं, पहले कही जा चुकीं हैं। फिर भी अभी तक कुछ महत्वपूर्ण घटित नहीं हुआ है। वास्तविक आवश्यकता क्रिया की है। परिस्थिति की कटुता और कठिन समय जिससे हम गुजर रहे हैं ।इस महत्त्वपूर्ण परन्तु सरल तथ्य को अधोरेखांकित कर रही हैं।''

समाधान

ज्ञान (संज्ञान), भावना (संवेदना) और इच्छाशक्ति (मनश्चालक) को क्रमानुसार मस्तिष्क, हृदय और हाथ तीन शब्दों द्वारा वर्णित किया जाता है। मस्तिष्क ज्ञान और प्रज्ञा का आधार है। हृदय भावना और भक्ति का आधार है तथा हाथ कर्म का साधन है। ज्ञान, भावना क्रिया ये तीन पक्ष परस्पर

सम्बंधित हैं। ज्ञान और भावना उसकी क्रिया द्वारा अभिव्यक्त किए जाते हैं। किसी व्यक्ति के कार्य की सफलता उसके ज्ञान और भक्ति पर निर्भर करती है। दूसरे शब्दों में, इच्छाशक्ति को ज्ञान और भाव द्वारा मागदर्शन मिलता है। प्रेरणा मस्तिष्क से और कार्य के लिए भक्ति हृदय से आती है।

आचार्यों में अपने कार्य या उद्देश्य के लिए गहन दृष्टि और उचित ज्ञान होना चाहिए। उनको राष्ट्रीय शिक्षा के उद्देश्यों और आदर्शों का ज्ञान होना चाहिए। शिक्षा की राष्ट्रीय नीति 1986 कहती है ''प्रत्येक देश अपनी विशिष्ट सामाजिक-सांस्कृतिक पहचान को अभिव्यक्त करने और उन्नत बनाने के लिए शिक्षा का तंत्र विकसित करता है जो समय की चुनौतियों का सामना भी करता है। हमारा अनोखापन क्या है? हमारी सामाजिक -सांस्कृतिक पहचान क्या है? इसकी व्याख्या करते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति-1986 आगे चलकर कहती है कि भारत ने हमेशा शांति के लिए और सारी दुनिया को एक परिवार मानते हुए राष्ट्रों के बीच एक-दूसरे को समझने का कार्य किया है। इस पुरातन परम्परा का पालन करते हुए, शिक्षा ने इसी विश्व दृष्टि को सशक्त बनाया है और युवापीढ़ी को अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग और शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व के लिए प्रेरित किया है। भारत की प्राचीन परम्परा और इसका वैश्विक दृष्टिकोण क्या है? यह वैदिक परम्परा और वेदान्तिक विश्व जो वसुधैव कुटुम्बकम् (सारा विश्व एक परिवार) की बात करती है। यह वही है जिसका उपदेश स्वामी विवेकानंद ने अमेरिका में दिया था; इसी को हम 'हिन्दुत्व' कहते हैं। इसकी जड़ें वेद और उपनिषद् में हैं। जिसको शंकर, रामानुज, दयानंद, विवेकानंद, श्री अरविन्द आदि द्वारा लोक में प्रचारित किया गया। यह कोई साम्प्रदायिक, पंथीय या संकुचित अवधारणा नहीं है। यह तो समेकित और साकल्यमूलक, सर्वसमावेशी, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय धारणा है जो माननीय सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय अनुसार भारत की जीवन शैली का दूसरा नाम है। परन्तु इसके होते हुए सैक्युलरवादी, जो एक बौद्धिक वंचना को धर्मनिरपेक्षता कहकर प्रचारित कर रहे हैं, हिन्दुत्व को 'साम्प्रदायिक' का ठप्पा लगाकर हमारी राष्ट्रीय पहचान और शिक्षा के राष्ट्रीय तंत्र को नष्ट करने के लिए ऐसा कर रहे हैं। रुड़की विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति ने कही है वह ध्यान देने योग्य है, 'शिक्षा तंत्र जो सैक्युलरवाद और धर्मनिरपेक्षता के बहाने से लागू किया जा रहा है वह हमारी संस्कृति और नीति शास्त्र के विरुद्ध है और इस बात में कोई नहीं है कि वह हमारे छात्रों को अन्ततोगत्वा अनुशासनहीनता और अनैतिकता पैदा कर देगा। विचार की इस सम्मूढ़ता के कारण हमारा शिक्षा तंत्र दिशाहीन है। आचार्यों को इससे मुक्त होना चाहिए और हमारे विश्व दृष्टिकोण और वैश्विक उद्देश्य के प्रति सदा जागरूक होना चाहिए।

एक बार यदि अपनी संस्कृति, परम्परा, जीवन उद्देश्य और उसकी अनन्यता के विषय में ठीक-ठाक ज्ञान हो जाता है तो फिर हमारे शिक्षक धीरे-धीरे हमारे समाज और मातृभूमि के प्रति भक्ति का भाव विकसित करेंगे। गाँधी, गोपबन्धु, विवेकानंद और भगिनी निवेदिता की भाँति वे पददलित और निर्धन लोगों के लिए चिन्ता करेंगे और शिक्षा को उनकी सेवा के माध्यम के रूप में प्रयोग करेंगे। जब उनमें अपनी संस्कृति और राष्ट्रीय उद्देश्य के प्रति एक स्पष्ट और विशाल दृष्टिकोण विकसित हो जाता है; और देश और उसकी संतानों के लिए संवेदना जाग्रत हो जाती है तो हमारा समाज जीवन की सभी लड़ाइयों में विजय प्राप्त करने और वर्तमान तथा भविष्य की सब चुनौतियों को पराजित करने की दुर्जेय संकल्प शक्ति विकसित कर लेगा। इसी के अनुसार स्कूल शिक्षा के हमारे राष्ट्रीय तंत्र और उच्च सिद्धांतों को निर्धारित किया जाएगा, शिक्षा के उद्देश्यों को परिभाषित किया जाएगा। पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों को पुन: तैयार किया जाएगा और प्रबंधन को दोबारा समायोजित किया जाएगा तो उसका परिणाम हमारे शिक्षा तंत्र में पूण रूप से रूपांतरित होगा। इस क्षेत्र में देश के अपने हजारों सरस्वती शिशु विद्या मंदिरों के साथ विद्या भारती अग्रगण्य है।

YOU CAN ORDER PRADEEPIKA ONLINE

1. For online order login to our website **www.vidyabharti.net** and click on publication Tab then click on place order and then fill form.
2. After submitting the form you have to deposit the amount on mentioned account number Bank name : **Central bank of india** Saving account number : **1130307980**

   IFSC code : **CBIN0283940**
3. After depositing the amount you have to acknowledge us on the link given below.

   www.vidyabharti.net/EN/Publications you have to press on acknowledge Tab

विद्यालय प्रबंध एवं परिवेश

सर्वहितकारी विद्या मंदिर तलवाड़ा के प्राचार्य व विद्या भारती उत्तरक्षेत्र के मंत्री **श्री देशराज शर्मा** ने कुशल प्रशासन करते हुए अपने अनुभवों को प्रस्तुत लेख में उद्धृत किया है। श्रीकृष्ण के वक्तृत्व व कृतृत्व तथा हनुमान के प्रबंधन से उसकी प्रामाणिकता सिद्ध की है। प्रस्तुत है आपके लिए

शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत सभी को यह सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी है कि सभी विद्यार्थियों को सीखने में पूरी तरह से भाग लेने के लिए समान अवसर और सहायता मिले। यह तभी सम्भव हो सकेगा यदि संसाधनों का प्रबंधन प्रभावी ढंग से तथा सीखने की प्रक्रिया को सुधारने का स्पष्ट प्रयोजन हो।

समाज में जो भी सामाजिक भाव हैं वही विद्यालय में देते हैं क्योंकि विद्यार्थी एवं अध्यापक उसी समाज से आते हैं। इसलिए विद्यालय को समाज का एक लघु स्वरूप एवं लघु राष्ट्र भी कहा जाता है। हम जैसा समाज व राष्ट्र देखना चाहते हैं वैसे भाव प्रत्येक विद्यालय में दिखाई देने चाहिए। भारत एक आध्यात्मिक एवं लोकतांत्रिक देश है इसलिए प्रजातांत्रिक प्रणाली को सफल बनाने हेतु विद्यालय परिवार के सभी घटकों को इसका प्रशिक्षण देना अनिवार्य है। यह प्रशिक्षण विद्यालय में अनेक कार्यों को करते समय स्वयं हो जाता है। यदि विद्यालय में प्रबंधन की प्रजातांत्रिक विधि को अपनाया जाए।

विद्यालय में स्वानुशासन, आत्मविश्वास एवं शिक्षा में गुणवत्ता उस विद्यालय के प्रबंधन एवं परिवेश पर निर्भर करता है। एक बार देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने ''मन की बात'' के अपने कार्यक्रम में गुणवत्ता के महत्व पर जोर देते हुए कहा था कि 'अब तक सरकार का ध्यान देश भर में शिक्षा के प्रसार पर था किन्तु अब वक्त आ गया है कि ध्यान शिक्षा की गुणवत्ता पर दिया जाए। अब सरकार को स्कूलिंग की बजाए ज्ञान पर अधिक ध्यान देना चाहिए।' मानव संसाधन विकास मंत्री श्री प्रकाश जावड़ेकर ने भी घोषणा की थी कि 'देश में शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार सर्वोच्च प्राथमिकता होगी।'

यह सुखद बात है कि कुछ वर्षों से विद्यालय में शिक्षा की गुणवत्ता के स्तर को सुधारने के लिए केन्द्र एवं राज्य दोनों सरकारें नवीन व्यापक दृष्टिकोणों एवं रणनीतियों को बना रही हैं। कुछ विशेष कार्यक्षेत्र की बात करें तो कक्षा कक्ष में अपनाई जाने वाली कार्यविधियों, अध्यापकों, छात्रों में ज्ञान के मूल्यांकन एवं निर्धारण, विद्यालयी अवसंरचना, विद्यालयी प्रभावशीलता एवं सामाजिक सहभागिता से सम्बंधित मुद्दों पर कार्य किया जा रहा है। राष्ट्रीय स्तर पर कार्य करने वाली विद्या भारती जैसी गैरसरकारी संस्थाएँ प्रारम्भ से ही समाज आधारित गुणवत्तापूर्वक शिक्षा प्रदान कर रही हैं। इन रणनीतियों की सफलता विद्यालय के प्रबंधन एवं परिवेश पर निर्भर करती हैं। विद्यालय का परिवेश पारिवारिक तथा लोकतांत्रिक होना चाहिए।

प्राचीन काल से ही लोग शिक्षा को जीवन के प्रकाश के स्रोत के रूप में मानते आए हैं। जो जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में सच्चे मार्ग का प्रदर्शन करता है। शिक्षा के माध्यम से ही विश्व ने सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक तथा वैज्ञानिक विकास किया है। भारत में अँगेंजों से पूर्व शिक्षा व्यवस्था मात्र शासन अधीन नहीं अपितु उसका पूरा प्रबंधन सामाज आधारित ही रहा है। आज की तथाकथित पश्चिमी अवधारणाओं जैसे दृष्टि, नेतृत्व क्षमता, प्रेरणा, लक्ष्य हासिल करना, कार्य को अर्थपूर्ण बनाना, योजनाएँ तैयार करना आदि का उल्लेख तो गीता में सदियों पहले किया जा चुका है।

महान चिंतक तथा एकात्ममानववाद के प्रस्तोता पं. दीनदयाल उपाध्याय जी ने उपलब्ध संसाधनों का सही चयन और कार्य के प्रति प्रतिबद्धता को श्रेष्ठ प्रबंधक की पहचान बताता है। हेनरी फेयोल के अनुसार ''पूर्वानुमान करना तथा योजना बनाना, संगठन बनाना, आदेश देना, समन्वय करना ही प्रबंधन है।'' क्रीटनर ने प्रबंधन को 'परिवर्तनशील पर्यावरण में सीमित संसाधनों का कुशलतापूर्वक उपयोग करते हुए संगठन के उद्देश्यों को प्रभावी ढंग से प्राप्त करने के लिए दूसरों से मिलकर एवं उनके माध्यम से कार्य करने की प्रक्रिया बताया है।'

'प्रबंधन यह जानने की कला है कि क्या करना है तथा उसे करने का सर्वोत्तम एवं सुलभा तरीका क्या है'

– एफ डब्ल्यू टेलर।

'You try to manage yourself.'

- Shri Bhagvad Geeta.

Management is a process in search of exellency to align people and get them committed to work for a common goal to the maximum social benefit.

विद्यालय प्रबंधन का उद्देश्य शैक्षिक, सांस्कृतिक, सामाजिक तथा सौन्दर्य जैसी

गतिविधियों को सम्पन्न करते हुए प्रबंध कौशल का विकास करना तथा विद्यार्थियों की अंतर्निहित शक्तियों, क्षमताओं तथा कुशलताओं के विकास के अवसर देना है। अध्यापकों तथा विद्यार्थियों में परस्पर सम्पर्क, स्नेह, संस्कार, कार्य नियोजन तथा आत्मीयतापूर्ण सम्बंधों का निर्माण करने के लिए विद्यालय में पारिवारिक परिवेश कुशल प्रबंधन से ही सम्भव है। विद्यालय प्रबंधन मं सभी उपलब्ध संसाधनों को सुनियोजित व्यवस्थित रखना, उद्देश्यानुसार, दक्षतापूर्वक तथा प्रभावपूर्ण तरीके से सदुपयोग करना है। दूसरे शब्दों में प्रबंधन का भाव लोगों के कार्यों में समन्वय करना है ताकि लक्ष्यों की प्राप्ति सुनिश्चित की जा सके।

प्रबंधन के अन्तर्गत आयोजन (Planning), संगठन-निर्माण (Organizing), स्टाफिंग (Staffing), नेतृत्व करना (leading or Directing), तथा संगठन अथवा पहल करना आदि आते हैं। मानवीय (Human), भौतिक (infrastructure), आर्थिक (Finance) विद्यालय में प्रबंधन के मुख्य तीन क्षेत्र हैं। कुछ विद्यवान विद्यालय प्रबंधन के क्षेत्रों को चार भागों शासन (Governance), प्रशासन (Administration), नेतृत्व (Leadership), अध्ययन-अध्यापन (Teaching & learning) में बाँटते हैं। शासन से अभिप्राय विद्यालय की प्रबन्धन समिति को नियमों के ढाँचे में स्कूल का संचालन करना, दृष्टि को परिभाषित करना, लक्ष्य का निर्धारण करना, लघु एवं दीर्घ योजनाओं का निर्माण करना तथा प्रबंधन एवं संचालन पर नजर रखना है।

विद्यालय प्रशासन मानक प्रक्रियाएँ स्थापित करके सुविधाओं एवं वित्तीय प्रबंधन सुनिश्चित करने की प्रक्रिया का दिशा दर्शन कराता है। परिसर प्रबंधन में स्वच्छता, उपकरण, रक्षा व सुरक्षा, रंग-रोगन, सज्जा आदि का कार्य सम्मलित है। बजट, बही-खाता रख-रखाव, नियमित ऑडिट, क्रय-विक्रय पद्धति, फीस, दान, छात्रवृत्ति आदि में पारदर्शिता का पालन आदि इसमें प्रमुख है।

नेतृत्व करते समय शिक्षकों की प्रतिभा एवं रुचि की पहचान करके उन्हें मागदर्शन करना, शिक्षा की गुणवत्ता, मानव संसाधनों का प्रबंधन स्थापना, हित-धारकों का सहयोग, स्कूल की विशिष्ट पहचान बनाते हुए शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए अध्यापकों, छात्रों, अभिभावकों एवं अन्य सम्बंधित सदस्यों को प्रेरित करना है।

अध्ययन-अध्यापन प्रक्रिया शिक्षा कौशल के उपयोग तथा प्रभावी कक्षा नेतृत्व की नीति को दर्शाता है। जिसका मुख्य उद्देश्य सभी छात्रों को सुखद अध्ययन अनुभव प्रदान करना एवं अपेक्षित उपलब्धि स्तरों को प्राप्त करना है। शिक्षक पाठ्यक्रम के उद्देश्य को प्राप्त करना, सुव्यवस्थित प्रशिक्षण गतिविधियों, अध्यापन सामग्री का उचित प्रयोग करना, शिक्षक एवं विद्यार्थी मूल्यांकन के प्रकार तय करना आदि। विषयों का प्रबंधन अध्ययन-अध्यापन प्रक्रिया का प्रमुख भाग है। यह कक्षा के वातावरण को आकर्षक, सहयोगपूर्ण सीखने में सरल और चरित्र निर्माण व्यक्तित्व विकास में सहयोग देता है।

विद्यालय में संस्कारक्षम परिवेश निर्माण के लिए प्रभावी प्रार्थना सभा, छात्रों के जन्मदिन मनाना, छात्रों के व्यक्तिगत जीवन में दिनचर्या बनवाना, मासिक गीत तय करना तथा मेरा विद्यालय मेरा देश प्रकल्प उत्तम माध्यम है। अभिभावक सम्पर्क एवं प्रबोधन, विद्यालय के माध्यम से सेवा कार्य, समाज के लिए विद्यालय भवन का उपयोग, समाज में सद्साहित्य पहुँचाना तथा राष्ट्रीय, सामाजिक, धार्मिक पर्वों का आयोजन करके विद्यालय को समाज से जोड़ने तथा छात्रों को व्यवहारिक शिक्षा का प्रबंधन भी योजना का महत्वपूर्ण भाग है।

विद्यालय प्रबंधन के लिए प्रधानाचार्य को कार्य का विकेन्द्रीकरण करना आवश्यक है। इसके अन्तर्गत आचार्य परिषदों, विषय परिषदें एवं क्लब, छात्र संसद, बाल भारती, शिशु भारती, कन्या भारती, मातृभारती, छात्र न्यायालय, बैंक प्रणाली, पुस्तक बैंक, अध्यापक-अभिभावक संघ, सलाहकार समिति आदि का निर्माण तथा अध्यापकों की रुचि व अभिरुचि अनुसार कार्य का विभाजन करना है। इन सारी व्यवस्थाओं को विद्यालय के विकास में सहयोग करने के लिए गठित किया जाना चाहिए। व्यवस्थाओं के संचालन में प्रत्येक विद्यार्थी को दायित्व देना तथा क्रियान्वयन करवाना प्रबंध कौशल का भाग है। विद्यालय का संचालन विद्यार्थियों का, विद्यार्थियों के लिए तथा विद्यार्थियों द्वारा किया जाना चाहिए। इसका उत्तम उदाहरण अरविन्द आश्रम द्वारा स्थापित 'मीराम्बिका' है जहाँ विद्यार्थी अपनी पाठ्यचर्या स्वयं बनाते हैं। समस्याओं के निदान के लिए विद्यालय में कार्यरत अध्यापकों को स्वतंत्र मत प्रकट करने का अवसर देना तथा उनके प्रति पारिवारिक भाव का निर्माण करना आवश्यक है। Principal should be first among equals. प्राचार्य व्यवहार में प्रजातांत्रिक, स्वशासित तथा विद्यालय के निर्णयों में आचार्य, विद्यार्थियों तथा कर्मचारियों को सहभागी बनाकर ही अच्छा प्रबंधक बन सकता है।

प्रबंध एक उद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया है क्योंकि किसी भी संगठन के कुछ मूलाधार उद्देश्य होते हैं जिनके कारण उसका अस्तित्व है। प्रबंध सर्वव्यापी है। भारत में प्रबंधकों का जो कार्य है वह

अमेरिका, रूस, इंग्लैंड, जर्मनी अथवा जापान में भी हो सकता है लेकिन वहाँ इसे करने के प्रकार का तरीका अलग होगा क्योंकि यह अलग प्रकार उनकी संस्कृति, प्रकृति, रीतिरिवाज एवं इतिहास की भिन्नता के कारण हो सकता है। प्रबंध एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि प्रबंध प्रक्रिया निरंतर एकजुट लेकिन पृथक-पृथक कार्यो (नियोजन, संगठन, निर्देशन, नियुक्तिकरण एवं नियंत्रण) की एक श्रृंखला है। प्रबंध एक गतिशील कार्य है एवं इसे बदलते पर्यावरण में अपने अनुरूप ढालना होता है। प्रबंध एक सामूहिक क्रिया है क्योंकि कोई अकेला व्यक्ति प्रबंध नहीं कर सकता है। इसके लिए एक टीम कार्य करना आवश्यक है। प्रबंध एक अमूर्त शक्ति है-जो दिखाई नहीं पड़ती लेकिन संगठन के कार्यो के रूप में जिसकी उपस्थिति को अनुभव किया जा सकता है।

एक अच्छे प्रबंधक को अपनी टीम से अधिक उत्पादकता प्राप्त करने के लिए प्रभावी वार्तालाप के साथ ही प्रेरित करने की कला में माहिर होना भी जरूरी है। पक्का लक्ष्य, सटीक रणनीति तथा लक्ष्य प्राप्त करने के लिए प्रबंधक को सटीक बनना और अमल में लाने का कौशल आना चाहिए।

विद्यालय परिवेश एवं प्रबंधन का सुन्दर विश्लेषण वेदों, धर्मशास्त्रों, पुराणों, उपनिषदों, महाकाव्यों तथा स्मृति ग्रंथों आदि में किया गया है, जिसका मुख्य उद्देश्य प्राणीहित की बात सोचना है। श्रीरामायण एवं श्रीमद् भगवदगीता को आज विश्व में प्रबंध गुरु की मान्यता प्राप्त है। आई.आई.एम बेंग्लोर में श्रीकृष्ण का प्रबंधन आधुनिक प्रबंधकों को भी आकर्षित कर रहा है। अमेरिका के न्यूज़र्सी विश्वविद्यालय में हरेक छात्र को गीता का अँग्रेजी अनुवाद पढ़ना अनिवार्य है।

ग्लोबल एकेदमी फॉर कॉरपोरेट ट्रेनिंग के संस्थापक विवेक बिन्द्रा का कहना है कि 'गीता में दर्शाए सिद्धांतों को जानकर कम्पनियों की उत्पादकता तथा कर्मचारियों की कार्यक्षमता व योजना निर्माण की कार्यक्षमता को बढ़ाने में मदद मिलती है।

श्री हनुमान जी की प्रबंध व्यवस्था को रामायण में विस्तार पूर्वक बताया गया है। निष्कर्ष रूप में हनुमान जी सही योजक, दूरदर्शी, नीति कुशल, सजग, नेतृत्वशील, अगाध श्रद्धा, सभी की सलाह सुनने वाले, लक्ष्य की दिशा, नैतिक साहस एवं हर हाल में मस्त रहने वाले तथा मूल्यपरक और प्रतिबद्ध व्यक्तित्व के मालिक हैं।

सामाजिक न्याय की स्थापना और असमानता को दूर करने वाले श्रीकृष्ण बाल जीवन से ही दानवों और राजसत्ता से लड़ते रहे हैं। वह बुद्धिमता, चतुराई, युद्धनीति, आकर्षण, प्रेमभाव, गुरुत्व, सुखदु:ख सभी जीवन कलाओं के तज्ञ थे। उनके जीवन से हम प्रबंधन के कई गुणों की सीख ले सकते हैं जैसे लगातार सफलता के कारण भी अपने जीवन में अहंकार न आने दें। उद्दण्ड, अक्षम को भी क्षमा कर देना चाहिए लेकिन बार-बार आगाह करते रहना चाहिए। सीमापार करने पर दण्ड देना चाहिए जो शेष के लिए भी उदाहरण बन सके। धैर्यवान व्यक्ति छोटी-छोटी बातों पर आपा नहीं खोता ऐसा विशाल हृदय चाहिए। आवश्यकता पड़ने पर अनुशासन बनाए रखने के लिए कोमलता भी नहीं दिखाना चाहिए। मन की शुद्धता के साथ तन का वैभव बना रहना चाहिए। श्रीकृष्ण का विराट रूप दर्शन भीतरी-बाहरी सौन्दर्य का बोध करवाता है। समय पहचानकर उस अनुसार ज्ञान हासिल करते हुए अपडेट रहना ही श्रीकृष्ण जी का श्रेष्ठ उदाहरण है। सर्वग्राही बनकर अपने क्षेत्र के अतिरिक्त विभिन्न क्षेत्रों के विषय में भी जानकारी रखना कुशल प्रबंधन के लिए आवश्यक है। सभी को साथ लेकर चलना तथा प्रत्येक की प्रतिष्ठा बनी रहे और समस्या का समाधान भी हो जाए ऐसी कला श्रीकृष्ण जी के स्वभाव में प्रकट होती है।

लोकतांत्रिक प्रबंधन से जहाँ सफल प्रबंध होता है वही प्रबंध करने वाले के चिन्तन का स्तर भी उत्तरोतर बढ़ता जाता है, जिस कारण उन्हें विद्यालय से अपनत्व हो जाता है इससे उन्हें कोई भी योजना थोपी हुई नहीं लगती अपितु यह योजना मेरी है ऐसा भाव विकसित होता है। इसी भावना से पारिवारिक भाव का निर्माण भी हो जाता है।

शिक्षा के इस पावन उद्देश्य को पूरा करने के लिए विद्यालय परिवार की एक व्यापक अवधारणा है जिसमें बालक, प्राचार्य, आचार्य, अभिभावक, पूर्वछात्र, प्रबंध समिति, प्रशासन, विद्यालय के हित चिंतक इस परिवार के अंग हैं। विद्यालय प्रबंधन एवं परिवेश को संस्कारक्षम व उद्देश्य अनुकूल बनाने के लिए सामूहिक चिन्तन, सामूहिक निर्णय तथा सामूहिक क्रियान्वयन करने की प्रक्रिया की सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है। सभी छात्रों को आदर्श नागरिक बनाने तथा उन्हें जीवन में उत्तम आचरण करने की बात पर बल देकर भावी भारत का निर्माण किया जा सकता है। इसके लिए समाज के अंतिम व्यक्ति को भी प्रगति पथ पर लाना होगा। यह तभी संभव है यदि राष्ट्र का लघु रूप विद्यालय अपने प्रबंधन एवं परिवेश के लिए विद्यालय परिवार की भागीदारी प्रत्येक निर्णय में सुनिश्चित करे।

प्रधानाचार्य का दायित्व एवं प्रबंध कुशलता

अनेक वर्षों तक हलवासिया विद्या विहार भिवानी में प्रधानाचार्य का दायित्व सफलता पूर्वक निभाते हुए विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान के महामंत्री के पद पर आसीन रहे **मा. नरेन्द्रजीत सिंह रावल** की अनुभव पेटिका से प्रस्तुत हैं प्रधानाचार्य के सफलतम नेतृत्व हेतु कुछ बिन्दु। बहुत ध्यान से इनको ग्रहण करें। मानक परिषद् 'माप' की मूल्यांकन प्रक्रिया के चार प्रमुख आधारों में से एक है।

प्रधानाचार्य विद्यालय रूपी शिक्षा संस्था का एक प्रमुख नेतृत्वकर्ता होता है। संस्था सक्षम कुशल एवं योग्य प्रधानाचार्य के नाम से ही पहचानी जाती है। वह शिक्षा संस्था का प्रारम्भिक कक्षा से उच्चतम कक्षा तक के सभी छात्र-छात्राओं का आदर्श प्रेरक एवं उतरादायित्व पूर्ण आचार्य है। वह सम्पूर्ण शिक्षक टोली एवं प्रशासनिक सहयोगियों का मुखिया है तथा सब के कार्यों एवं व्यवहार का जवाबदेय भी है। एक अध्यापक किसी एक कक्षा का कक्षाचार्य होता है। वह दो तीन कक्षाओं में कोई एक या दो विषय पढ़ाता है। वह मुख्यत: केवल उन कक्षाओं में अपने शैक्षिक कार्य का उत्तरदायी है। उसका दायित्व एवं जवाबदेही इतने तक सीमित है परन्तु प्रधानाचार्य उस शिक्षण इकाई के सब कार्यों के प्रति उतरदायी है। सभी विद्यार्थियों का सम्यक विकास हो, पाठ्यक्रम समय पर भली भाँति सम्पन्न हों, मेधावी एवं मन्दगति से चलने वाले सभी विषयों की उचित शिक्षण व्यवस्था बालक-बालिकाओं के सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास की दृष्टि से विद्यालय में पाठ्य व सहपाठ्य गतिविधियों की योजना बनाना इस हेतु सभी पाठ्य व सहपाठ्य सामग्री, उपकरण, उपस्कर जुटाना तथा उन का प्रयोग उचित रूप में हो। इन सब की रखरखाव की व्यवस्था करना, कक्षा कक्ष की स्वच्छता, बालक-बालिकाओं के लिए उपयुक्त उपस्कर की व्यवस्था, विद्यालय में विद्युत व पानी भैया बहनों के लिए शौचालय की व्यवस्था व उसकी स्वच्छता का जाँच उचित ढंग से करना। विद्यार्थियों के विद्यालय लाने एवं वापस ले जाने की परिवहन की उचित एवं सुरक्षित व्यवस्था।

विद्यालय समय पर प्रारम्भ हो, वंदना एवं संस्कार पक्ष का सबलता से विकास, छात्र-छात्राओं के पंचकोशीय विकास की दृष्टि से विद्यालय के पाठ्य व सहपाठ्य गतिविधियों की भी उचित व्यवस्था हो। ज्ञानात्मक विकास हेतु समृद्ध पुस्तकालय हो वहाँ पुस्तकों का लेन-देन व स्वाध्याय की सुविधाजनक व्यवस्था हो। प्रयोगशालाएँ मात्र केवल शोभा व दर्शनीय वस्तु न होकर वहाँ उचित ढंग से प्रयोग करने की व्यवस्था हो।

शारीरिक विकास हेतु विद्यालय में खेलों के लिए साधन एवं उपस्कर उपलब्ध हों जो मात्र दर्शनीय न होकर विद्यार्थियों एवं आचार्यों के विकास के लिए क्रियात्मक रूप से प्रयोग में आने वाले साधन हों। खेलों के माध्यम से छात्र-छात्राओं का विकास हो।

छात्र-छात्राओं के लिए पीने का स्वच्छ पानी मिले, स्वास्थ्य की दृष्टि से उचित प्राथमिक उपचार हेतु डॉक्टर व डिस्पेंशरी की सुविधा हो।

आज के युग में तकनीकी ज्ञान हेतु कम्प्यूटर आदि संसाधनों आवश्यक हैं। अत: वे उपलब्ध हों तथा उनका ठीक प्रकार से उपयोग हो।

रटन्त शैली से परीक्षा के लिए पढ़ाना मात्र न होकर विषय को छात्र-छात्राओं को ठीक प्रकार से समझ हो सके इस दृष्टि से इन उपकरणों एवं संसाधनों का नियमित प्रयोग हो। सम्पूर्ण विद्यालय टोली प्राचार्य, आचार्य, कर्मचारी वर्ग अपने-अपने दायित्व के प्रति पूर्ण निष्ठा रखें व विद्यालय के प्रति समर्पित हों। यह टीम भावना का निर्माण करना प्रधानाचार्य का ही दायित्व है। ज्मंउ अर्थात् Totally Engrosed in Achievement Mission.

प्रधानाचार्य के नेतृत्व में इस प्रकार की टोली का विकास हो कि कार्यालय की लेखा व्यवस्था व रिकार्ड का पूर्णरूपेण लिखित रूप से फाइलिंग की जाए। नियमित रूप से प्रशासनिक विभाग, शिक्षा विभाग, परीक्षा विभाग व बोर्ड से सम्बंधित विषयों पर चर्चा कर उनके पत्रों का उचित एवं संतुष्टिपूर्ण उत्तर दिया जाए तथा प्रशासनिक तंत्र की आवश्यकताएँ एवं अपेक्षाओं की यथा सम्भव समय पर पूर्ति की जाए। यह सब जवाबदेही भी प्रधानाचार्य की होती है।

प्रधानाचार्य केवल विद्यार्थियों के प्रधानाचार्य मात्र नहीं हैं। वे सम्पूर्ण समाज के प्रति उत्तरदायी एवं जिम्मेदार इकाई है। आओ! हम सब इसका स्मरण कर इस दायित्व को भलीभाँति सम्पन्न करने के योग्य बनें। शिक्षा विभाग, प्रशासन, प्रबंध समिति के दायित्वों की चिंता करें जो कार्य श्रद्धापूर्वक किया जाता है व परिणामकारी प्रभावी एवं आदर्श होता है।

सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् प्रधानाचार्य के दायित्व एवं कार्यकुशलता का मूल

मंत्र है। यदेव विद्यया करोति श्रद्धायोपनिजदा तदेववीर्यवत्तरं भवति।

जो भी कार्य श्रद्धापूर्वक, उपासना भाव से एकाग्रता हो कर ज्ञान पूर्वक अर्थात् समझ के साथ किया जाता है वह बहुत परिणामकारी तथा शक्तिदायी रूप हो जाता है।

What ever is done with knowledge, faith and attitude of upasana becomes most vigorous and fruitful. It gives the best result.

प्रधानाचार्य के कार्य का स्वरूप

1. मातृ संस्था एवं प्रबंध समिति, शिक्षा विभाग के नियमों को समझना तथा तदनुरूप कार्य की योजना करना।
2. विद्यालयों छात्रों की परीक्षा दृष्टि से जिस बोर्ड में सम्बद्ध है उस के नियमों व उपनियमों को समझ कर ठीक प्रकार से उनकी पालना हो, यह ध्यान करना तथा तदनुरूप व्यवस्था करना।
3. विद्यालय वातावरण यथा स्वच्छता, जल-व्यवस्था, लघुशंकालय व शौचालय की स्वच्छता व सुन्दरता दिखे व भैया व बहिनों के लिए अलग-अलग व्यवस्था हो।
4. संस्कारक्षम व्यवस्थाएँ, सूचनापट, प्रेरक पत्रिका, समाचार दर्शन की व्यवस्था देना। इन सब कार्यो में आचार्य एवं भैया-बहिनों को सहभागी करना, वन्दना व्यवस्था को प्रभावी बनाना।
5. विद्यालय के सभी आचार्य वर्ग, कर्मचारी वर्ग एवं विद्यार्थियों के साथ स्नेहपूर्ण परिवार भाव रखना परन्तु किसी भी स्तर पर अनुशासन हीनता को स्वीकार कदापि नहीं करना चाहिए।
6. विद्यालय क्रिया-कलाप पूर्व निर्धारित हो तथा उनकी यथा समय पूर्व तैयारी हो,यथा समय सम्पन्न हों एवं पूर्व बनाए योजनानुसार कार्यक्रम सम्पन्न होने के बाद समीक्षा हो।
7. वार्षिक पंचांग बनाना तदनुसार व्यवस्थाएँ बनाना तथा सभी पाठ्य व सहपाठ्य गतिविधयों को पंचांग में स्थान-समय आदि की व्यवस्था करना तदनुरूप कार्य पाठ्य - सहपाठ्य प्रभावी ढंग से सम्पन्न हो यह देखना।
8. छात्र-छात्राओं के सर्वांगीण विकास की दृष्टि से, आचार्यो के विकास की दृष्टि से कार्यक्रमों के योजना करना। विज्ञान व भूगोल आदि विषयों में प्रयोगात्मक पाठ्यक्रम की उचित व्यवस्था करना।
9. समाचार पत्र पढ़ना, प्रेरक समाचार विद्यार्थियों के ध्यान में लाना इस उद्देश्य हेतु उन्हें बोध पट्ट पर लिखना।
10. अध्यापक/आचार्य भैया-बहिनों के विश्राम की दृष्टि से व स्वाध्याय आदि हेतु अध्यापक कक्ष पुरुषों व महिलाओं हेतु अलग व्यवस्था बनाना।
11. अध्यापक कक्ष के लिए अलग से समाचार व शैक्षिक पत्रिकाओं की व्यवस्था करना।
12. प्रत्येक सह पाठ्य कार्यक्रम की पूर्व योजना हेतु सम्बंधित अध्यापक वर्ग के साथ बैठना, दायित्व बाँटना व कार्यक्रम सम्पन्न होने के बाद पुनः बैठकर मूल्यांकन करना।
13. समय सारिणी बनाना, विज्ञान प्रयोगात्मक कार्य परीक्षा मूल्यांकन की योजना बनाना। अध्यापकों व अभिभावकों तथा विद्यार्थियों की इस सम्पूर्ण मूल्यांकन योजना में सहभागिता करवाना तथा उन्हें पूरी जानकारी प्रदान करना।
14. प्रत्येक स्तर पर परीक्षा हो जाने के बाद विद्यार्थियों एवं अभिभावकों के साथ अलग-अलग कार्य समूह में बैठना योजना बनाकर परीक्षा परिणाम का मूल्यांकन करना।
15. आचार्य अपने पाठ्य विषय की तैयारी करके आयें। पाठ/चैप्टर पूर्ण होने पर अपने विद्यार्थियों की जाँच करना, जिन्हें कोई बिन्दु समझ में नहीं आया हो तो उन्हें पुनः समझाने का प्रयास करना।
16. तत्कालिक लघु परीक्षाओं के माध्यम से यह परख लेना कि पाठ उन्हें समझ में आ गया है या नहीं।
17. गृह कार्य यदि दिया जाता है तो उसका मूल्यांकन व निरीक्षण करना।
18. परीक्षा की उत्तर पुस्तिकाओं की जाँच कर छात्रों के द्वारा हुई भूलों/ अशुद्धियों के प्रति उन्हें सचेत करना।

पुत्र ने पिता को दण्ड दिया

रतलाम के शासक सज्जन सिंह के राज्य में श्री श्रीनिवास शास्त्री से कोई अपराध हो गया। सैनिक पकड़ कर उन्हें उनके पुत्र के ही न्यायालय में ले आए। कानून के अनुसार पुत्र ने उन्हें अपराधी ठहराते हुए छः मास की सजा व पाँच सौ रुपए का जुर्माना किया। माता के क्रोध का शालीनता से उत्तर देते हुए कहा, "माँ जब सत्ताधिकारी ही न्याय नहीं करेगा तो सामान्य प्रजा का क्या होगा?"

उस घटना से गद्‌गद हो महाराज सज्जन सिंह ने पिता को कैद मुक्त कराया व पुत्र की पदोन्नति कर दी।

श्रीमती फली बोडो को सम्मानित करते हुए
डॉ. निर्मल कुमार चौधरी

डॉ. उपेन रामाहकाचाम को पुरस्कृत करते हुए
श्री कनक सेन डेका

कृष्ण चन्द्र गाँधी स्मृति पुरस्कार वितरण समारोह
में मंचस्थ अधिकारीगण

स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए डॉ. निर्मल कुमार चौधरी

विद्या भारती मेरठ प्रांत में शिक्षक कार्यशाला में प्रतिभागी

भारतीय शिक्षा समिति बिहार के शारीरिक
कार्यशाला में प्रतिभागीगण

स. शि. मं. उच्चतर मा. विद्यालय सूर्यकुंड में
शारीरिक वर्ग का समापन

भारतीय शिक्षा समिति ब्रज प्रदेश
प्रधानाचार्य कार्य योजना बैठक

साधारण सभा कुरुक्षेत्र में मंचस्थ अधिकारीगण

अवध प्रांत जन शिक्षा समिति के प्रधानाचार्य वर्ग में प्रतिभागीगण

आदर्श विद्या मंदिर आबूरोड में विद्या भारती शिक्षा संस्थान जोधपुर प्रांत प्रधानाचार्य सम्मेलन में प्रतिभागीगण

विद्या भारती साधारण सभा कुरुक्षेत्र में भाग लेते हुए प्रतिभागीगण

एस. वी. एम. इण्टर कॉलेज, पाली हरदोई

एस. वी. एम. इण्टर कॉलेज, पाली हरदोई

सरस्वती विद्या मंदिर, तिलौथू की पूर्व छात्रा बहन लवली का दरोगा पद पर चयन होने पर उन्हें सम्मानित करता विद्यालय परिवार

सरस्वती विद्या मंदिर, तिलौथू की पूर्व छात्रा बहन लवली छात्रों का सम्बोधित करते हुए।

सरस्वती शिशु मंदिर रणजीत नगर, दिल्ली की प्रधानाचार्या व विद्यार्थी महामहीम राष्ट्रपति जी के साथ

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान साधारण सभा उत्तर क्षेत्र में पुस्तक विमोचन

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान साधारण सभा उत्तर क्षेत्र में दीप प्रज्ज्वलन करते हुए अधिकारी

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान साधारण सभा उत्तर क्षेत्र में उपस्थित प्रतिभागी

छू रहे हैं आसमान की बुलंदियाँ आज,
आगे भी छूते रहेंगे हम, बढ़ते रहेंगे हम।

GITA NIKETAN AWASIYA VIDYALAYA

SINCE 1973
Kurukshetra-136118 (Haryana) | Ph.: 01744-270696
Affiliated to Central Board of Secondary Education A.No. 530022
E-Mail : gitaniketan@rediffmail.com
Website : www.gitaniketan.org

Maintains its splendid tradition of excellence - CBSE Result 2018-19

TOPPERS CLASS XII

HUMANITIES

AASHIMA SUDHA 97.2%

NON-MEDICAL

NIHARIKA 95.8%

COMMERCE

KSHITIJ MITTAL 95.4%

MEDICAL

ABHAYJEET SINGH 93.8%

HEMA 96.40%

AYUSH 96.20%

AKSHIT 95.60%

NEHA 95.40%

JAIDEEP 95.20%

NIKHIL 95.00%

SHIVIKA 95.00%

TOPPERS CLASS X

MAYANK 98.00%

KASHISH 97.80%

SAKSHI 97.40%

ISHA 97.20%

MANIK 96.80%

AMAN 96.60%

KIRTI 96.60%

ASHUTOSH 96.40%

ANSHUL 96.40%

ANIKET 96%

HIMANSHI 95.8%

APSARA 95.8%

LAKSHAY 95.6%

HARSHDEEP 95.4%

HIMANSHI 95.4%

SANYAM 95.40%

KAPIL 95.20%

ASHMEET 95.20%

SHIVAM 95.20%

HIMANSHU 95.20%

YASH 95.00%

STATISTICS OF (CLASS XII)

MERIT	162
90% and above	48
80% and above	127
60% and above	248

Heartiest Congratulations

STATISTICS OF (CLASS X)

MERIT	169
90% and above	63
80% and above	144
60% and above	227

Students Securing 90% and Above in Class XII

- ABHINAV 94.80%
- PARNEET KAUR 94.80%
- GAURAV SINGLA 94.60%
- BHAVOUK 94.40%
- ANJALI SHARMA 94.40%
- PRIYAVRAT 93.80%
- MADHAV 93.80%
- VIDHI 93.80%
- NISHANT 93.60%
- KARMA CH. NEGI 93.60%
- CHINMAYEE 93.60%
- AKSHAT 93.60%
- JHALAK 93.20%
- GAJAN GOYAL 93.00%
- PULKIT 93.00%
- AMAN KUMAR 93.00%
- ARYAN BANSAL 93.00%
- SIDDHANT 93.00%
- ANKUSH 93.00%
- ANKUR SINGH 92.80%
- SUHANI 92.80%
- PARMEET 92.60%
- GURMEET SINGH 92.60%
- DIVYE 92.60%
- SHUBHAM 92.40%
- NEHA 92.00%
- SIDDHARTH 91.80%
- SAHIL 91.60%
- M. DINESHWOR 91.60%
- DISHANT THIND 91.20%
- KOMAL 91.00%
- YOSHIT 91.00%
- SHUBHAM 91.00%
- MEENAKSHI 90.40%
- H. PRABIN 90.20%
- KHUSHBOO 90.20%
- RAGHAV 90.00%

Students Securing 90% and Above in Class X

- MUSKAN 94.80%
- DEVANSH VATS 94.60%
- CHESTHA 94.40%
- GURPREET 94.40%
- RAMAN VERMA 94.20%
- NIKHIL 94.00%
- KANIKA SHARMA 93.80%
- DHRUV GARG 93.60%
- NIHAR 93.60%
- MANVI 93.60%
- PARTH PRASHAR 93.60%
- GAURAV 93.60%
- TANISHA 93.40%
- CHIRAG 93.40%
- PIYUSH DHIMAN 93.40%
- RAM 93.20%
- ARYAN DHULL 93.00%
- APOORVA 93.00%
- UDAY PARTAP 92.80%
- AASTHA 92.80%
- HARSHPREET 92.60%
- PARAS KUMAR 92.60%
- RIYA SINGLA 92.40%
- YATIN SAINI 91.80%
- ANU GARG 91.80%
- BHUMI 91.40%
- SARTHAK GARG 91.40%
- MANISHA 91.20%
- SUHAIL SINGH 91.20%
- HARSH KANGAR 91.00%
- RISHABH 91.00%
- PURUJIT TYAGI 90.80%
- PRIYA CHAUHAN 90.80%
- SHASHWAT 90.80%
- PIYUSH 90.60%
- ARPIT DUA 90.40%
- ROHIT KUMAR 90.20%
- VATSAL GARG 90.20%
- YASHAV GHOLIA 90.20%
- BALRAJ NEHRA 90.00%
- KULBIR 90.00%
- ADITYA PARTAP 90.00%

● युगमनीषी परमपूजनीय श्री गुरुजी द्वारा 1973 में स्थापित। ● मनोरम, भव्य, आकर्षक परिसर एवं संस्कारक्षम परिवेश। ● बोर्ड व प्रतियोगी परीक्षाओं में सर्वोत्तम परिणाम। ● प्रतिभा खोज परीक्षा (NTSE) एवं विभिन्न ओलंपियाड स्पर्धाओं में छात्रों का चयन। ● सह-शैक्षणिक गतिविधियों एवं खेल प्रतियोगिताओं में प्रान्त तथा राष्ट्रीय स्तर पर छात्रों का उत्कृष्ट प्रदर्शन। ● विभिन्न व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अनेक छात्रों का चयन। ● छात्र-छात्रा दोनों के लिए NCC ● सम्पूर्ण वातानुकूलित छात्रावास व्यवस्था। ● छात्रावास में देश के 24 राज्यों के 550 छात्र अध्ययनरत। ● प्रतियोगी परीक्षाओं की कोचिंग सुविधा।

DR. GHANSHYAM SHARMA
President

PAWAN GUPTA
Manager

NARAYAN SINGH
Principal

जलियाँवाला बाग में वीभत्स नरसंहार आज़ादी की लड़ाई में उत्प्रेरक बना

भारत में 100 सौ वर्ष पहले की विभत्स नरसंहार की घटना को याद करना अत्यंत आवश्यक है क्योंकि आज भी हमारे इतिहास में इस नरसंहार को सही रूप में नहीं पढ़ाया जाता है। अतएव जानबूझ कर की गई उस नरसंहार की वीभत्स घटना को विद्यार्थियों से अवगत करना आवश्यक है।

दिनांक 13 अप्रैल 1919 को अमृतसर नामक शहर में जालियाँवाला बाग नामक मैदान में जिसके चारों ओर दीवारे व एक मात्र निकलने के रास्ते में ब्रिटिश फौज के जल्लाद निहत्थे भारतीयों पर अपनी बन्दूकों से आग उगलकर उन्हें मौत के घाट पहुँचा रहे थे, जिसमें बच्चे, बूढ़े औरत व पुरुष निरीह होकर जान बचाने के लिए उसी मैदान के बीच में बने कुआँ में कूद कर जान गवाँ रहे थे। यह वीभत्स घटना उन दिनों की सभी भारतीय नागरिकों के लिए रौंगटे खड़ी कर देने वाली थी।

रौलेट एक्ट के विरोध में व अँग्रेजों की दमनकारी नीतियों के खिलाफ दो नेताओं सैफुदीन किचलू और सत्यपाल की गिरफ्तारी के विरोध में एक सभा आयोजित की गई थी, वैशाखी का पवित्र दिन होने के कारण देश के कोने-कोने से असंख्य लोग अमृतसर के पवित्र सरोवर में स्नान करने व मेला देखने के लिए आए थे। उत्सुकतावश उस जनसभा में एकत्रित होते गए और पूरा मैदान जनसमुदाय से भर गया था। अचानक ब्रिटिश सरकार के अधिकारियों को लगा कि 1857 का विद्रोह पुनः शुरु होने वाला है। जिसे न होने देने के लिए और समूह को इक्ट्ठा होने से भविष्य में रोकने के लिए वे कुछ भी करने को तैयार थे। जब नेता मैदान में भाषण दे रहे थे तभी ब्रिगेडियर जनरल रेजीनाल्ड डायर 90 ब्रिटिश सैनिकों को लेकर वहाँ पहुँच गया और बिना किसी प्रकार की चेतावनी दिए निहत्थे लोगों पर सैनिकों के हाथों में भरी राइफलों से गोलियाँ सीधे सभा के उपर चलवानी शुरू कर दीं। 10 मिनट में कुल 1650 राउंड गोलियाँ चलाई गईं। मैदान से बाहर निकलने के रास्ते पर सैनिकों को खड़े देख कर लोग कुएँ में कूदने लगे। देखते ही देखते कुआँ लाशों से भर गया।

आज भी अमृतसर के डिप्टी कलक्टर के कार्यालय में 484 शहीदों की सूची है जबकि ब्रिटिश शासन के दस्तावेज में 379 लोगों के मरने व 200 लोगों के घायल होने की सूची है। जबकि वास्तविकता यह है कि 5000 लोगों का समूह तो मैदान में एकत्रित हुआ था उनमें से अधिकांश यानि हजारों लोग आकस्मिक इस दुर्घटना मे कालकवलित व असंख्य लोग घायल हो गए थे। लोगों का समूह तो अपने देश के प्रति प्रेम व समर्पण की भावना से अमृतसर के पवित्र तीर्थ में मेले के लिए तथा बिना किसी जातिगत भेदभाव व राष्ट्रीय एकता की भावना से तथा पुण्य लाभ हेतु देश के कोने-कोने से एकत्रित हुए थे।

इस घटना के प्रतिरोध स्वरूप सरदार ऊधम सिंह ने 13 मार्च 1940

को लंदन के कैक्सटन हॉल में ब्रिटिश जल्लाद गवर्नर मायकल ओ डायर को गोलियों से भून कर बदला ले लिया। परन्तु उन्हें 31 जुलाई सन् 1940 को फाँसी दे दी गई जिससे हँसकर स्वीकार कर शहीद हो गए।

इस नरसंहार की याद में एक लौ के रूप में स्तूप बनाई गई है जहाँ शहीदों के नाम अंकित है। वह कुआँ आज भी मौजूद है जिसमें लोग गोलीबारी से बचने के लिए कूद कर शहीद हो गए थे। दीवारों पर आज भी गोलियों के निशान देखे जा सकते हैं। इस दुःखद घटना के लिए स्मारक हेतु आम जनता से चंदा इकट्ठा करके जमीन खरीद कर स्मारक बनाया गया है।

सन् 1997 में इंग्लैंड की महारानी एलिजाबेथ ने इस स्मारक पर मृतकों को श्रद्धांजलि दी थी। 2013 में ब्रिटिश प्रधानमंत्री डेविड कैमरॉन ने भी इस स्मारक पर आकर यात्रा करने वालों की पुस्तिका में लिखा, ''ब्रिटिश इतिहास की एक शर्मनाक घटना थी।''

इस वीभत्स घटना के 100 वर्ष पूरे होने पर याद आते ही आज भी रौगटें खड़े हो जाते हैं और ब्रिटिश सरकार के खिलाफ विरोध स्वरूप एकजुट होने का अहसास होता है।

देश पूर्वोत्तर क्षेत्र में विद्या भारती

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान सम्पूर्ण देश में शिक्षा जगत् में कार्य करने वाला अप्रतिम संगठन है। आज इसका सम्पूर्ण देश में व्याप है। पूर्वोत्तर के प्रांतों में सर्वप्रथम असम की राजधानी गुवाहाटी में इसका कार्य 21 अप्रैल सन् 1979 में शिशु शिक्षा समिति असम की स्थापना के साथ प्रारम्भ हुआ। श्रीकांत जोशी जी की प्रेरणा एवं श्री कृष्णचंद गाँधी जी के प्रयास से महाराष्ट्र के एक कार्यकर्ता श्री विराग पाचपोर ने दीपक बरठाकुर के सहयोग से शंकरदेव शिशु निकेतन नाम से 4 सितम्बर 1979 को गुवाहाटी के अंबिकापुर में एक विद्यालय प्रारम्भ किया। प्रबंध समिति के पदाधिकारी :- श्री रजनीकांत देव शर्मा (अध्यक्ष),श्री सुरेन्द्र नाथ शर्मा (उपाध्यक्ष), श्री दीपक कुमार बरठाकुर (मंत्री)व संगठन का कार्य श्री विराग पाचपोर देख रहे थे। श्री सुरेन्द्र शर्मा, डॉ. हेमन्त शर्मा, प्रभुदयाल जालान, नंदेश्वर सैकिया, प्रशांत शर्मा, किरण शर्मा आदि को लेकर समिति का गठन किया गया था। इसके बाद 29 सितम्बर 1979 को इम्फाल नगर में बाल विद्या मंदिर का आरम्भ हुआ। नीलमणि शर्मा को प्रधानाचार्य का दायित्व दिया गया।

11 सितम्बर 1981 को भारतीय दर्शन एवं शिक्षा विषय पर सेमिनार का आयोजन गुवाहाटी में किया गया। श्री सीताराम जायसवाल (निदेशक, भारतीय शिक्षा शोध संस्थान लखनऊ) मुख्य वक्ता थे। 13 सितम्बर सन् 1982 को रवीन्द्र भवन, गुवाहाटी में सभी तत्कालीन विद्यालयों का वार्षिकोत्सव मनाया गया। आचार्य कपिलदेव नारायण सिंह, उपाध्यक्ष विद्या भारती पूर्वोत्तर क्षेत्र मुख्य अतिथि थे। दिसम्बर 1982 में आचार्य प्रशिक्षण वर्ग का आयोजन गुवाहाटी में और 1983 में तेजपुर में किया गया। शिशु शिक्षा समिति आसाम के द्वारा 12 फरवरी 1984 में तेजपुर में शिशु शिविर का आयोजन किया गया जिसमें शंकरदेव शिशु निकेतन नामक विद्यालयों के 150 विद्यार्थियों के द्वारा शारीरिक व सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति की गई। इस प्रकार के शिशु शिविर का आयोजन पहली बार किया गया। सन् 1984 तक प्राथमिक 7 व माध्यमिक स्तर पर दो विद्यालय ही चल रहे थे।

श्री कृष्णचंद गाँधी जी के अथक प्रयास से सम्पूर्ण असम में विद्या भारती का कार्य संगठन के अनुकूल हो; इसके लिए पूर्वोत्तर के प्रत्येक शासकीय राज्य से कर्मठ कार्यकर्ताओं को शिशु मंदिर योजना की जानकारी व प्रशिक्षण हेतु सरस्वती कुंज निराला नगर लखनऊ भेजा गया। मणिपुर से ओक्राममुक्ता सिंह, युमनाम तोम्बा सिंह असम से खगेन सैकिया, निखिल चक्रवर्ती और प्रकाश शर्मा, त्रिपुरा धर्मनगर से असीमदास, आचार्य प्रशिक्षण के बाद ये सभी विद्या भारती के कार्य विस्तार में सक्रिय रूप से लग गए। मैं उस काल में आचार्य प्रशिक्षण केन्द्र लखनऊ में प्रशिक्षण ले रहा था। गाँधी जी ने विद्या भारती का कार्य जनजातीय क्षेत्रों में शुरू करने की दृष्टि से हाफलाँग प्रकल्प के लिए मुझे कहा। मैंने तत्कालीन प्रांत प्रचारक श्रीकांत जोशी के नाम पत्र लेकर असम के लिए प्रस्थान किया। अक्टूबर 1981 को विश्वहिन्दू परिषद् कार्यालय हाफलाँग के परिसर में गया। परन्तु अपनी भाभी जी के निधन के कारण वापस लौट आया। मैं 26 अप्रैल 1982 को पुनः हाफलाँग गया।

हाफलाँग प्रकल्प की शुरुआत

अपने देश के अजेय प्रहरी, जो लगभग 182 जनजातियों के समूह में बँटे हैं, सम्पदाहीन एवं गरीबी अवस्था में विदेशियों के कुचक्रों में फँसे, परन्तु अपनी संस्कृति एवं धर्म की रक्षा हेतु संघर्षरत रहते हैं। स्थानीय समाज में मैंने जाकर मिलना-जुलना प्रारम्भ किया। उसी दौरान् रामसिंग मनोगा हाफलाँग में जिला प्रचारक के दायित्व पर आए तो मेरी आंतरिक शक्ति को भी बल मिला। उस समय हाफलाँग स्वायत्त परिषद् के कार्यकारी अध्यक्ष थे श्री कुम्भ कुमार हौजाई। असम सरकार में मंत्री थे सोनाराम थाउसेन। हाफलाँग में डिमासा जनजाति बहुसंख्यक समाज होने के कारण उस समाज में अँग्रेजों के साथ सम्पर्क रखना समय की माँग थी। और फिर डिमासा समाज के सामुदायिक घर में सोनाराम थाउसेन और कुम्भ कुमार होजाई के कर कमलों से सैकड़ों स्थानीय समाज की उपस्थिति में 1 मई 1982 को सरस्वती शिशु मंदिर की स्थापना की गई। उमापाल शिशु मंदिर की प्रधानाचार्या बनी। कालान्तर में शायद 10-12 वर्षों के बाद विद्यालय बंद हो गया। सरस्वती शिशु मंदिर को कुम्भ कुमार होजाई द्वारा प्राप्त भूमि में लाया गया जो वर्तमान में सेवा भारती का कार्यालय है। मैंने गाँधी जी को दूरभाष पर बताया, गाँधी जी का मुख्यालय ध्रुवा, राँची में था। उन्होंने उत्साह बढ़ाया। परन्तु उसके बाद उन्होंने जो कहा उससे विद्या

भारती हाफलाँग प्रकल्प की सत्यता मेरी समझ में आई। गाँधी जी के शब्दों में ही मैं बता रहा हूँ ''पंकज, तुम विद्या भारती संगठन की योजना से जनजाति क्षेत्र में जनजातीय समाज के मध्य शिक्षा, सेवा द्वारा संस्कार देने व राष्ट्रीय एकात्मता के कार्यों के लिए गए हो मात्र एक साधारण शिशु मंदिर खोलने के लिए नहीं भेजे गए हो। तुम रामकुई जी से जाकर मिलो।''

उत्तर काछार जिले में दूसरी बहुसंख्यक जनजाति है-जेमी नागा। जेमी नागाओं के मध्य ईसाइयत का प्रभाव अधिक था, ध्यान में आया कि स्वतंत्रता सेनानी पद्मश्री रानी माँ गाईदिनलियु द्वारा स्थापित जेलियांगरोंग हेराका पंथ जेमी नागा की परम्पराओं की सुरक्षा एवं सम्बर्धन के लिए कटिबद्ध है। रामकुई वांगबे नेउमें रानीमाँ के आन्तरिक सहायक थे। उस समय हेराका समाज के साधारण समन्वयक थे व विश्व हिन्दू परिषद् के भी पदाधिकारी थे, साथ ही जिला शिक्षा पदाधिकारी भी थे। मेरा उनके साथ नगर से 3 किलोमीटर दूर म्पुइलो बड़ा हाफलाँग ग्राम जाना हुआ। ग्राम बूढ़ा नामदा जी के घर गए, वार्ता हुई और ग्राम से ऊपर की जमीन विद्या भारती विद्यालय को दान देने का निर्णय हुआ। उस जमीन से जुड़ी हुई विशेषता नामदा जी ने उस समय बताया यह जमीन हेराका के लिए ही है। 4 बीघा जमीन सरस्वती विद्या मंदिर को प्राप्त हुई। उस जमीन पर खड़े 12-14 फीट लम्बे झाड़ के जंगल को काटकर विद्यालय शुरू किया गया। 24 नवम्बर 1982 को मूसलाधार वर्षा में भी राष्ट्रीय स्वयंसंघ के तत्कालीन क्षेत्र प्रचारक श्री कुप्पहली सीतारम्मैया सुदर्शन जी ने भूमि पूजन का कार्य सम्पन्न किया। इस प्रकार सरस्वती विद्या मंदिर आवासीय विद्यालय हाफलाँग प्रकल्प 18 फरवरी 1983 को सरस्वती पूजा यानि बसंत पंचमी के दिन गाँवबूढ़ा आदरणीय नामदा जी के कर कमलों से सम्पूर्ण ग्रामवासियों और नगर के गणमान्य लोगों की उपस्थिति में प्रारम्भ हुआ।

असम राज्य भौगोलिक दृष्टि से ब्रह्मपुत्र उपत्यका और बराक उपत्यका में स्थिति है। बराक उपत्यका बंगलादेश की सीमा से लगा है। बराक उपत्यका बंगला भाषा-भाषी की बहुलता है। अतएव बराक उपकत्या में शिक्षा का माध्यम बंगला रखा गया। जबकि शेष असम में असमिया भाषा शिक्षा का माध्यम है।

आचार्य प्रशिक्षण संस्थान लखनऊ से प्राप्त निखिलभूषण चक्रवर्ती को सरस्वती विद्या निकेतन मालुग्राम, यमुनाम तोम्बा सिंह को कोंगपाल, मणिपुर का प्रधानाचार्य, ओक्राम मुक्ता सिंह को थोबाल,मणिपुर का प्रधानाचार्य, खगेन सैकिया को शंकरदेव विद्या निकेतन, गुवाहाटी का प्रधानाचार्य और असीमदास को धर्मनगर विद्यालय का प्रधानाचार्य का दायित्व दिया गया। वर्ष 1982 में सिलचर का विद्यालय प्रारम्भ हुआ था। श्री कनाईलाल सेनापति का सिलचर विद्यालय के विकास में बड़ा योगदान रहा।

त्रिपुरा राज्य में प्रथम विद्यालय त्रिपुरेश्वरी शिशु मंदिर धर्मनगर 1984 में शुरू हो गया था। धर्म नगर विद्यालय की स्थापना में संघ के प्रचारक श्री सुध ाकर वैद्य जी की बड़ी भूमिका रही। 1983 में गुवाहाटी में ब्रह्मपुत्र से सटे बाल भवन में 3 दिवसीय प्रथम आचार्य दक्षता वर्ग का आयोजन तत्कालीन अखिल भारतीय संगठन मंत्री श्री लज्जाराम तोमर के सान्निध्य में किया गया कुल 12 लोग उपस्थित थे।

1984 में श्रद्धेय शन्तनु रघुनाथ शेण्डे जी को आसाम एवं बंगाल के सह क्षेत्र संगठन मंत्री का दायित्व दिया गया। केन्द्र आपका गुवाहाटी था। 1986 में श्री लक्ष्मीनारायण भाला जी को असम प्रांत के सह संगठन मंत्री का दायित्व दिया गया। कालान्तर में श्री शेण्डे के पास राष्ट्रीय सह मंत्री का दायित्व आने पर श्री लक्ष्मीनारायण भाला जी को विद्या भारती पूर्वोत्तर का संगठन मंत्री बनाया गया।

सरस्वती विद्या मंदिर बड़ा हाफलाँग सम्पूर्ण भारत का प्रथम जनजातीय आवासीय विद्यालय बना। जेलियांगरोंग हेराका संगठन का सम्मेलन 1988 में विद्या मंदिर से जुड़ा ग्राम म्पुइलवा में हुआ था। 9 से 11 जनवरी 1988 को पूर्वोत्तर क्षेत्र का विद्या भारती का क्षेत्रीय आचार्य सम्मेलन विद्या मंदिर हाफलाँग में सम्पन्न हुआ। उस सम्मेलन में अखिल भारतीय संगठन मंत्री लज्जाराम तोमर, मंत्री डॉ. गुज्जरमल्ल वर्मा, भारतीय शिक्षा शोध संस्थान के निदेशक डॉ.सीताराम जायसवाल, तत्कालीन किसानसंघ के अ.भा.संगठनमंत्री श्रद्धेय ठाकुर राम सिंह, राष्ट्रसेविका समिति की कार्यवाहिका सुश्री प्रमिला ताई मेढ़े, स्वामी अमारानंद जी, जसपुर के युवराज दिलीपसिंग जीजुदेव जी, असम प्रांत के संघचालक व शिशु शिक्षा समिति के प्रांतीय अध्यक्ष दीपक कुमार बरठाकुर तथा सहमंत्री श्री नंदेश्वर सैकिया। श्रीकृष्णचंद गाँधी व श्री शंतनु रघुनाथ शेण्डे के स्नेहिल व्यवहार से हाफलाँग प्रकल्प का कार्य अपनी ऊँचाइयों पर पहुँचा। इस पवित्र भूमि पर पुरातत्ववेता श्री हरिभाऊवाकेणकर, मा.दीनानाथ बत्रा, श्रीजगमोहन जी गर्ग, सुश्री इन्दुमति काटदरे,

डॉ. शरण बिहारी गोस्वामी, पूर्व सरसंघचालक राजेन्द्र सिंह (उपाख्य रज्जू भैया), पूर्वसरसंघचालक कुप्पहल्ली सीतारम्मैया सुदर्शन जी, श्रद्धेय अशोक जी सिंघल, वर्तमान सह सरकार्यवाह श्री सुरेश जी सोनी, सह सर कार्यवाह श्री कृष्णगोपाल जी, राजनेता श्रद्धेय मधुकर लिमये, पद्मश्री ब्रह्मदेव शर्मा (उपाख्य भाई जी), श्रद्धेय रोशनलाल सक्सेना जी, विद्या भारती के राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री श्री यतीन्द्र जी शर्मा व मा. प्रकाश चन्द्र जी पूर्व अखिल भारतीय संगठन मंत्री विद्या भारती का इस केन्द्र पर प्रवास हुआ है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के तृतीय सरसंघचालक श्रद्धेय बाला साहेब देवरस ने प्रवास में श्रीमंत शंकरदेव सभागृह शिलान्यास के समय हैदातुइंग का संस्कृत में गीता पाठ का गायन सुनकर उन्हें गले लगाना और शिलान्यास के समय प्रथम ईंट ग्राम पुजारी से रखवाना, सेवा कार्य हेतु प्रेरक नवीन दिशा प्रदान की गई। पूरे भारत में विद्या मंदिर हाफलाँग के जनजातीय विद्यार्थियों के संस्कृत गायन की पूर्वसंघचालक बाला साहेब देवरस वर्षो तक प्रशंसा करते रहे।

दिल्ली के मुल्कराज विरमानी, गुवाहाटी के रामगोपाल जी, केशवदेव बावरी (केशव गौशाला के दानकर्ता), कृष्ण कुमार गोयनका, रामप्रसाद शर्मा, मथुरा के हरिशंकर अग्रवाल उपाख्य हरिबाबा, रामभरोसे कपूर एवं डॉ.शरण बिहारी गोस्वामी जी के सम्बंध में वर्णन करने के लिए मैं अपने आपको रोक नहीं पा रहा हूँ, आपके प्रयास से 'प्राची' पत्रिका 1983 प्रकाशित होने लगी जिसमें हाफलाँग से भेजी गई सामग्री को प्रकाशन योग्य बनाकर प्रकाशित करते थे। उनके प्रति आभार व्यक्त करना मेरा धर्म है। 'प्राची' के सम्पादकीय में लिखते थे 'प्राची में विद्या मंदिर की धड़कनें सुनाई देंगी' हम नहीं चाहते थे कि प्रलोभन व प्रताड़ना से किसी का धर्म परिवर्तन किया जाए। भारत का वन प्रदेश भारतीय गीत संगीत से मुखरित रहे। सन् 1992 में विद्या भारती की राष्ट्रीय कार्यकारिणी बैठक सरस्वती विद्या मंदिर हाफलाँग में आयोजित की गई थी।

1990 में अरुणाचल प्रदेश में विधिवत् संघ का कार्य प्रारम्भ हुआ। रामप्रसाद शर्मा विभाग प्रचारक का केन्द्र नाहरलागुन। श्रद्धेय कृष्णचंद गाँधी जी व श्रद्धेय शन्तनु रघुनाथ शेण्डे जी का प्रवास उस दौरान् हुआ था। कई बार मैं भी गाँधी जी के साथ अरुणाचल प्रवास में जाता रहा। सुनील जी और शेण्डे जी के प्रयास से 1994 में अरुणाचल प्रदेश का प्रथम विद्यालय आबोतानी विद्या निकेतन नाहरलागुन बाजार में एक किराए का कमरा लेकर शुरू किया गया। कालान्तर में अपनी भूमि पर विद्यालय अवस्थित है। इसी परिसर में प्रांतीय आवासीय कार्यालय भी है। 1994 रंगफ्रा विद्या निकेतन चान्लंग भी शुरू हुआ। प्रदेश में दोन्यी पोलो विद्या निकेतन के नाम से भी विद्यालय है। कर्नाटक प्रांत से आए कार्यकर्ता गणेश जी प्रदेश के पहले पूर्णकालिक कार्यकर्ता बने।

वर्ष 1995 में पूर्वोत्तर क्षेत्र को संघ की दृष्टि से दो प्रांत बनाया गया–असम का बराक उपत्यका एवं हाफलाँग जिला, त्रिपुरा, मणिपुर, मिजोरम और नागालैंड को मिलाकर दक्षिण असम प्रांत, शेष असम मेघालय और अरुणाचल प्रदेश को लेकर उत्तर आसाम। दक्षिण असम विद्या भारती का प्रथम संगठन मंत्री का दायित्व मुझे दिया गया। मेरा केन्द्र सिलचर बना। शेण्डे जी पूर्णरूपेण केन्द्रीय संगठन में आ गए। श्री लक्ष्मीनारायण भाला जी को क्षेत्र संगठनमंत्री का दायित्व मिला। गोलाघाट के तत्कालीन जिला प्रचारक ब्रह्माजीराव असम के प्रांत सह संगठन मंत्री बनाए गए। श्री लक्ष्मीनारायण भाला जी क्षेत्र संगठन मंत्री के साथ असम प्रांत के संगठन मंत्री भी रहे। जब भाला जी केन्द्रीय दायित्व में चले गए तब पूर्वोत्तर क्षेत्र संगठन मंत्री श्री विजय गणेश कुलकर्णी जी बने। 1997 में पूर्व अखिल भारतीय संगठन मंत्री श्रद्धेय लज्जाराम तोमर जी का त्रिपुरा प्रवास हुआ। अगरतल्ला नगर के मध्य रामनगर में भूमि क्रय किया गया और उन्हीं के द्वारा 5 फरवरी 1997 को भूमि पूजन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

26 जनवरी 1997 को दक्षिण असम के करीमगंज नगर में पूर्वसरसंघचालक मा. सुदर्शन जी के निर्देशानुसार सरस्वती विद्या निकेतन प्रारम्भ हुआ। वर्तमान में सरस्वती विद्या निकेतन हायर सैकेण्डरी स्कूल करीमगंज पूर्वोत्तर प्रांत का प्रथम हायर सैकेण्डरी स्कूल बना। 14 फरवरी 1998 को सरस्वती पूजा के दिन त्रिपुरेश्वरी शिशु मंदिर, रामनगर अगरतल्ला का शुभारंभ हुआ।

दिनांक 5, 6, 7 जनवरी 1998 को हाफलाँग प्रवास पर आए उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के उपाध्यक्ष डॉ. शरण बिहारी गोस्वामी जी की उपस्थिति में 6 जनवरी 1998 को 'पूर्वोत्तर हिन्दी संगोष्ठी' का आयोजन किया गया। तत्कालीन अखिल भारतीय सह संगठन मंत्री भाई जी उपस्थित रहे। पूर्वोत्तर क्षेत्र से 82 प्रतिभागियों की उपस्थिति में हिन्दी प्रेमियों के मध्य डॉ. शरण बिहारी गोस्वामी जी

ने कहा कि 'सभी भाषाओं का सम्मान हो' संस्कृति के प्रति सद्भाव बना रहे और धर्म का रक्षण हो। राष्ट्रीय शिक्षा वह है जो आत्मज्ञान दे। हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दी यही कहती है और राष्ट्रीय स्वाभिमान को जागृत करती है। वर्ष 2000 में नागालैंड में प्रथम विद्यालय हेराका विद्या भारती स्कूल, जालुकी बी ग्राम में शुरू हुआ।

2004 में प्राची पत्रिका के सम्पादक के रूप में डॉ. ललित बिहारी गोस्वामी जी जुड़ गए।

सन् 2008 में दिनांक 07 से 09 सितम्बर को गुवाहाटी में अखिल भारतीय कार्यकारिणी बैठक हुई।

11-13 सितम्बर 2015 को नागालैण्ड के गामदी विद्या भारती स्कूल, धनसिरिपार में आयोजित हुआ था। गोष्ठी में अखिल भारतीय सह मंत्री रामकुई वान्गबे एवं नागलैंड के प्रांत अध्यक्ष पियोंगतेम जेन जामीर की विशेष उपस्थिति रही। 27 अगस्त से 30 अगस्त 2017 को अरुणाचल प्रदेश के तालोम रूकबो नगर में अखिल भारतीय जनजातीय विद्यालयों के प्रधानाचार्यों, छात्रावास प्रमुखों एवं प्रकल्प प्रमुख का प्रबोधन वर्ग आयोजित हुआ। जिसमें अखिल भारतीय सह संगठन मंत्री श्री यतीन्द्र जी शर्मा व गोविन्द चंद महंथ जी उपस्थित रहे। 1-4 सितम्बर 2018 को अखिल भारतीय जनजातीय विद्यालय के प्रधानाचार्य, छात्रावास प्रमुख एवं प्रकल्प प्रमुख का प्रबोधन वर्ग सरस्वती विद्या मंदिर हाफलाँग में आयोजित हुआ।

अरुणाचल प्रदेश के संयोजक महेन्द्र चतुर्वेदी तथा नागालैंड के संगठन मंत्री पंकज सिंहा हैं। वर्तमान में योगेन्द्र सिंह दक्षिण असम के सहसंगठन मंत्री हैं। ब्रह्माजीराव पूर्वोत्तर क्षेत्र के संगठनमंत्री, सीताराम भट्ट मणिपुर प्रांत संगठन मंत्री, समीर सरकार मेघालय प्रांत संगठन मंत्री हैं।

नागालैंड प्रांत में 90 प्रतिशत विद्यार्थी और आचार्य गण ईसाई हैं। प्रांतीय समिति के पदाधिकारियों में 70प्रतिशत ईसाई हैं। विद्या भारती शिक्षा के धरातल पर पंथ-सम्प्रदाय अथवा पूजा पद्धति को व्यक्तिगत संस्कार की श्रेणी में रखकर राष्ट्रीय शिक्षा में भारत माता की जय एवं वन्देमातरम् के उद्घोष से देशभक्ति को जोड़ा है। परिणाम सुखद है। विद्या भारती के राष्ट्रीय अध्यक्ष गोविन्द शर्मा को एक कार्यक्रम में सुनने को मिला 'मैं ईसाई होने के बाद भी भारतीय हूँ'। यही सुनने को मिलने लगा है। यही तो राष्ट्रीय शिक्षा की उपलब्धि है।

विद्या भारती नागालैंड प्रदेश की समिति जनजाति शिक्षा समिति ने रानी माँ के जीवन पर आधारित सरकारी शिक्षा विभाग से सूचना प्रेषण करवाकर विगत दिसम्बर 2014 में निबंध प्रतियागिता कराई। 146 शिक्षण संस्थानों से सम्पर्क हुआ। 56 संस्थानों से निबंध आया। 28 फरवरी 2015 को डीमापुर नगर में एक शैक्षिक सभा का आयोजन किया गया। उच्च शिक्षा के निदेशक टी. खालोंग तकनीक शिक्षा के निर्देशक अथिली काथिप्री, नागालैंड विश्वविद्यालय के डीन धर्मपुरिया चतुर्वेदी और द ग्लोब ओपन यूनिवर्सिटी के उपकुलपति डॉ. हेमेन दत्त की उपस्थिति में शिक्षा से जुड़े रानीमाँ के समर्पण एवं त्याग रूपी जीवन प्रसंगों को डीमापुर नगर के उच्चतर विद्यालयों एवं महाविद्यालयों से आए शिक्षक तथा विद्यार्थियों जिनकी संख्या 232 थी के समक्ष रखा गया व श्रद्धा सुमन अर्पित किए गए। विद्वानों ने विद्या भारती की शिक्षा पद्धति को वर्तमान में समाज की आवश्यकता बताया।

विद्या भारती पूर्वोत्तर क्षेत्र के विकास पूर्व राष्ट्रीय संगठन मंत्रियों एवं वर्तमान संरक्षक पद्मश्री ब्रह्मदेव शर्मा (भाईजी) की भूमिका प्रेरक रही है। पर्वतीय राज्यों के लिए अर्थ की व्यवस्था विद्या भारती के सम्पन्न राज्यों से हो इसके लिए भाई जी ने योजनापूर्वक पूर्वोत्तर के पहाड़ी राज्यों के विद्यालयों के भवनों का निर्माण एवं कार्यकर्ताओं को सम्बल बनाया। जिन सम्पन्न प्रांतों ने पर्वतीय राज्यों के विकास का दायित्व लिया है, उन प्रांतों से प्रवास पर जाने का आग्रह भाई जी करते रहे।

इसके कारण पर्वतीय राज्यों को विकास एवं विस्तार के लिए एक नई दिशा भी प्राप्त हो रही है। पूर्वोत्तर शिक्षा प्रसार निधि के माध्यम से एक मजबूत आयाम भारत माता के पूर्वी हिस्से के लिए समर्पण भाई जी की प्रेरणा से ही हो रहा है।

विद्या भारती पूर्वोत्तर क्षेत्र के अन्तर्गत 9 पंजीकृत समितियाँ हैं। चुनौतियों का सामना करते हुए मिज़ोरम तथा नागालैण्ड जैसे ईसाई बहुल क्षेत्र में भी विद्यालय हैं। स्थानीय सनातन परम्पराओं, आराध्य एवं महापुरुषों को मान्यता प्रदान करते हुए विभिन्न नामों से विद्या भारती के 593 शिक्षण संस्थानों में 9780 आचार्यों द्वारा 1,67,031 विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान की जा रही है। इसमें 27 छात्रावासों में 712 बालिकाएँ और 1317 बालकों समेत कुल 2029 विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान की जा रही है। इसके अतिरिक्त 552 एकल शिक्षक विद्यालयों द्वारा असम के कोकराक्षार

तथा करबी– आंगलांग जिले में शिक्षा प्रदान की जा रही है। 9 संस्कार केन्द्र मेघालय और असम में हैं।

पूर्वोत्तर की 9 प्रांतीय समितियों के अन्तर्गत चलने वाले विद्यालयों में शिक्षा के साथ ही स्थानीय वीर, साधक, महापुरुषों, साहित्यकारों, क्रीड़ाविदों आदि के जीवन प्रसंगों, लोककथाओं, लोकगीतों, लोक नृत्यों व लोकचित्रों आदि को पाठ्यक्रम का अंग बनाकर शिक्षा दिया जाता है। वर्तमान समय में पूर्वोत्तर की वीरांगना स्वतंत्रता सेनानी व आध्यात्मिक संत पद्मविभूषित रानी माँ गाईदिन्ल्यु का जन्मशती वर्ष के अवसर पर प्रत्येक विद्यालय में रानी माँ गाईदिन्लियु को समर्पित कर मातृ सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें हजारों की संख्या में माता–बहिनों ने भाग लिया।

विद्या भारती के विद्यालय जहाँ बंगलादेश की सीमा पर अवस्थित हैं, वहीं सुदूरवर्ती पर्वतीय अंचलों में विस्तार हुआ है। पूर्व विद्यार्थियों,अभिभावकों व समाज की सहभागिता तो प्राप्त हो ही रही है साथ ही पूर्वाधारित संकीर्ण मानसिकता में परिवर्तन दिखाई देने लगा है।

विद्या भारती के द्वारा अच्छी शिक्षा व्यवस्था उपलब्ध कराने हेतु देश के विभिन्न आवासीय विद्यालयों में पूर्वोत्तर के चयनित जनजातीय विद्यार्थियों की व्यवस्था की गई है। इस हेतु श्रद्धेय कृष्णचंद गाँधी जी, श्री शंतनु रघुनाथ शेण्डे जी व वर्तमान संरक्षक मा. ब्रह्मदेव शर्मा जी के योगदान को भुला पाना असम्भव है। वर्तमान में 342 विद्यार्थियों की ऐसी संख्या है जो पूर्वोत्तर से बाहर जाकर अपने विद्यालयों में अध्ययन कर रहे हैं। उत्तर प्रदेश के हापुड़ नामक स्थान पर श्रीमती ब्रह्मादेवी सरस्वती बालिका विद्या मंदिर में बालिकाओं के लिए वनवासी छात्रावास है। इस विद्यालय में 72 बालिकाएँ नि:शुल्क अध्ययन कर रही हैं।

भारतीय शिक्षा पद्धति से शिक्षा व संस्कार की व्यवस्था एवं विस्तार के क्रम ने पूर्वोत्तर के निवासियों में पुन: नवजीवन का आत्मिक व व्यावहारिक संदेश दिया है। आगे भी इसका क्रम चलता रहेगा। अन्यान्य राष्ट्रीय संस्थान के कार्यों का सुखद प्रवाह भी एकात्म भारत और समरस भारत का स्थायित्व शिक्षा संस्कारों के माध्यम से निर्मित हो रहा है। हमें और भी आगे जाना है तब तक कि जब तक भारत से दूरस्थ मानसिकता के वातावरण को शिक्षा, सेवा व संस्कार के माध्यम से पूर्णत: एकात्म मानसिकता का शुद्ध वातावरण निर्मित नहीं होगा। चरैवेति, चरैवेति चलते जाना है, चलते जाएँगे। बाधाएँ पहले भी थीं, चुनौतियाँ पहले भी थीं, आज भी हैं। पर अतीत में हम अकेले थे आज अकेले नहीं हैं पूर्वोत्तर का युवा ही नहीं बल्कि ग्राम–कस्बों का जनजातीय एवं अन्यान्य समाज खड़ा होता दिखाई दे रहा है।

सम्पूर्ण भारत में आज पूर्वोत्तर का सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक परिवर्तन से उत्साह दिखाई देता है। इस परिवर्तन में अन्यान्य संगठनों के साथ विद्या भारती की अहम् भूमिका है। फिर भी अभी ऐसा क्षेत्र है जहाँ के निवासियों की अवस्था देखकर शरीर के रौंगटे खड़े हो जाते हैं। गुस्सा और ग्लानि होती है कि आज आधुनिक युग में मानव जर्जर जीवन जी रहा है। ऐसा क्षेत्र हैं नागलैंड का किफिरे, मोन, तुएनसांग, लोंगलेंग और फेक जिला ये म्याँनमार की सीमा से जुड़ते हैं। ऐसा क्षेत्र है मिज़ोरम राज्य का बंगलादेश की सीमा से जुड़े अनेक ग्राम; अरुणाचल की चीन सीमा से जुड़े अनेक ग्राम। बोमडीला में विद्या भारती का विद्यालय इस वर्ष शुरू हो गया है। भवन निर्माण का कार्य भी हो रहा है।

पूर्वोत्तर भारत और उसके निवासियों की वीर गाथा हमें संदेश देती है कि हमारे क्षेत्र का भी भारत की स्वतंत्रता आन्दोलन में अतुलनीय योगदान है। अनेक महापुरुषों ने इस आन्दोलन में अपना सब कुछ समर्पित कर बलिदान दिया है, हँसते–हँसते फाँसी को चूमा है। वीर लाचित बरफुकन की वीरोचित ओजस्वी बाणी–'देश से बढ़कर मामा नहीं' की कथा इस प्रकार है कि अपने ही देश विरोधी मामा के सिर को काट डाला था। वीरांगना रानी माँ गाईदिन्लयु का वह संदेश ''मेरा जीवन ही मेरा सन्देश और मैंने अपना जीवन भारत की एकता के लिए ही अर्पित किया है। ऐसे अनेक संत–महात्माओं एवं तीर्थ स्थलों से युक्त हमारा पूर्वोत्तर बार–बार आग्रह करता है कि हमें जानो, हमें पहचानो, हमें समझो–हम भी उसी पथ के पथिक हैं जो कहता है भारत माता की जय।

आइए इस साकारात्मक वातावरण में हम अपनी सहयोग एवं सहभागिता की गति में तीव्रता लाएँ, चलें हम पूर्वोत्तर की ओर और चलते जाएँ उस छोर तक जहाँ अखंड भारत की सीमाएँ बार–बार बाहें फैलाकर आलिंगन करने के लिए आतुर हैं।

– **पंकज सिन्हा**, पूर्व प्रधानाचार्य
हाफलाँग प्रकल्प व संगठन मंत्री,
विद्या भारती नागालैंड, डीमापुर

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान साधारण सभा बैठक कुरुक्षेत्र

(15, 16, 17 मार्च 2019)

प्रतिवेदन

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान की साधारण सभा दिनांक 15/03/2019 को पूर्वाह्न 11:30 बजे से प्रारम्भ होकर 17/03/2019 तक 13 सत्रों में माधव सभा कक्ष, गीता निकेतन आवासीय विद्यालय कुरुक्षेत्र में सम्पन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता शिक्षा संस्थान के अध्यक्ष मा. गोविन्द प्रसाद शर्मा ने की। महामंत्री डॉ. ललित बिहारी गोस्वामी ने संस्थान की 2018-2019 की प्रगति सम्बन्धी रिपोर्ट प्रस्तुत की।

ग्यारह क्षेत्रों में आयोजित विद्वत् परिषद् गोष्ठियों, शोध, क्रियाशोध की कार्यशालाओं की तथा संस्कृति शिक्षा सम्बंधी कार्यशालाओं की आख्या (रिपोर्ट) प्रस्तुत की गई। पंजाब प्रांत में आयोजित अनिवासी भारतीय सम्मेलन, पंजाब प्रांत प्रचार विभाग की रिपोर्ट पी.पी.टी. द्वारा प्रस्तुत की गई। विद्या भारती की प्रांतीय समिति हरियाणा द्वारा राष्ट्र व राज्यस्तरीय पुरस्कार प्राप्त शिक्षकों का सम्मान समारोह, शिक्षाविद् सम्मेलन मेरठ तथा दिनांक 17 फरवरी को राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में रहने वाले बृज प्रांत के पूर्व छात्रों के सम्मेलन की जानकारी पी.पी.टी. द्वारा प्रस्तुत की गई। पूर्वोत्तर जनजाति शिक्षा समिति द्वारा 'श्रद्धेय कृष्णचंद गाँधी' की स्मृति में हर वर्ष दिए जाने वाले पुरस्कार से इस वर्ष श्री फाली बोडो व उपेन राभाहाकाचम को पुरस्कृत किया गया। पूर्वोत्तर क्षेत्र का वृत्त श्री ब्रह्माजीराव द्वारा व पूर्व क्षेत्र का वृत्त डॉ. सरोज हाती द्वारा प्रस्तुत किया गया जिसमें शिक्षा विकास समिति उड़ीसा द्वारा अपने विद्यालयों के किए जा रहे क्रियाशोध की प्रेरक जानकारी पी.पी.टी. द्वारा प्रस्तुत की गई।

तेलंगाना के पूर्व छात्रों के कार्यवृत्तों का वृत्त भी पी.पी.टी. द्वारा प्रस्तुत किया गया। 2018-2019 का अखिल भारतीय ज्ञान-विज्ञान मेले के वृत्त के साथ '2019-2020 सत्र से इस मेले का नाम अखिल भारतीय गणित विज्ञान मेला रहेगा।' जानकारी दी गई।

सामाजिक समरसता की दृष्टि से कुंभ दर्शन कार्यक्रमों में एकल विद्यालय व संस्कार केन्द्र के भैया बहिनों तथा अभिभावकों की प्रतिभा का रंगमंचीय प्रदर्शन की झाँकी भी पूर्वी उत्तर प्रदेश के क्षेत्रीय संगठन मंत्री श्री डोमेश्वर साहू द्वारा प्रस्तुत किया गया। पश्चिम क्षेत्र में देवगिरि प्रांत द्वारा अभिभावक प्रशिक्षण, आचार्य प्रशिक्षण उसमें वैदिक गणित विभाग द्वारा सहभागिता की जानकारी भी पी.पी.टी. द्वारा प्रस्तुत की गई। ग्राम्य जीवन की अनुभूति हेतु मध्य भारत प्रांत द्वारा 'अनुभूति शिविर' के आयोजन का वृत्त, बैतूल वृत्त व भाऊसाहेब भुस्कुटे सेवान्यास के अन्तर्गत चल रहे कृषि विज्ञान केन्द्र का वृत्त भी प्रस्तुत किया गया। विद्यार्थियों के द्वारा जल संरक्षण करने हेतु जनजागरण अभियान का वृत्त पी.पी.टी. द्वारा प्रस्तुत किया गया। चित्तौड़ प्रांत में मातृ सम्मेलन तथा जोधपुर प्रांत में जोधपुर महानगर में घरों में तुलसी का पौधा लगाने व प्रकृति संरक्षण तथा पक्षियों को जल रखने आदि के सर्वेक्षण का वृत्त प्रस्तुत किया गया। सत्र के अंत में समर्थ शिशु श्री रामकथा के माध्यम से श्रेष्ठ नवीन पीढ़ी के निर्माण व नमूनारूपी शिशु वाटिका की संकल्पना की प्रस्तुति की गई।

दो पुस्तकों -1. हम सृजनकर्ता हैं या निर्माणकर्त्ता 2. पंचकोशात्मक विकास के पथ पर का विमोचन भी संघ के अखिल भारतीय सह सरकार्यवाह श्री दत्तात्रेय होसबोले व विद्या भारती के वरिष्ठ अधिकारियों के द्वारा किया गया।

श्री रोहित द्विवेदी द्वारा कौशल विकास के माध्यम से भारत के युवाओं के भविष्य के विकास की योजना की जानकारी दी गई। इसे विद्यालयों में शुरू करने की आवश्यकता तथा इसके महत्त्व व तत्सम्बंधी बातों की जानकारी दी।

श्री एल. सुधाकर रेड्डी ने प्रचार विभाग के महत्त्व को बताते हुए विद्या भारती में अभी तक चल रहे कार्यों की जानकारी प्रस्तुत की।

अखिल भारतीय उपाध्यक्ष डी. रामकृष्ण राव द्वारा 'प्रकल्प', उसकी आवश्यकता, स्वरूप, निर्माण की पद्धति, क्रियान्वयन तथा सावधानियों की जानकारी साधारण सभा के प्रतिनिधियों को दी।

तीनों ही विषय पी.पी.टी. के माध्यम से प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किए गए।

श्रद्देय लज्जाराम तोमर के शिक्षा विषयक लेखों का संग्रह 'शैक्षिक चिन्तन'

पुस्तक का विमोचन मा. दत्तात्रेय होसबाले जी ने किया। मा. काशीपति जी ने पूर्व प्रस्तुत 12 बिन्दुओं के पत्रक तथा पूर्ण जिला केन्द्र के पत्रक के आधार पर आगामी तीन वर्षों में किए जाने वाले कार्य पर चर्चा की व संस्कृति शिक्षा संस्थान द्वारा प्रकाशित पुस्तकें 'विश्वास की विजय'; 'प्रकृति माँ'; 'जन्मदिन का उपहार'; 'विज्ञान का अभ्यास अपने आसपास'; 'सर्वांगी शिक्षण'; इन पुस्तकों का विमोचन किया गया।

दिनांक 16/03/2019 के आठवें सत्र में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सरकार्यवाह मा. दत्तात्रेय होसबोले के उद्बोधन का सौभाग्य प्राप्त हुआ। शिशु वाटिका परिषद्, मानक परिषद्, शोध, संगीत, क्रिया शोध कार्यशाला, प्रशिक्षण योजना, विद्या भारती में खेल विभाग की उपलब्धियाँ व आगामी कार्ययोजना, उत्तराखंड में अन्य विद्यालय सम्पर्क, महाकौशल में जबलपुर महानगर में सम्पर्क योजना तथा प्रारम्भिक शिक्षा परिषद् की कार्य योजना के सम्बंध में चर्चा की गई।

गटश: समूह चर्चा में अपने दायित्वों के बारे में व्यापक चर्चा की गई। कोषाध्यक्ष मा. जैनपाल जैन द्वारा वर्ष 2017-18 का आय-व्यय का प्रतिवेदन व सत्र 2019-2020 का बजट प्रस्तुत किया गया। जो व्यापक विचार विमर्श के बाद सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ। कोषाध्यक्ष ने विद्या भारती में पंजीकृत समितियों के लिए आवश्यक वैधानिक कार्यों, आर्थिक क्षेत्र हेतु बने नये नियमों आदि की विस्तृत जानकारी सदन में प्रस्तुत की तथा सदस्यों की जिज्ञासाओं का समाधान भी किया।

इस सत्र के उत्तरार्ध में डॉ. मधुश्री सावजी ने विद्यार्थियों व अभिभावकों में हो रहे मनोसामाजिक परिवर्तन के बारे में चर्चा की। उन्होंने सदन से आग्रह किया कि बदलते हुए परिवेश में छात्रों व अभिभावकों से निरन्तर संवाद की बहुत आवश्यकता है, उनके समुपदेशन (Counselling) की आवश्यकता है। इस ओर विद्यालयों में विशेष ध्यान देने की आवश्यकता पर उन्होंने बल दिया। संस्कृति शिक्षा संस्थान का वृत्त संस्थान के निदेशक श्री रामेन्द्र सिंह ने प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि इस सत्र में संस्कृति ज्ञान परीक्षा में हिन्दी माध्यम से परीक्षा परीक्षा देने वाले छात्रों की संख्या में 1,59,626 तथा अन्य भाषाओं के माध्यम से परीक्षा देने वाले छात्रों की संख्या में 70567 की वृद्धि हुई है। उन्होंने यह भी बताया कि गत वर्ष तक संस्कृति ज्ञान प्रश्नमंच आदि कार्यक्रम विज्ञान मेले के साथ सम्पन्न होते थे, परन्तु इस वर्ष यह आयोजन 'संस्कृति महोत्सव' के नाम से दिनांक 23 से 25 नवम्बर 2018 को कुरुक्षेत्र में सम्पन्न हुआ। उन्होंने जानकारी दी कि आगामी सत्र हेतु नियमावली की जानकारी शीघ्र भेजी जाएगी। सत्र 2019-2020 में संस्कृति महोत्सव कुरुक्षेत्र में दिनांक 10 से 12 नवम्बर 2019 को आयोजित होगा।

मा. गोविन्द प्रसाद शर्मा ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में जानकारी दी कि यह वर्ष नए अध्यक्ष के निर्वाचन का अवसर है और यह महत्त्वपूर्ण दायित्व का विषय है, मेरा कार्यकाल तीन बार हो गया है। अत: नए अध्यक्ष के चुनाव में योग्य व्यक्ति का चुनाव हो तथा उन्होंने वर्तमान कार्यकारिणी को भंग करने की घोषणा की। इसके पश्चात् संस्थान के संविधान के नियमानुसार नवीन अध्यक्ष का चुनाव हुआ।

निर्वाचन अधिकारी श्री भरतराम कुम्हार ने अध्यक्ष पद पर श्री दूसि रामकृष्ण राव के सर्वसम्मति से निर्वाचित होने की घोषणा की।

उक्त घोषणा के पश्चात् श्री अवनीश भटनागर ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष महोदय को मंच पर सादर आमंत्रित कर आसंदी पर विराजमान किया। निर्वाचन पदाधिकारी श्री भरत राम कुम्हार ने नवीन अध्यक्ष श्री डी. रामकृष्ण राव जी को श्रीफल तथा पुष्प देकर स्वागत किया।

समापन सत्र में विद्या भारती के संरक्षक मा. ब्रह्मदेव शर्मा (भाई जी), राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सरकार्यवाह मा. दत्तात्रेय होसबाले, नवनिर्वाचित अध्यक्ष माननीय दूसि रामकृष्ण राव, निवर्तमान अध्यक्ष आदरणीय डॉ. गोविन्द प्रसाद शर्मा मंचासीन थे। मा. प्रकाशचन्द्र जी ने विद्याभारती उच्च शिक्षा संस्थान के पदाधिकारियों का परिचय सदन से करवाया।

अध्यक्ष महोदय ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि शिक्षा क्षेत्र में मुख्यत: दो काम ही सतत् चलते हैं सीखना और सिखाना। निवर्तमान अध्यक्ष महोदय का मार्गदर्शन और आप सभी के सहयोग से मैं भी इस गुरुतर दायित्व को निर्वहन करना सीखूँगा। हमारे कार्य का केन्द्र विद्यालय है और उसका केन्द्र आचार्य है। उनके माध्यम से हम समाज में वांछनीय परिवर्तन कर सकते हैं। इसलिए उनकी गुणवत्ता बढ़े, इस पर हमारा ध्यान रहे। कार्य में युवा व महिलाएँ जुड़ें। व्यावसायिक शिक्षा और जीवन जीने की शिक्षा पर हमारा ध्यान केन्द्रित हो। हमारे विद्यालय आदर्श बनें। हमारे प्रयोगों को अन्य विद्यालय भी स्वीकार करें तब धीरे-धीरे शिक्षा के वर्तमान स्वरूप में परिवर्तन करने में सफल होंगे।

मा. अध्यक्ष महोदय ने कार्यकारिणी

समिति के पदाधिकारियों की घोषणा की, जो इस प्रकार हैं :-

क्र.	नाम	दायित्व
1.	श्री दिलीप बेतकेकर	उपाध्यक्ष
2.	श्री राजेन्द्र प्रसाद खेतान	उपाध्यक्ष
3.	डॉ. रमा मिश्रा	उपाध्यक्ष
4.	डॉ. रवीन्द्र कान्हेरे	उपाध्यक्ष
5.	डॉ. तामो मिबांग	उपाध्यक्ष
6.	श्री जे.एम.काशीपति	संगठन मंत्री
7.	श्री यतीन्द्र कुमार शर्मा	सहसंगठन मंत्री
8.	श्री गोविन्द चन्द्र महंत	सह संगठन मंत्री
9.	श्री श्रीराम आरावकर	महामंत्री
10.	श्री जैनपाल जैन	कोषाध्यक्ष
11.	श्री अवनीश भटनागर	मंत्री
12.	श्री शिव कुमार	मंत्री
13.	डॉ. मधुश्री संजीव सावजी	मंत्री
14.	श्री ब्रह्मा जी राव	मंत्री
15.	श्री किशोरचन्द्र मोहंती	मंत्री
16.	श्री एन.सी.टी. राजगोपाल	सह-मंत्री
17.	प्रो. एन. राजलक्ष्मी	सह-मंत्री
18.	डॉ. कमल किशोर सिन्हा	सह-मंत्री
19.	डॉ. प्रकाश बरतूनिया	सह-मंत्री
20.	डॉ. गोविन्द प्रसाद शर्मा	सदस्य
21.	डॉ. ललित बिहारी गोस्वामी	सदस्य
22.	श्री रवीन्द्र चामड़िया	सदस्य

माननीय अध्यक्ष महोदय ने कुछ नवीन दायित्वों की तथा कुछ कार्यकर्ताओं के दायित्व परिवर्तन की घोषणा भी की, जो इस प्रकार है :-

अध्यक्ष के दायित्व मुक्त होने के पश्चात् डॉ. गोविन्द प्रसाद शर्मा जी -विद्वत् परिषद् के कार्य की ओर विशेष ध्यान देंगे।

महामंत्री के दायित्व मुक्त होने के पश्चात् डॉ. ललित बिहारी गोस्वामी जी- संस्कृति शिक्षा संस्थान की ओर विशेष ध्यान देंगे।

तदनन्तर उन्होंने क्षेत्रीय व प्रान्तों के संगठन मंत्रियों के क्षेत्रों व दायित्वों में परिवर्तन की घोषणा की -

पदाधिकारी का नाम	वर्तमान दायित्व व क्षेत्र	परिवर्तित दायित्व व क्षेत्र
श्री हेमचन्द्र जी	राष्ट्रीय मंत्री, क्षेत्रीय संगठन मंत्री उत्तरक्षेत्र व प्रभारी पश्चिम उ.प्र.	संगठन मंत्री,पूर्वी उत्तरप्रदेश क्षेत्र
श्री ख्यालीराम जी	कार्यकारिणी सदस्य	संगठन मंत्री, उत्तरपूर्व क्षेत्र
श्री डोमेश्वर साहू जी	संगठन मंत्री पूर्वी उत्तर प्रदेश	संगठन मंत्री, पश्चिमी उत्तरप्रदेश
श्री दिवाकर घोष जी	संगठन मंत्री, उत्तर पूर्व	संगठन मंत्री, पूर्व क्षेत्र
श्री विजय नड्डा जी	सह संगठन मंत्री उत्तर क्षेत्र	संगठन मंत्री उत्तरक्षेत्र व पंजाब प्रान्त के संगठन मंत्री
श्री बाल किशन जी	प्रांतीय संगठन मंत्री, हरियाणा	सहसंगठन मंत्री उत्तर क्षेत्र
डॉ. पवन तिवारी जी	प्रांतीय संगठन मंत्री, महाकौशल	सहसंगठन मंत्री पूर्वोत्तर क्षेत्र
श्री जी. आर. जगदीश	प्रांतीय संगठन मंत्री, कर्नाटक	सहसंगठन मंत्री दक्षिणमध्य क्षेत्र
श्री निरंजन शर्मा	सहसंगठन मंत्री मध्यक्षेत्र	वैदिक विद्यापीठम् का कार्य व मध्यक्षेत्र के कार्यकारिणी समिति के सदस्य, केन्द्र-चिचोटकुटी
श्री शशिकांत फड़के	सह संगठन मंत्री उत्तरपूर्व	ग्रामीण क्षेत्र की शिक्षा सहसंयोजक मध्यक्षेत्रकार्यकारिणी सदस्य-भोपाल
श्री विजय गणेश कुलकर्णी		पूर्व क्षेत्र कार्यकारिणी सदस्य-हावड़ा
श्री श्रीकांत देशपाण्डे		पश्चिम क्षेत्र के कार्यकारिणी सदस्य
श्री श्याम लाल		पश्चिम उत्तर प्रदेश क्षेत्र कार्यकारिणी सदस्य
श्री सदाशिव उपाले	प्रांतीय संगठन मंत्री पश्चिम महाराष्ट्र	महाराष्ट्र के चारों प्रांत-विदर्भ, देवगिरि पश्चिम महाराष्ट्र व कोंकण तथा गोवा के शिशु वाटिका प्रमुख रहेंगे।
श्री रवि कुमार	सह संगठन मंत्री हरियाणा	संगठन मंत्री, हरियाणा

श्री योगेन्द्र सिंह	सह संगठन मंत्री द. असम	संगठन मंत्री दक्षिण असम
श्री रमाकांत महंत	सह संगठन मंत्री ओड़िसा	संगठन मंत्री ओड़िसा
श्री पाका राजमौली	क्षेत्रीय मंत्री दक्षिण मध्य	क्षेत्रीय उपाध्यक्ष दक्षिण मध्य
श्री ए. लक्ष्मण राव	क्षेत्रीय सह मंत्री दक्षिण मध्य	क्षेत्रीय मंत्री दक्षिण मध्य

तथा अखिल भारतीय विषय संयोजकों व सहसंयोजकों की घोषणा की। इस प्रकार हैं :-

क्र.	**विषय**	**संयोजक**	**सह संयोजक**
1.	शारीरिक शिक्षा तथा संस्कृति बोध परियोजना	श्री दुर्ग सिंह राजपुरोहित	
2.	योग शिक्षा	श्री के. स्थाणुमूर्ति	श्री हरीश श्रीवास्तव
3.	संस्कृत शिक्षा	डॉ. धीरेन्द्र झा	
4.	संगीत शिक्षा	श्री कमलेश पंत	श्री पुष्पेन्द्र सिंह
5.	नैतिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा	श्री सियाराम गुप्ता	
6.	खेलकूद	श्री एम. वी. कुट्टी	श्री मुखतेज सिंह बदेशा श्री कृपाशंकर शर्मा
7.	प्रशिक्षण	श्री राजेन्द्र सिंह बघेल	श्री अशोक पण्डा
8.	शोध	डॉ. दीप्तांशु भास्कर	
9.	शिशु वाटिका	सुश्री आशा बहन थानकी	सुश्री जेना बेन जोशी
10.	प्रारम्भिक शिक्षा	श्री रामकिशोर श्रीवास्तव	श्री खगेश्वर दास
11.	बालिका शिक्षा	सुश्री रेखा चुड़ासमा	सुश्री प्रमिला शर्मा
12.	ग्रामीण क्षेत्र की शिक्षा	श्री कैलाश चन्द्र मिश्र	श्री शशिकांत फड़के
13.	जनजाति क्षेत्र की शिक्षा	श्री सुहास देशपाण्डे	श्री बुधपाल सिंह ठाकुर
14.	सेवा क्षेत्र की शिक्षा	श्री रामस्वरूप	
15.	विज्ञान	श्री रामप्रसाद स्वामी	
16.	वैदिक गणित	श्री देवेन्द्र राव देशमुख	श्री प्रसन्न कुमार साहू
17.	मानक परिषद्	श्री राकेश शर्मा	
18.	कौशल विकास	श्री रोहित द्विवेदी	

माननीय दत्तात्रेय जी ने अपने संक्षिप्त मार्गदर्शन में बताया कि विद्या भारती एक जीवंत संस्थान है। हमें विकास करना है, आगे बढ़ना है पर हमारी संस्कृति जो नित्य नूतन चिर-पुरातन है, इसके आधार पर आगे बढ़ना है। हमें शाश्वत को छोड़ना नहीं है परन्तु देश-काल परिस्थिति के अनुसार जो परिवर्तन आवश्यक व उचित है, उन्हें भी करना भी है।

उन्होंने बताया कि महर्षि अरविन्द ने इस सम्बंध में तीन बातें कही -

1. अपनी प्राचीन परम्परा एवं ज्ञान-भंडार को फिर सबके सामने लाना चाहिए।
2. उन पुरानी बातों को, नए संदर्भ में उनमें निहित जीवन मूल्यों को, वर्तमान युग के अनुकूल पुनर्परिभाषित करना चाहिए।
3. अभी तक जिस ज्ञान को आप व्याख्यायित करते हैं, उस ज्ञान परम्परा को वर्तमान की आवश्यकतानुसार सँजोना है।

इन तीनों ही कार्यों को विद्या भारती को करना है। सभी स्तर पर चिंतन की प्रक्रिया चलती रहनी चाहिए। हमारा कार्य परिणाममूलक होना चाहिए। कार्यक्रम केवल प्रदर्शन के लिए नहीं होना चाहिए। समाज के सहयोग से समाज में परिवर्तन लाने के लिए व समाज के विकास के लिए हमें इस कार्य को करना है।

अपने उद्‌बोधन के अंत में मा. दत्तात्रेय होसबोले जी ने नई टोली को कार्य को सुचारु रूप से आगे बढ़ाने के लिए शुभकामनाएँ दीं।

वंदेमातरम् के सामूहिक गायन के साथ बैठक समाप्त हुई।

विद्यामंदिर एवं समाज समर्पित प्रधानाचार्य समय की माँग

आज समाज में छात्र के लिए गला-काट प्रतियोगिता, संस्कार से परे विद्यालयों का समुचित व्यापार जैसा व्यवहार सभी के लिए सोचनीय विषय बना हुआ है इस सब को समुचित स्वरूप कौन दे सकता है इस विषय पर चिन्तन प्रस्तुत कर रहे हैं उत्तरक्षेत्र के संगठन मंत्री **श्री विजय कुमार नड्डा**

बदलते समय के साथ प्रत्येक जीवनमान इकाई को बदलना पड़ता है। एक शाश्वत सत्य है कि समय के गतिमान प्रवाह के साथ कदम मिलाकर जो नहीं चल पाता वह इस दुनिया में पीछे रह जाता है। इसको यूँ कहा जा सकता है कि समय उसको खेल से बाहर कर देता है। आज की परिस्थिति में समय के साथ कदम ताल करने वाले प्रधानाचार्य को सबसे अधिक परिश्रम करना पड़ता है। आज का युग धर्म है कि हमें अपने कर्मक्षेत्र में अपने परिश्रम, प्रतिभा और परिणाम के माध्यम से अपनी उपस्थिति दर्ज करानी ही होगी। क्योंकि आज का युवा प्रधानाचार्य पैकेज भी अच्छा चाहता है (इस में कोई गलत भी नहीं) और सम्मान भी प्राचीन गुरु का चाहता है। इस सब में दुःखद पहलू यह कि युवा प्रधानाचार्यों में छात्र, समाज व राष्ट्र समर्पित जीवन जीने की मानसिक तैयारी और सिद्धता बहुत कम देखी जा रही है। शिक्षा क्षेत्र अपने गत तीन वर्षो के अल्प अनुभव के आधार पर निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि युवा पीढ़ी के प्रधानाचार्य को छात्रों एवं समाज के मन में सम्मान का स्थान पाने के लिए बहुत परिश्रम करना होगा। इसके लिए उसे अपनी दृष्टि पूर्णतः बदलनी होगी। प्रधानाचार्य का कार्य अत्यंत श्रेष्ठ, महत्त्वपूर्ण और नौकरी से बहुत ऊपर है। पद, प्रतिष्ठा व पैसा उसके लिए समर्पित जीवन का सहज परिणाम होने वाला है। इसके विपरीत इन सब के पीछे दौड़ने से पद और पैसा तो शायद मिल भी जाए, लेकिन प्रतिष्ठा तो उसके लिए दिवास्वप्न मात्र बन कर रह जाएगी। प्रधानाचार्य को समझना होगा कि राष्ट्र का भावी भविष्य उसके हाथों से हो कर निकल रहा है। प्रधानाचार्य को एक-एक छात्र को तराशने, उसके अंदर के महामानव को प्रकट करने में सक्षम राष्ट्र शिल्पी आचार्य भैया व दीदियों का नेतृत्व करना होगा। आज के सामाजिक एवं आर्थिक परिवेश में छात्र एवं समाज समर्पित जीवन जीने वाले आचार्य भैया/दीदियों का समूह निर्माण करना प्रधानाचार्य के लिए सबसे बड़ी चुनौती होती है। यह सब करने के लिए पहल उसे स्वयं से करनी होती है। प्रधानाचार्य को नौकरी की आत्मघाती मानसिकता से बचना होगा। अँग्रेजों के समय पनपी यह नौकरी की मानसिकता अत्यंत विचित्र है। हम अपने घर में मजदूर लगाते हैं तो उससे बहुत कुछ चाहते हैं और हम कहीं काम करते हैं तो हमारी दृष्टि और तर्क पूर्णतः बदल जाते हैं। नौकरी की मानसिकता में दोनों कर्मचारी और मालिक एक दूसरे को चकमा देने में दिमाग लगाते हैं। वास्तव में अँग्रेजों के समय क्योंकि हमें अँग्रेजों की नौकरी करनी पड़ती थी और अँग्रेज से लोग नफरत करते थे इसीलिए उनके प्रति हमारी मानसिकता विकृत होना स्वाभाविक ही था। उस स्थिति में हम अँग्रेजों को छकाने और अँग्रेज हमारा खून चूसने पर स्वयं को शाबाशी देता था। हमें यह स्वीकार करना होगा कि स्वतंत्रता के इतने वर्षो बाद भी इन नौकरी की मानसिकता से ऊपर न उठ पाने से हमारा बहुत अहित हुआ है। नौकरी में व्यक्ति अपनी शारीरिक, मानसिक व बौद्धिक प्रतिभा का सीमित (जितने से कम से कम में काम चल जाए) ही उपयोग करता है। इस सोच का उस व्यक्ति की प्रगति पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। ऐसा व्यक्ति जीवन भर भाग्य, भगवान और मालिक के कोसने में ही अपनी प्रतिभा का उपयोग करता है। अपने पिछड़ने के लिए सारी कायनात को दोषी ठहराता रहता है। दुर्भाग्य से आजादी के बाद भी शासन और नियोक्ता के प्रति हमारी मानसिकता नहीं बदली है। हमारे देश में कम्युनिस्टों ने इस सोच को और हवा पानी दिया। सरकारी नौकरी लगते ही व्यक्ति अपने कर्तव्य को भूल कर अधिकारों की पिटारी खोल कर बैठ जाता है। परिणामस्वरूप धीरे-धीरे सरकारी क्षेत्र सब जगह घाटे में जाने लगता है। मजबूर होकर सरकार को सब जगह से अपने हाथ खींचने पड़े।

कम्युनिस्टों द्वारा प्रेरित अधिकारों की रट लगाने वाला सामान्य व्यक्ति बेचारा फिर निजी क्षेत्र में शोषण की भेंट चढ़ जाता है। स्थिति न्यूनाधिक 'न खुदा ही मिला न बिसाले सनम... वाली ही हुई। कर्मचारी और नियोक्ता दोनों को समग्रता से सोचना होगा। दोनों को समझना होगा कि एक दूसरे के बिना दोनों अधूरे हैं। युग परिवर्तनकारी प्रधानाचार्य बनने में सहायक बिंदु :- वैसे तो सफल प्रधानाचार्य बनने के लिए एक लम्बी साधना की आवश्यकता होती है। इसके लिए कोई शॉर्टकट नहीं हो सकता। तो भी कुछ बिन्दु इसमें सहायक अवश्य हो सकते हैं। प्रधानाचार्य अपनी साधना का प्रारम्भ विद्यालय में सबसे पहले आना और सबसे बाद में जाने से कर सकता है। सभी आचार्य भैया/दीदियों तथा अन्य सहयोगियों कर्मचारियों को टीम के रूप में कार्य करने की प्रेरणा दे। उसको केन्द्र बिन्दु बनना होगा। उसे शिशु/विद्या मंदिर परिवार के प्रमुख के रूप में सभी का मन जीतना होता है। सफल प्रधानाचार्य बनने के लिए सहयोगी टीम के मन में सम्मानमिश्रित भय रहना आवश्यक है। प्रत्येक छात्र के जीवन में रुचि लेना और अभिभावकों से निरन्तर सम्पर्क में रहना प्रधानाचार्य के कार्य को बल प्रदान करता है। शिशु/ विद्या मंदिर एवं छात्र विकास के लिए निरन्तर प्रयासरत रहना, नए-नए प्रयोग करते रहना सफल प्रधानाचार्य के लिए अत्यंत आवश्यक है। शिशु/विद्या मंदिर को समाज जागरण का एवं सामाजिक चेतना का केन्द्र बनना आवश्यक होता है। अपनी प्रशंसा स्वयं करने से बचते हुए अपने कार्यों को बोलने देना चाहिए। प्रधानाचार्य बहुविध कार्यों के योग्य सम्पादन के लिए उसे कल्पक, योजक एवं कुशल प्रशासक बनना होता है। दैनिक, सप्ताहिक एवं मासिक कार्यों की सूची बनाकर उनके सम्पादन पर ध्यान केन्द्रित करना होता है। विद्यालय के कलेण्डर पर नजर जमाए रखनी पड़ती है। समाज से योग्य प्रतिभा सम्पन्न एवं प्रतिष्ठित लोगों को छात्रों के समक्ष निरन्तर लाते रहने से एक ओर जहाँ छात्रों के समुचित विकास को बल मिलता है वहीं विद्यालय के लिए सहयोगी वर्ग खड़ा होता है। प्रबंध समिति से तालमेल बैठाना प्रधानाचार्य के कार्य की कुशलता का परिचायक होता है।

लक्ष्य समर्पित जीवन सफल प्रधानाचार्य के लिए पूर्व शर्त लक्ष्य समर्पित व्यक्ति के लिए कुछ भी असम्भव नहीं होता है। संघ संस्थापक पूज्य डॉक्टर साहब हेडगेवार जी कहते थे कि हम महान लक्ष्य को समर्पित लोग साधारण लोग हैं। महान लक्ष्य कब हम में महानता के अंश उत्पन्न कर देता है हमें पता ही नहीं चलता है। यह सत्य भी हमें स्वीकारना होगा कि हमारे समाज का अन्त:करण में सेवा परमोधर्म: की धारणा अत्यंत गहरी बैठी है। समाज समर्पित जीवन जीने वाले आचार्य व प्रधानाचार्य आज भी समाज जीवन को दिशा देने में सक्षम हैं और दिशा भी दे रहे हैं। विद्या भारती की पाठशाला से निकले सैकड़ों प्रधानाचार्य आज राष्ट्र एवं समाज को दिशा दे रहे हैं। विद्या भारती के क्षेत्र से भी बाहर अनेक प्रधानाचार्य समाज और राष्ट्र जीवन के लिए श्रद्धा, आशा व विश्वास का केन्द्र बने हुए हैं। यह सब उनकी लम्बी साधना के फलस्वरूप हो सका है। ऐसा विराट व्यक्तित्व पाने के लिए प्रधानाचार्य को अपने कार्य को सही अर्थों में अक्षरश: पूजा मानना होगा। एक बार दृष्टि बदली तो फिर सारा परिदृश्य बदल सकता है। किसी ने ठीक ही कहा है ''नजरें बदलीं तो नजारे बदल गए। किश्ती बदली तो किनारे बदल गए। प्राचीन काल में हमारे प्रधानाचार्य केवल विद्यालय ही नहीं बल्कि पूरे समाज के प्रमुख व आदरणीय हुआ करते थे। हमें यह भी समझना होगा कि यह आदर उनके विराट व्यक्तित्व के कारण ही समाज में प्राप्त था। राजा भी उनसे गुरु मानकर समय लेकर मिला करते थे। लोग घर परिवार नौकरी से लेकर जीवन की सब समस्याओं के हल के लिए प्रधानाचार्य की ओर देखते थे। आज प्रधानाचार्य को वह सम्मान करना ही होगा। केवल अपने लिए नहीं बल्कि समाज के स्वरूप एवं दीर्घ जीवन के लिए यह अत्यंत आवश्यक है। वर्तमान में समाज में जितनी भी समस्याएँ या परेशानियाँ हैं जैसे बलात्कार, भ्रष्टाचार, टूटते परिवार या तेजी से फैलते वृद्धाश्रम ये सब माँ की गोद, अध्यापक की कक्षा या संन्यासी की ध्यान साधना की असफलता ही तो है। इन सबको ठीक करने के लिए शुरुआत हमारे आचार्य को छात्र की अँगुली पकड़ कर जीवन के नए पाठ की नई पद्धति से पढ़ाने से करनी होगी। क्योंकि माँ, संन्यासी, राजनेता से लेकर जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अच्छा या खराब प्रदर्शन करने वाले लोग हमारे अध्यापकों के व्यक्तित्व के विस्तार या प्रकटीकरण मात्र ही तो हैं।

– सर्वहितकारी शिक्षा समिति, पंजाब
विद्या धाम जालंधर, पंजाब
मो. 9915714310

विद्या भारती मानक परिषद् "माप" की संकल्पना

विद्या अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान देश का सबसे बड़ा गैर सरकारी शिक्षा क्षेत्र का संगठन है। बृहद स्तर और भौगोलिक भिन्नता के कारण विभिन्न समितियों के माध्यम से सरस्वती शिशु मंदिर, विद्या मंदिर, आदर्श विद्या मंदिर, गीता विद्या मंदिर, सर्वहितकारी विद्या मंदिर, शारदा शिशु निकेतन, शंकरदेव शिशु निकेतन आदि अनेक नामों से भारतीय शिक्षा की संकल्पना को साकार करने हेतु चलते हैं। विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान उपरोक्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिए 1952 से ही प्रयासरत है। विद्या भारती की संगठनात्मक संरचना बहुत ही मजबूत है। विद्यालय, संकुल, जिला, प्रांत व क्षेत्र स्तर पर दायित्ववान कार्यकर्ता इस राष्ट्र निर्माण के कार्य में कार्यरत हैं। विद्या भारती के इस कार्य में प्रतिबद्ध एवं निष्ठावान आचार्य कार्यकर्ता भाव से लगे हुए हैं। हजारों पूर्णकालिक कार्यरत दिन-रात शिक्षा सम्बंधी विचार का चिंतन-मनन करते हैं। समाज में विद्या भारती की प्रतिष्ठा बढ़ रही है। व्यापक जनाधार के कारण समाज का सहयोग भी प्राप्त हो रहा है। बुनियादी ढाँचा मजबूत बनाया गया है।

एसएमएफ तंत्र से मूल्यांकन की आवश्यकता क्यों?

विद्या भारती संगठन के निरंतर बढ़ते स्वरूप से पूरे संगठन के द्वारा विचार किया गया कि एक निगरानी प्रणाली विकसित किया जाए जिससे विद्यालयों में सर्वेक्षण व मूल्यांकन किया जाए इस विचार को साकार करने के लिए विद्यालय का शासन, प्रशासन, प्रबंधन एवं नेतृत्व का पर्यवेक्षण कर अवलोकन किया जाए। गुणवत्ता बनाए रखने के लिए यह जरूरी है।

सन् 2016 से ही मानक स्तर की गुणवत्ता के मूल्यांकन का हिस्सा है। स्कूली शिक्षा में गुणवत्ता का अर्थ है कि विद्यालय ज्ञान अर्जन का माध्यम बने। एक आदर्श विद्यालय ही शिक्षा के साथ न्याय कर वैश्विक लक्ष्य की प्रतिपूर्ति हेतु छात्रों में सही और सम्पूर्ण ज्ञान, मूल्य एवं व्यवहार की ज्योति जागृत कर विश्व स्तर पर सुनहरे अवसरों के योग्य बना सकता है। विद्यालयों की गुणवत्ता के सर्वेक्षण, निरीक्षण व परीक्षण हेतु विद्या भारती की अनेक समितियों के चयनित बंधुओं द्वारा इस कार्य को सम्पन्न करने हेतु विद्या भारती मानक परिषद् का गठन किया गया।

16 जून 2018 को सरस्वती विद्या प्रतिष्ठान के प्रज्ञादीप परिसर हर्षवर्धन नगर भोपाल में इसके कार्यालय का उद्घाटन हुआ। इस अवसर पर शांतिलालमुत्था फाउण्डेशन के राष्ट्रीय अधिकारी व विद्याभारती के अखिल भारतीय वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे।

इस संकल्पना को साकार रूप लेने से पूर्व शांतिलाल मुत्था जी, पूणे के तत्वावधान में शांतिलाल मुत्था फाउण्डेशन, पूणे स्थित संस्था जो शिक्षा में मूलभूत सुधार लाने हेतु कार्यरत है के द्वारा पूर्व में अपने चयनित विद्यालयों का मूल्यांकन हेतु सर्वेक्षण किया गया था।

मूल्यांकन हेतु यह अद्भुत पद्धति है इसकी कार्यनीति में निम्न बिन्दुओं को महत्त्व दिया गया है -

- विद्यालय छात्रों के अनुकूल होने चाहिए।
- विद्यालय सुनिश्चित करें कि सभी छात्र ठीक ढंग से शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं।
- विद्यालयों में मानवीय एवं लोकतांत्रिक मूल्यों की शिक्षा छात्रों को दी जाती है।
- विद्यालय में सभी हितधारक आचार्य, प्रधानाचार्य, प्रबंधन वर्ग व अभिभावक को विद्यालय एवं छात्रों के विकास हेतु इस पुनीत कार्य में सम्मिलित किया गया है।

इस उदेश्य की पूर्ति हेतु एवं विद्यालयों की गुणवत्ता में सुधार लाने की राष्ट्रीय व अन्तरराष्ट्रीय मानकों पर आधारित व्यवस्था से विद्यालय की संचालन प्रक्रिया का मूल्यांकन किया जाता है। यह असेसमेंट मूल्यांकन प्रणाली शैक्षिक प्रक्रियाओं के उच्च मानकों को बढ़ावा देती है, लगातार सुधार करने वाले विद्यालयों को पुरस्कृत करती है और गुणवत्ता पूर्ण अभ्यासों को आश्वस्त कर इसे व्यवहार में लाने के बारे में बृहद अवसर उपलब्ध कराती है। एक बाह्य मूल्यांकन प्रणाली है। जिसे गहन अध्ययन एवं अनुसंधान के आधार पर सभी प्रकार के विद्यालयों के मूल्यांकन हेतु प्रयोग कर विकसित किया गया है। इसका एक व्यापक ढाँचा है जो बेसिक परिपेक्ष में समग्र शिक्षा - प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा विभिन्न बोर्डो से मान्यता प्राप्त सम्पूर्ण देश के विद्यालयों के लिए विशेष उपयोगी है।

इस मूल्यांकन व्यवस्था के बारे में कुछ प्राथमिक जानकारी इस प्रकार है -

- इस बाह्य मूल्यांकन व्यवस्था में एसएमएफ विधि द्वारा प्रशिक्षित दो सदस्यीय टीम विद्यालय में मूल्यांकन हेतु भेजी जाती है।
- इन विशेषज्ञों को मूल्यांकन ''माप'' द्वारा SMF SESQ के तत्वों की संरचना एवं कार्य प्रणाली के

आधार पर प्रशिक्षित किया जाता है।

- विद्यालय स्तर पर उपर्युक्त प्रक्रिया के अन्तर्गत 3 महिने में कार्य पूर्ण किया जाता है। इस अवधि में मूल्यांकन के प्रारम्भ से रिपोर्ट प्रस्तुत करने तक यह कार्य सम्पन्न होता है।
- इस मूल्यांकन प्रक्रिया में विद्यालय को केवल तीन दिन के लिए सहयोगी एवं प्रतिभागी बनना पड़ता है।
- विद्यालय रिर्पोट एवं क्रियासूत्र के आधार पर विद्यालय अपने गुणवत्ता पूर्ण विकास की प्रक्रिया हेतु तात्कालिक/लघु काल और दीर्घकाल की योजना बनाकर आगे बढ़ते हैं।
- समय-समय पर इस मूल्यांकन एजेंसी के विशेषज्ञों द्वारा निगरानी एवं नियंत्रण विद्यालय की अपेक्षा के आधार पर किया जाता है।
- आवश्यक मूल्यांकन दिशानिर्देश हेतु सिंहावलोकन एवं मानक पुस्तिका एसएमएफ एजेंसी द्वारा सम्बंधित विद्यालय प्रबंधन को उपलब्ध कराई जाती है।
- प्रत्ययन को हम सामान्य भले ही माने पर एसेसमेंट शिक्षा क्षेत्र में होने के कारण अपरिहार्य है।

SMF SESQ मूल्यांकन प्रक्रिया के क्षेत्र एंव मानक -

मूल्यांकन प्रक्रिया के 4 क्षेत्र का मुख्य रूप से 12 मानक एवं 40 संकेतक के आधार पर पारदर्शी एवं विश्वसनीय विधि से मूल्यांकन किया जाता है। प्रत्येक क्षेत्र के 3 मानक एवं 10 संकेतक हैं। इस प्रक्रिया को इस प्रकार समझा जा सकता है-

मानक हेतु मूल्यांकन प्रक्रिया

शासन	मैनेजमेंट लेवल
प्रशासन	स्कूल लेवल
नेतृत्व	स्कूल लेवल
अध्ययन-अध्यापन	क्लासरूम लेवल

मूल्यांकन प्रक्रिया के क्षेत्र एवं मानक

शासन

- संचालन व्यवस्था ढांचा
- दूरदृष्टि, उद्देश्य निर्धारण, नियोजन एवं निर्णय निर्माण
- संचालन का पर्यवेक्षण

प्रशासन

- प्रक्रिया प्रबंधन
- परिसर प्रबंधन
- वित्तीय प्रबंधन

नेतृत्व

- अनुदेश के नेतृत्व
- संकाय नेतृत्व
- संचालन नेतृत्व एवं प्रत्युत्तर

अध्ययन अध्यापन

- विषय ज्ञान शिक्षण विधि एवं शैली
- मूल्यांकन एवं प्रत्युत्तर व्यवहार
- कक्षा नेतृत्व

स्कूल रिपोर्ट

उपर्युक्त चारों क्षेत्रों का 12 मानकों के आधार पर 40 संकेतकों की मदद से विद्यालय स्तर की रिपोर्ट एवं क्रिया सूत्र (विशेष रोडमैप) दिया जाता है।

- इस में सुधारात्मक क्षेत्रों को चिन्हित कर भविष्य की योजना बनाई जाती है।
- स्कूल रिपोर्ट सुधार हेतु दिए गए सुझावों के साथ एक आत्मनिर्भर और संरक्षण प्रणाली है जिसके द्वारा विद्यालयों की निगरानी एवं ट्रैकिंग की जा सकती है।

विद्या भारती मानक परिषद् की राष्ट्रीय टोली इस प्रकार है :-

1. श्री दिलीप जी बेतकेकर, अखिल भारतीय उपाध्यक्ष, विद्या भारती
2. श्री गोविन्द चन्द महंत, अखिल भारतीय सह संगठन मंत्री, विद्या भारती
3. श्री अवनीश जी भटनागर, अखिल भारतीय मंत्री, विद्या भारती
4. श्री केदार तापीकर, पूणे
5. श्री संकल्प दूबे, जबलपुर
6. श्री मोहन लाल गुप्ता, भोपाल
7. श्री राजेन्द्र सिंह परमार, भोपाल
8. श्री राकेश शर्मा , भोपाल

विद्या भारती के चयनित विद्यालयों का एसेसमेंट

4 नवम्बर 2014 को विद्या भारती के राष्ट्रीय पदाधिकारी पूणे में मुत्था फाउण्डेशन में एकत्र हुए और SMF SESQ के सभी पहलुओं पर विस्तार से चर्चा कर विद्यालयों के मूल्यांकन हेतु योग्य प्रणाली मानकर इसे सहमति दी।

प्रारम्भिक चरण में नमूना रूप में कुछ विद्यालयों का एसेसमेंट करने का निर्णय लिया गया। इस प्रणाली के लिए चयनित व प्रशिक्षित असेसर्स को प्रशिक्षण देने के लिए वर्ग करने का विचार हुआ और इन्हीं के द्वारा प्रथम चरण के कार्य में सहयोग लेकर मूल्यांकन का कार्य कराया गया।

12 जनवरी से 18 जनवरी 2015 तक आम्बीवेली, लोनावाला पूणे महाराष्ट्र में विद्या भारती के चयनित 30 कार्यकर्ताओं का 7 दिवसीय गुणवत्ता पूर्ण प्रशिक्षण वर्ग लगा जिसमें मुत्था फाउण्डेशन के निदेशक श्री शान्तिलाल मुत्था जी, श्री रामेन्द्र राय जी, तत्कालीन महामंत्री विद्या भारती, श्री काशीपति जी (संगठन मंत्री विद्या भारती), श्री अवनीश जी भटनागर (अखिल भारतीय मंत्री विद्याभारती) विशेष रूप से सम्मिलित हुए।

इस प्रशिक्षण के पश्चात् फरवरी 2015 से अप्रैल 2015 तक प्रारम्भिक चरण में इस कार्य में 15 असेसर्स विद्या भारती एवं 14 असेसर्स मुत्था फाउण्डेशन से सहभागी हुए।

7 प्रांतों (राजस्थान, दिल्ली, झारखंड, ओड़ीसा, आसाम, गोवा व

मध्यभारत) के चयनित 24 विद्यालयों का मूल्यांकन किया गया। इसकी रिपोर्ट उन विद्यालयों को दी गई।

22 अगस्त 2015 को भोपाल में केन्द्रीय टोली के समक्ष मूल्यांकन के अनुभव को साक्षा करते हुए निम्न निर्णय किया गया:-

1. SMF SESQ की प्रभावी मूल्यांकन प्रणाली को विद्या भारती के देशभर के विद्यालयों में दो या तीन चरणों में लागू किया जाए।
2. यह प्रणाली प्रांतश: या क्षेत्रश: लागू की जाए। प्रथम चरण में मध्यभारत, ओडीसा, दिल्ली व राजस्थान में लागू किया जाए।
3. अखिल भारती स्तर पर समन्वय अधिकारी श्री दिलीप जी बेतकेकर को बनाया गया।
4. प्रत्येक प्रांत में संयोजक इस कार्य के लिए अलग से नियुक्त किए जाएँ।
5. आगामी राष्ट्रीय कार्यकारिणी बैठकों में इस विषय पर व्यापक चर्चा करने का निर्णय लिया गया।

पुनश्चर्या अभ्यास वर्ग

26 जनवरी 2016 को केशवधाम गतिराउत कटक में श्री गोविन्द चंद महंत जी के संयोजन में 25 असेसर्स का वर्ग आयोजित किया गया। 28 दिसम्बर से 3जनवरी 2017 को भोपाल में एक वर्ग आयोजित किया गया जिसमें 38 असेसर्स की उपस्थिति रही।

SMF SESQ प्रणाली से गुणवत्ता सुधार हेतु फीडबैक-

प्रारम्भिक चरण के मूल्यांकित विद्यालयों की गुणवत्ता में सुधार के निम्न बिन्दु इस प्रकार रहे -

1. विद्यालयों के आगामी 3 से 5 वर्ष की कार्ययोजना बनाई गई।
2. कार्यालय को कम्प्यूटराइज्ड किया गया।
3. शिक्षकों के कौशलात्मक विकास पर ध्यान दिया जा रहा है।
4. टी.एल.एम. का उपयोग शिक्षण में प्रारम्भ हुआ है।
5. रक्षा-सुरक्षा पर विशेष ध्यान दिया जाने लगा है।
6. आचार-संहिता का पालन में सुधार हो रहा है।
7. SMC की सक्रियता एवं कार्यप्रणाली में सुधार हुआ है।
8. प्रशासनिक पक्रियाओं के लिए SOP मानक संचालन प्रक्रिया बनाए गए हैं।
9. लिखित पाठयोजना बनाकर पढ़ाना प्रारम्भ हुआ है।
10. C.C.E. पैटर्न पर मूल्यांकन योजना का व्यावहारिक क्रियान्वयन शुरू हुआ है।
11. वार्षिक पाठ्यचर्या योजना बनने लगी है।
12. आचार्य व प्रधानाचार्य स्वविकास पर ध्यान देने लगे हैं।
13. पर्यावरण संरक्षण प्रणाली-प्लास्टिक प्रतिबंध, वनीकरण की शुरूआत हुई है।
14. स्वच्छता व पेयजल की उपलब्धता पर पर्याप्त ध्यान दिया गया है।

द्वितीय चरण में असेसमेंट हेतु कार्य

प्रारम्भ से लेकर 16 जून 2018 से पूर्व तक कुल 15 असेसर्स प्रशिक्षण कार्यशाला सम्पन्न हुई, इनमें 395 असेसर्स सहभागी रहे। इनमें से कुल 355 को प्रशिक्षित घोषित किया गया। 3 पुनश्चर्या वर्ग भी हुए जिसमें 65 सहभागी हुए। इसमें प्रत्यक्षत: 95 विद्यालयों व 103 कुल 198 विद्यालयों का मूल्यांकन किया गया।

– **राकेश शर्मा**, संयोजक
विद्या भारती मानक परिषद्, भोपाल

बहन लवली ने विद्यालय का गौरव बढ़ाया

सरस्वती विद्या मंदिर, तिलौथू के प्रांगण में वन्दना सभा में **"बहन लवली"** को सम्मानित किया गया। बहन लवली, पिता रवीन्द्र कुमार सिंह, ग्राम रेड़िया, पो. चन्दनपुरा, तिलौथू की निवासी हैं। इस विद्यालय की पूर्व छात्रा हैं। इस वर्ष बिहार सरकार द्वारा दरोगा पद के लिए आयोजित परीक्षा में इनका चयन हुआ है। विद्यालय परिवार को इस पर गर्व है। इस अवसर पर विद्यालय की ओर से इनके पिताजी को एवं इन्हें अंगवस्त्र भेंट कर सम्मानित किया गया। बहन लवली ने कहा कि इस विद्यालय से हमें शिक्षा के साथ संस्कार भी मिला और विद्यालय के भैया-बहनों को यह संदेश दिया कि **"कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।"** इनके पिता ने भी विद्यालय के प्रति आभार ज्ञापित किया। इस अवसर पर सभी आगतों का स्वागत प्रधानाचार्य जंगलेश प्रसाद चौरसिया ने किया। समिति सह-सचिव श्री रामराज चौधरी, सदस्य श्री शशिभूषण प्रसाद, श्री राधेश्याम तिवारी, आचार्य श्री सर्वेश चन्द्र मिश्र, श्री छठु साह, सुसुम यादव, प्रतिभा कुमारी एवं सभी आचार्य उपस्थित रहे। आभार ज्ञापन श्री विश्वनाथ प्रसाद ने किया।

जंगलेश प्रसाद चौरसिया, प्रधानाचार्य
सरस्वती विद्या मंदिर, तिलौथू

सच्चे रसायन शास्त्री : प्रफुल्लचन्द्र राय

'अनुसंधान करने वाले अपने संसार से कभी बाहर नहीं निकल पाते' इन कथन को झुठला दिया प्रफुल्लचन्द्र राय ने। जन्मजात वैज्ञानिक देश के सम्मान व स्वाधीनता को सर्वोपरि मानते थे। इसके अतिरिक्त दया, ममता उनमें अपार थी परन्तु ऐसे भारत रत्न को किसी ने भारत-रत्न पुरस्कार के लिए नहीं चुना, सम्भवतः पुरस्कार उनके व्यक्तित्व की विशालता के सम्मुख छोटा पड़ गया। प्रस्तुत है **श्री विष्णु प्रसाद चतुर्वेदी** की लेखनी से प्रोफेसर प्रफुल्लचन्द्र राय जी जीवन यात्रा।

भारत राष्ट्र पर तन, मन, धन समर्पित करने की बात करने वाले तो लाखों रहे हैं मगर वास्तव में देश पर सर्वस्व न्यौछावर करने वाले चन्द लोगों में प्रोफेसर प्रफुल्लचन्द्र राय का नाम प्रमुख है। विश्व विख्यात प्रफुल्लचन्द्र राय अपनी आय के बल पर बहुत शान शौकत का जीवन जी सकते थे मगर अपना सर्वस्व देश सेवा में लगा कर प्रफुल्लचन्द्र राय ने एक सन्त की तरह जीवन गुज़ार दिया। बचपन से ही रसायनशास्त्र के प्रति अनुराग प्रकट करने वाले प्रफुल्लचन्द्र, मेट्रोपोलिटन इस्टीट्यूट कलकत्ता में अध्ययनरत रहते हुए प्रेसीडेन्सी कालेज में रसायनशास्त्र की कक्षाओं में पढ़ाने जाया करते थे। रसायनशास्त्र की कोई भी पुस्तक मिल जाती तो प्रफुल्लचन्द्र राय उसे रुचि से पूरी पुस्तक पढ़ते थे। रसायनशास्त्र के शिक्षक ऐलकजेण्डर पेडलर की शिक्षण विधि तथा प्रायोगिक-दक्षता से प्रफुल्ल बहुत प्रभावित हुए। छात्रावास के कमरे में प्रयोग की सामग्री जुटा प्रफुल्ल अपने स्तर पर प्रयोग करने लगे थे।

प्रफुल्लचन्द्र की प्रतिभा एवं साहस का प्रथम परिचय उस समय हुआ जब किसी को बताए बिना, अपने स्तर पर तैयारी कर, अखिल भारतीय गिलक्राइस्ट स्कॉलरशिप प्रतियोगिता में सफलता प्राप्त कर ली। इसी के आधार पर प्रफुल्लचन्द्र को इंगलैण्ड में अध्ययन करने का अवसर मिला। प्रफुल्ल 1886 में बी.ए. सी. व 1887 में डी.एस.सी. की उपाधि प्राप्त कर 1889 में भारत लौट आए थे। प्रफुल्लचन्द्र प्रेसिडेन्सी कॉलेज कोलकत्ता में सहायक प्रोफेसर के रूप में अध्यापन करने लगे। इसके साथ ही मौलिक शोध तथा जगदीशचन्द्र बोस के साथ मिल कर भारतीय विद्यार्थियों में विज्ञान की ज्ञान पिपासा जागृत करने का कार्य पूर्ण मनोयोग से करने लगे।

प्रफुल्लचन्द्र समय की पाबन्दी के प्रति बहुत सजग थे। अपने सभी कार्य स्वयं करने में विश्वास करने वाले प्रफुल्लचन्द्र नियमित व्यायाम को भी महत्त्व देते थे। राजा राममोहन राय से प्रभावित होकर प्रफुल्लचन्द्र इंगलैण्ड में ही चोगा व अचकन पहनने लगे थे। महात्मा गाँधी के सम्पर्क में आने पर वे खादी पहनने लगे। भारतीय वेशभूषा पहनकर गर्व अनुभव करते थे। न्यूटन, गैलेलियो, बेंजामिन फ्रैंकलिन, एडिसन, सर वाल्टर स्कॉट, रवीन्द्रनाथ टैगोर, लार्ड बायरन, हबर्ट स्पेन्सर आदि महान व्यक्तियों के जीवन चरित्र को पढ़कर प्रफुल्लचन्द्र ने उनके कई सदगुणों को अपने जीवन में उतारा था। बेंजामिन फ्रैंकलिन के जीवनवृत्त से प्रभावित हो प्रफुल्लचन्द्र ने अभावों को अपनी क्षमताओं पर हावी नहीं होने दिया। शिक्षक सुरेन्द्रनाथ बनर्जी तथा प्रसन्न कुमार लाहिड़ी के सम्पर्क में प्रफुल्लचन्द्र के हृदय में देश के प्रति प्रेम तथा स्वतंत्रता के प्रति समर्पण की ज्योति जागृत हुई। प्रफुल्ल ने उस ज्योति को जीवन भर जलाए रखा तथा अपने शिष्यों के मन को भी उजागर किया। अँग्रेज लेखक माण्डलर की पुस्तक जीवन चरित्र भण्डार में विश्व के एक हजार महान पुरुषों में केवल एक भारतीय राजा राममोहन राय का वर्णन पाकर बालक प्रफुल्ल के मन को बहुत पीड़ा पहुँची थी। क्या इतने बड़े भारत देश में कुछ महान व्यक्ति पैदा करने की सामर्थ्य नहीं रही? यह प्रश्न प्रफुल्लचन्द्र को बहुत समय तक परेशान करता रहा था। जब विदेश में प्रफुल्ल को यह बताया गया कि भारतीय लोगों का रसायन विज्ञान का ज्ञान मात्र इतना ही है जितना अँग्रेजों ने भारतीयों को सिखाया तो प्रफुल्लचन्द्र विचलित हो गए। प्राचीन ग्रंथों का अध्ययन कर प्रफुल्लचन्द्र ने प्राचीन भारत के काम में लाई जाने वाली रसायन विधियों को खोज कर निकाला। प्राप्त जानकारी को पुस्तक के रूप में प्रकाशित कराकर प्रफुल्लचन्द्र ने दुनिया के सामने रखा। प्रफुल्लचन्द्र ने सिद्ध किया कि जब यूरोप के लोग पशुओं की खाल लपेटे जंगलों में घूमा करते थे तब भारत के लोग विभिन्न प्रकार के रसायनों का उत्पादन किया करते थे। प्रफुल्लचन्द्र राय प्रयोगशाला व कक्षाओं तक सीमित रहने वाले बुद्धिजीवी नहीं थे। लोगों पर आपदा आने पर प्रफुल्लचन्द्र सब काम छोड़कर जनसेवा में निकल पड़ते थे। 1922 के जानलेवा अकाल व 1923

में उत्तरी बंगाल में आई भयंकर बाढ़ के समय लाखों लोग बेघर हो भूख से मरने लगे थे तक प्रफुल्लचन्द्र ने बंगाल सहायता समिति गठित कर 25 लाख रुपये एकत्रित किए। प्राप्त राशि से प्रत्येक उस परिवार को मदद पहुँचाई जिसको मदद की आवश्यकता थी। सुभाषचन्द्र बोस ने भी प्रफुल्लचन्द्र राय के नेतृत्व में सहायता शिविर का आयोजन किया था। पूर्णत: नि:स्वार्थ भाव व दक्षतापूर्ण विधि से किए गए कार्य से प्रभावित होकर गाँधी जी प्रफुल्लचन्द्र राय को डॉक्टर ऑफ फ्लड कहने लगे थे। प्रफुल्लचन्द्र ब्रह्म समाज तथा ब्रह्म कन्या विद्यालय की निरन्तर मदद करते रहते थे।

प्रफुल्लचन्द्र स्वदेशी की भावना के प्रबल समर्थक थे। रसायनिक पदार्थों को विदेशों से मँगाने के बजाय देश मे ही बनाने के कार्य का प्रारम्भ प्रफुल्लचन्द्र राय ने किया। बाद में दी बेंगाल केमीकल एण्ड फार्मास्यूटीकल वर्क्स नामक उद्योग लगा कर युवकों को क्लर्की के स्थान पर उद्योग लगाने के लिए प्रोत्साहित किया। बंगाल केमीकल्स के एक लिमिटेड कम्पनी में परिवर्तित हो जाने पर प्रफुल्लचन्द्र राय ने अपने हिस्से के लाभ को खर्च करने के लिए एक ट्रस्ट बना दिया जो उनके जन्म स्थान खुलना में एक विद्यालय चलाने और परोपकार के अन्य कार्य करने लगा। प्रफुल्लचन्द्र राय मितव्ययी मगर दानवीर थे। अपनी आवश्यकताओं पर कम से कम खर्च करते मगर जरूरतमंद की मदद के लिए अपनी पूर्ण बचत दे देते थे। आध्यात्मिकता के साधक होने के कारण उनका आवास सदा सादगी, स्वच्छता एवं करुणा से महकता रहता था। गुरूवर रवीन्द्रनाथ टैगोर इनकी बहुमुखी प्रतिभा से बहुत प्रभावित थे। प्रफुल्लचन्द्र राय के 70वें जन्मदिन पर आयोजित समारोह में रवीन्द्रनाथ टैगोर ने कहा था कि प्रफुल्लराय भी ईश्वर की तरह लोगों के हृदय में बस कर एक से अनेक होने की कला जानते हैं।

प्रफुल्लचन्द्र विद्यालयों में मातृभाषा में शिक्षा दिए जाने की केवल बात ही नहीं करते थे अपितु बंगला में पुस्तकों की कमी दूर करने के लिए स्वयं ही विज्ञान की पुस्तकें लिखी तथा अन्य को प्रेरित भी किया। प्रफुल्लचन्द्र राय ने देश के विभिन्न भागों का दौरा कर राष्ट्रीय विद्यालयों की स्थापना, खादी, राष्ट्रीय भावना, छुआछूत उन्मूलन आदि का प्रचार कर युवकों में नए उत्साह का संचार किया। सभी राजनैतिक नेताओं को जेल में डाल दिए जाने पर प्रफुल्लचन्द्र राय ने राजनैतिक सम्मेलनों की अध्यक्षता कर साहस का परिचय दिया था। साथ ही देश के प्रति अपने कर्तव्य को सफलता पूर्वक निभाया। असहयोग आन्दोलन में प्रफुल्लचन्द्र राय की भागीदारी से विज्ञान अनुसंधान कार्य पर विपरीत प्रभाव पड़ने की ओर उनका ध्यान आकर्षित करने पर उन्होंने कहा था कि विज्ञान प्रतीक्षा कर सकता है स्वराज्य प्रतीक्षा नहीं कर सकता। प्रफुल्लचन्द्र राय एक आदर्श शिक्षक थे। 1916 में वे प्रेसीडेन्सी कॉलेज से सेवानिवृत हो गए। मगर सर आसुतोष मुखर्जी के आग्रह पर विश्व विद्यालय विज्ञान कॉलेज में रसायन शास्त्र के प्रथम पालित प्रोफेसर का कार्यभार संभाल लिया। यहाँ प्रफुल्लचन्द्र के साथ समर्पित लोगों की टीम जुट गई वे सोना, चांदी, इरिडीयम आदि धातुओं के मरकेप्टाइल मूलक के साथ व कार्बनिक यौगिकों के सल्फाइड यौगिक बनाने में जुट गए। 1896 में स्थायी यौगिक मरक्यूरस नाइट्राइट बनाने पर प्रफुल्लचन्द्र का महत्वपूर्ण पत्र प्रकाशित हुआ। इस कार्य से भारत रसायन शास्त्र के एक नए स्कूल के रूप में विश्व मानचित्र पर आ गया। महाविद्यालय सभी प्रोफेसर भारतीय होने के कारण ब्रिटिश सरकार कॉलेज को कोई अनुदान स्वीकृत नहीं करती थी। कॉलेज में अनुसंधान की सीमित सुविधाएँ थीं फिर भी प्रफुल्लचन्द्र राय ने मेघनाथ साहा, शान्तिस्वरूप भटनागर, नीलरतन धर, जानेन्द्र घोष, सत्येन्द्र नाथ बोस आदि जैसे कई विद्वान शिष्य तैयार किए। प्रफुल्लचन्द्र राय ने 20 वर्ष तक इस महाविद्यालय को सेवा दी। जीवन भर अविवाहित रहकर उन्होंने महाविद्यालय के एक कमरे में जीवन गुजार दिया। जब किसी गरीब विद्यार्थी के रहने का कोई ठिकाना नहीं होता तो प्रफुल्लचन्द्र उसे अपने कमरे में जगह दे देते थे। 75 वर्ष की उम्र तक वे महाविद्यालय को नि:शुल्क सेवाएँ देते रहे। 1921 में जब वे 60 वर्ष के थे तब अपना सम्पूर्ण वेतन अग्रिम रूप से महाविद्यालय के रसायन विभाग के विकास तथा दो अनुसंधान छात्रवृत्तियों की स्थापना हेतु दान कर दिया। इसके अतिरिक्त 1000-1000 रुपयों के दो वार्षिक अनुसंधान पुरस्कार भी प्रारम्भ किए थे। रसायन का पुरस्कार प्राचीन भारत के महान रसायनविज्ञ नागार्जुन के नाम पर तथा दूसरा जीव विज्ञान का सर आसुतोष मुखर्जी के नाम पर। सरकारी घोषणा भले ही नहीं हुई हो मगर नि:स्वार्थ देशसेवा का अतुलनीय उदाहरण प्रस्तुत करने करने वाले प्रफुल्लचन्द्र किसी भारत रत्न से कम नहीं है।

छात्र-छात्राओं के विकास में शारीरिक शिक्षा की भूमिका

'शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्' हमारी परम्परा में एक महत्त्वपूर्ण उक्ति है। धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष रूपी पुरुषार्थ की प्राप्ति का साधन शरीर है। अतः शरीर को साधन प्राप्ति योग्य बनाने पर सदैव बल दिया गया है। यही कारण है कि समाधि के मार्ग में आसन व प्राणायाम भी आते हैं। हमारी ज्ञान परम्परा में शारीरिक स्वास्थ्य से सम्बन्धित योग (यहाँ योग के बृहतर स्वरूप की चर्चा नहीं की जा रही है) व क्रीड़ा का महत्त्वपूर्ण स्थान है। टोलों, घटिकाओं, आश्रमों, गुरुकुलों में विद्यापीठों में विद्यार्थियों के लिए योग व क्रीड़ा, पाठ्यक्रम के महत्त्वूर्ण अंग के रूप में विद्यमान थे, इस बात के प्रचुर ऐतिहासिक प्रमाण प्राप्त होते हैं। कृत्रिम कृषक क्रीड़ा, निलयन क्रीड़ा, कर्मटोत्प्लवन क्रीड़ा, गर्तादिलंघन क्रीड़ा, नेत्राबंध क्रीड़ा, स्पन्दान्दोलिका क्रीड़ा, जल क्रीड़ा, कंदुक क्रीड़ा, नियुद्ध क्रीड़ा, घट प्लावन क्रीड़ा, दर्दुरप्लावन क्रीड़ा, गदा क्रीड़ा आदि कुछ प्रमुख खेलों का नाम कई प्राचीन ग्रंथों में प्राप्त होते हैं। इस प्रकार बालक-बालिकाओं के सर्वांगीण विकास (शारीरिक, मानसिक, सामाजिक-सांस्कृतिक व आध्यात्मिक आदि) की यात्रा में शारीरिक शिक्षा प्राचीन काल से ही अतीव महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है।

शारीरिक शिक्षा का उद्देश्य मूलतः शरीर को स्वस्थ, स्फूर्त व बलिष्ठ बनाना है जिससे कि शरीर सांसारिक विषम परिस्थितियों में भी संघर्ष के योग्य बन सके व पुरुषार्थ चतुष्ट्य की प्राप्ति का साधन बन कर जीवन को सार्थक बना सके। शारीरिक शिक्षा मुख्यतः तीन भूमिकाओं का निर्वाह करती है- प्रथम उपराचात्मक (अर्थात् शारीरिक अस्वस्थता को दूर करने का मार्ग सुझाना) द्वितीय निरोधात्मक (अर्थात् ऐसे मार्ग को सुझाना जिससे शरीर को व्याधिग्रस्त होने से रोका जा सके) तृतीय संरक्षणात्मक (अर्थात् शरीरिक स्वास्थ्य को बनाए रखने व उसे सुदृढ़ करने के मार्ग को सुझाना।) भारतीय परम्परा में उपर्युक्त तीनों ही भूमिकाओं पर व्यापक चिंतन किया गया है। महर्षि पतञ्जलि, धनवन्तरी, चरक, सुश्रुत, भगवान महावीर, महर्षि घेरण्ड, आत्माराम व आधुनिक युग के चिंतक व विचारकों स्वामी विवेकानंद, स्वामी दयानंद, महर्षि अरविन्द, डॉ. हेडेगवार, श्रीगुरुजी आदि ने भी शारीरिक शिक्षा की विभिन्न भूमिकाओं पर व्यापक प्रकाश डाला है।

कुछ दशक तक एक कहावत है पर लोगों का बहुत अधिक विश्वास था कि "पढ़ोगे लिखोगे बनोगे नवाब, खेलोगे कूदोगे होवोगे खराब"। यह आश्चर्य का विषय है कि भारतीय ज्ञान परम्परा में जिन खेलों को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था वे कैसे एक कहावत के माध्यम से इतने तिरस्कृत हो गए। यह सोचनीय है कि क्या इसमें क्लर्क व पिछलग्गुओं को तैयार करने वाली ब्रिटिश कालीन शिक्षा की कोई भूमिका रही है? निश्चय ही आपकी खोज में यह बात सामने आएगी कि यह भ्रम जीवन कौशलों को दूर रखने वाली, आदेशों के अनुपालन बनाने वाली ब्रिटिश शिक्षा की देन है। भारतीय ऋषि परम्परा ने तो यह सिद्ध किया है कि वे शास्त्राज्ञ के साथ-साथ व बल सम्पन्न भी थे। अतः हमारे विद्यार्जन की प्रणाली में जीवनोपयोगी विद्याओं व शास्त्रों का समुचित समावेश था जिसमें शारीरिक शिक्षा महत्वपूर्ण अंग के रूप में थी। अतः उक्त कहावत हमारी परम्परा में जीवन कौशलों के विकास के लिए शारीरिक शिक्षा अनिवार्य पक्ष है। विदेशी दासता के काल में शासकों द्वारा 'जीवन को समग्रता में समझाने व तदनुरूप व्यवहार करने हेतु प्रेरित करने वाली शिक्षा' को स्थापित करने का कुचक्र रचा गया और वे अपने अभियान में सफल भी हो गए। महात्मा गाँधी ने भी इस कुचक्र की चर्चा की है। उन्होंने भारतीय विद्या परम्परा को रमणीय वृक्ष कहा है और वे विदेशी कुचक्रों के समाज को जीवन कौशलों से युक्त बनाने वाले इस रमणीय वृक्ष के सूख जाने से आहत थे।

राजनैतिक स्वतंत्रता मिलने के बाद भी हमारे देश की शिक्षा प्रणाली में बड़े बदलाव नहीं हो पाए। सार्थक व आनंदपूर्ण जीवन जीने की कला से शिक्षा निरंतर दूर होती गई यही कारण है कि शारीरिक शिक्षा भी पाठ्यचर्या में महत्त्वहीन बनी रही। परन्तु वर्तमान में एक बार फिर से योग व शारीरिक शिक्षा को महत्त्व देने की नीति स्पष्टता से सामने आई है। विद्यालयी व विश्वविद्यालयी स्तरों पर व सरकारी प्रयासों द्वारा भी योग तथा शारीरिक शिक्षा के पाठ्यक्रम को लागू किया जा रहा है। यह विद्यार्थियों के

सर्वांगीण विकास की दिशा में एक सार्थक प्रयास है।

शारीरिक शिक्षा के दो पक्ष हैं प्रथम सैद्धांतिक तथा द्वितीय क्रियात्मक। शारीरिक शिक्षा की उपचारात्मक, निरोधात्मक व संरक्षणात्मक भूमिकाओं का निर्वहन हेतु दोनों पक्षों पर बल दिया जाना आवश्यक है। सैद्धांतिक पक्ष का सही ज्ञान ही क्रियात्मक पक्ष का मार्ग प्रशस्त करता है। साथ ही एक और विशेष बात पर ध्यान देना आवश्यक है कि भारतीय परम्परा में शारीरिक शिक्षा का स्वरूप पाश्चात्य शारीरिक शिक्षा से भिन्न है। भारतीय ज्ञान परम्परा में शारीरिक शिक्षा का संबंध सिर्फ विकास या संरक्षण तक ही सीमित नहीं है वरन् मन व आत्मा के विकास से भी सम्बद्ध है। इस आत्मिक पक्ष का विकास की कमी पाश्चात्य शारीरिक शिक्षा में है। अतः वर्तमान समय में इसे लागू करने के दौरान् यह ध्यान रखा जाना अत्यावश्यक है कि हम किस परम्परा की शारीरिक शिक्षा विद्यार्थियों को दे रहे हैं। यह ध्यान रखने योग्य होगा कि शारीरिक शिक्षा का लक्ष्य सिर्फ व्यक्ति को बलिष्ठ व स्फूर्तिवान बनाने तक ही सीमित है या वह इस संवेदना का भी विकास कर रही है कि इसका उपयोग समाज व उसके स्वास्थ्य की रक्षा के लिए किया जाना है। यह भी देखा जाना चाहिए कि शारीरिक शिक्षा आत्मिक विकास का साधन बन पा रही है अथवा नहीं। यह हम इन बिन्दुओं पर विचार नहीं करेंगे तब संभवतः हम अत्यंत सीमित लक्ष्य को ही प्राप्त कर पाएँगे।

योग व खेलकूद दोनों शारीरिक शिक्षा के अनिवार्य पक्ष होने चाहिए। योग जहाँ तक विशेष रूप से व्यक्ति को केन्द्र में रखता है वही खेलकूद का विशेष केन्द्र समाज है। योग व्यक्ति के शारीरिक स्वास्थ्य से आत्मिक उत्थान तक की यात्रा कराता है वही खेलकूद शारीरिक स्वास्थ्य से सामाजिकता की यात्रा कराता है। खेलकूद द्वन्द्व का प्रदर्शन नहीं है, वरन सामाजिकता, परस्पर निर्भरता, सहजीविता व सामूहिक आनन्द का उत्सव है। इसे इसी सत्यनिष्ठा के साथ लेना चाहिए। समग्रता में यह कहना अधिक समीचीन होगा कि हमें यह प्रयास करना चाहिए कि शारीरिक शिक्षा बालक-बालिकाओं के शरीर, मन व आत्मा के सर्वांगीण विकास के साथ-साथ सामाजिक आनन्द का भी साधन बने।

– **शिव कुमार शर्मा,**
अखिल भारतीय मंत्री,
विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान, नेहरू नगर, नई दिल्ली

श्रीराम आरावकर, महामंत्री
विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान

दिनांक 14 से 17 मार्च 2019 तक कुरुक्षेत्र में विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान की साधारण सभा का आयोजन हुआ। यह साधारण सभा इसलिए भी विशेष है कि इसमें राष्ट्रीय कार्यकारिणी का नवीनीकरण हुआ। चुनाव की प्रक्रिया के द्वारा अध्यक्ष के रूप में मा. डी. रामकृष्ण राव का चयन हुआ। अध्यक्ष महोदय ने नवीनकार्यकारिणी का गठन किया। मा. श्रीराम हरिभाऊ आरावकर को महामंत्री का दायित्व मिला है। ग्वालियर (मध्य प्रदेश) में 2 मई 1953 को जन्मे आप पाँच भाई बहनों में सबसे छोटे भाई हैं। आप ने राजनीति शास्त्र में एम.ए. किया है। अपना सम्पूर्ण जीवन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को प्रचारक के रूप में समर्पित किया है। संगठन से जुड़ने के पश्चात् आपने विभिन्न दायित्वों का निर्वहन किया है जो इस प्रकार है :-

- 1977 -1980 नगर प्रचारक, तहसील प्रचारक दतिया म.प्र.
- 1981 -1982 जिला प्रचारक दतिया
- 1982 - 1985 जिला प्रचारक मुरैना
- 1985 - 1987 जिला प्रचारक महु, इन्दौर
- 1987 - 1990 जिला प्रचारक धार
- 1990 - 1993 विभाग प्रचारक धार
- 1993 - 1998 विभाग प्रचारक शिवपुरी
- 1998 - 2004 प्रांत संगठन मंत्री विद्या भारती मध्य भारत प्रांत (म.प्र.)
- 2004 - 2007 क्षेत्रीय सह संगठन मंत्री मध्यक्षेत्र
- 2007-2010 क्षेत्रीय संगठन मंत्री मध्यक्षेत्र
- 2010 - 2013 क्षेत्रीय संगठन मंत्री व अखिल भारतीय मंत्री
- 2013-2016 अखिल भारतीय मंत्री
- 2016 - 2019 अखिल भारतीय सह संगठन मंत्री
- 2019 अखिल भारतीय महामंत्री

बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर का भारत चिन्तन

बाबा साहेब की भारत–दृष्टि एक समग्र दृष्टि थी, जिसमें समरस, सशक्त, समर्थ एवं संकल्पित भारत का एक स्पष्ट चित्रांकन देखा जा सकता है। डॉ. आंबेडकर ने आजीवन भारतवर्ष के सशक्तिकरण एवं इसकी एकता एवं अखंडता के लिए प्रामाणिक प्रयास किया। इसका सत्यापन शैक्षिक चिंतक **श्री अतुल कोठारी** के प्रस्तुत लेख से हो जाता है।

हर वर्ष 14 अप्रैल के दिन देश अपने महान सपूत और सामाजिक न्याय के पुरोधा बाबासाहेब डॉ. भीमराव आंबेडकर जी का जन्मदिवस मनाता है। बाबासाहेब की स्मृतियों को याद करते समय यह विचार करना होगा कि वर्तमान भारत कितना बाबासाहेब की सोच का भारत है। सामान्यत: आंबेडकर जी के नाम का उल्लेख आते ही केवल सामाजिक न्याय के विषय पर बात होती है। किन्तु बाबा साहेब के विचार केवल एक विषय तक या केवल एक समुदाय विशेष तक सीमित नहीं थे और जो लोग यह कहते आए हैं वे बाबासाहेब को या तो समग्रता में समझे नहीं हैं या समझने का प्रयास नहीं किया है।

इससे यह बात भी ध्यान में आती है कि प्रखर राष्ट्रभक्त व देश की एकता और अखंडता के प्रहरी एवं महान अर्थशास्त्री डॉ. आंबेडकर की छवि को जानबूझकर देश की जनता से दूर रखा गया। इसी प्रकार बाबासाहेब ने कहा था कि **''मैं पहले भारतीय और अंतत: भारतीय''** इस कथन को उनके किसी भी स्मारक पर अंकित नहीं किया गया। इसी क्रम में उन्होंने आगे कहा था **'' मैं नहीं चाहता कि भारतीय के तौर पर हमारी निष्ठा किसी भी प्रतिस्पर्धी निष्ठा से किंचित भी प्रभावित हो, चाहे वह निष्ठा अपने धर्म, संस्कृति या भाषा से हो। मैं चाहता हूँ कि**

सभी लोग पहले भारतीय हों, अंतिम रूप से भारतीय हों और केवल भारतीय हों।''

पाठ्यपुस्तकों में बाबासाहेब के राष्ट्र के प्रति विचार प्रसारित नहीं किए गए। यह तथ्य है कि आंबेडकर जी के विचारों का अधिकतर लोगों ने केवल हितपूर्ति हेतु उपयोग किया न कि राष्ट्र निर्माण करने के लिए। संविधान सभा के अंतिम सत्र में भारत का संविधान देश को सौंपते हुए डॉ. आंबेडकर जी ने कहा था–

''ऐसा नहीं है कि भारत कभी एक स्वतंत्र देश नहीं था। मुद्दा यह है कि उसने एक बार वह स्वतंत्रता खो दी जो उसके पास थी। क्या वह इसे दूसरी बार भी खो देगा? यह ऐसा विचार है जो मुझे भविष्य के लिए सबसे अधिक चिंतित करता है। मुझे इस बात का भलीभाँति संज्ञान है कि न केवल भारत ने एक बार अपनी स्वतंत्रता खो दी है, बल्कि उसने अपने कुछ लोगों के विश्वासघात से इसे खोया है।''(संविधान सभा, 25 नवंबर 1949, पृष्ठ 977)

डॉ. आंबेडकर के उपरोक्त कथन से सिद्ध होता है कि राष्ट्र की अखंडता उनके लिए सर्वोपरि थी। साथ ही देश के अंदर विभेदकारी ताकतों की उपस्थिति का भी उन्हें संज्ञान था। डॉ. आंबेडकर जी की यह चिंता भी उतनी ही प्रासंगिक मालूम होती है।

डॉ. आंबेडकर ने संविधान सभा के अपने अंतिम भाषण में यह भी स्पष्ट किया था कि भारत के संविधान के विरोधी कौन हैं? बाबासाहेब ने कहा था कि कम्युनिस्ट विचार एक ऐसा पक्ष है जो देश में संसदीय लोकतंत्र का विरोध करते हैं। इसे स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा था –

''संविधान की निंदा मोटे तौर पर दो वर्ग, कम्यूनिस्ट पार्टी और सोशलिस्ट पार्टी से होती है। वे संविधान की निंदा क्यों करते हैं? क्या यह इसलिए है क्योंकि यह वास्तव में एक बुरा संविधान है? मैं कहता हूँ 'नहीं'। कम्यूनिस्ट पार्टी सर्वहारा वर्ग की तानाशाही पर आधारित संविधान चाहती है। वे संविधान की निंदा करते हैं क्योंकि यह संसदीय लोकतंत्र पर आधारित है।

–(संविधान सभा, 25 नवंबर 1949, पृष्ठ 975)

एक विशिष्ट विचारधारा से प्रभावित इतिहासकारों ने भारत के गौरवशाली अतीत को निरंतर कलंकित करने का प्रयत्न किया है। ऐसे लोग ही वर्तमान में डॉ. आंबेडकर को अपनी विचारधारा से जोड़कर दिखाने का प्रयास कर रहे हैं। काश! ये इतिहासकार संविधान सभा में प्राचीन भारतीय संसद का हवाला देते हुए डॉ. आंबेडकर का निम्नलिखित कथन भी अपने इतिहास–लेखन में शामिल कर लेते –

''ऐसा नहीं है कि भारत को नहीं पता था कि डेमोक्रेसी क्या है? एक समय था जब भारत को गणराज्यों से जोड़ा गया था, और यहाँ तक कि यहाँ राजशाही थी, वे या तो चुने गए थे या सीमित थे। वे कभी निरपेक्ष नहीं थे। ऐसा नहीं है कि भारत संसदों या संसदीय प्रक्रिया को नहीं जानता था।'' बौद्ध भिक्षु संघों के अध्ययन से पता चलता है कि प्राचीन भारत में न केवल संसद थी संघों के लिए संसदों के अलावा और कुछ नहीं था, संघों ने संसदीय प्रक्रिया के सभी नियमों को जाना और उनका पालन किया, जिन्हें आधुनिक काल के लिए जाना जाता है। उनके बैठने की व्यवस्था, नियम, प्रस्ताव प्रक्रिया, कोरम, व्हिप, वोटों की गिनती, मतपत्र द्वारा मतदान, रेस जुडीसैटा (न्याय-मंडल) आदि के बारे में नियम थे, हालाँकि संसदीय प्रक्रिया के ये नियम महात्मा बुद्ध द्वारा बैठकों के लिए लागू किए गए थे। संघों ने, उन्हें अपने समय में देश में कार्यरत राजनीतिक सीमाओं के नियमों से ही उधार लिया होगा''। (संविधान सभा, 25 नवंबर 1949, पृष्ठ 978)

जम्मू–कश्मीर के लिए धारा **370** के रूप में विशिष्ट प्रावधान का संविधान में समावेश करने का स्पष्ट विरोध करते हुए डॉ. आंबेडकर ने वर्ष **1949** में शेख अब्दुला को पत्र लिखकर कहा कि–

''आप चाहते हैं भारत आपकी सीमाओं की रक्षा करे, आपके क्षेत्र में सड़कों का निर्माण करे, आपको भोजन की आपूर्ति करे और कश्मीर को भारत के बराबर का दर्जा भी मिलना चाहिए। लेकिन भारत सरकार के पास केवल सीमित शक्तियाँ होनी चाहिए एवं भारत के नागरिकों को कश्मीर में कोई अधिकार नहीं होना चाहिए। इस प्रस्ताव को सहमति देना देश के हित के खिलाफ एक विश्वासघाती कदम होगा और भारत के कानूनमंत्री के रूप में, मैं ऐसा कभी नहीं कर सकता।''

डॉ. आंबेडकर के धारा **370** के स्पष्ट एवं मुखर विरोध के बाद तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने यह प्रावधान गोपाल स्वामी अयंगर से मसौदा तैयार करके लागू करवाया। संविधान निर्माता की कानूनी राय के बावजूद कश्मीर हेतु विशेष प्रावधान संविधान में शामिल किया गया।

6 अक्टूबर 1951 को भारत के पहले संसदीय चुनावों हेतु अपनी पार्टी शिडयूल्ड फेडरेशन के घोषणा पत्र में डॉ. आंबेडकर ने कश्मीर मुद्दे पर काँग्रेस और जवाहर लाल नेहरू की नीतियों का स्पष्ट विरोध करते हुए कहा, **''कश्मीर मुद्दे पर काँग्रेस सरकार द्वारा अपनाई गई नीति शिडयूल्ड कास्ट फेडरेशन को स्वीकार नहीं। अगर यह नीति जारी रखी गयी तो भारत और पाकिस्तान के बीच दुश्मनी या युद्ध जैसी स्थिति निरंतर बनी रहेगी।'' (डॉ. आंबेडकर संपूर्ण वाग्मय खंड 17 भाग 1 पृष्ठ 396 अँग्रेजी संस्करण)**

डॉ. आंबेडकर कश्मीर मुद्दे पर संयुक्त राष्ट्र सभा में जाने के विरुद्ध थे। जवाहर लाल नेहरू द्वारा संयुक्त राष्ट्र संघ के कश्मीर में जनमत संग्रह करवाने का प्रस्ताव स्वीकार करने के संदर्भ में मंत्रिमंडल से इस्तीफा देते समय **10 अक्टूबर 1951** को अपना मत रखते हुए कहा, **'' मुझे जो डर है, वह प्रस्तावित जनमत संग्रह से है, कि समग्र कश्मीर का जनमत संग्रह करवाने से, कश्मीर के हिंदू और बौद्ध लोगों को उनकी इच्छा के विरुद्ध पाकिस्तान में घसीटे जाने की संभावना है और आज हम जिन समस्याओं का सामना पूर्वी बंगाल में कर रहे है, हमें उन्हीं समस्याओं का सामना कश्मीर में भी करना पड़ सकता है। - (डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर संपूर्ण वाग्मय खंड 14 भाग 2 पृष्ठ 1322 अँग्रेजी संस्करण)**

बाबा साहेब की भारत–दृष्टि एक समग्र दृष्टि थी,जिसमें समरस, सशक्त, समर्थ एवं संकल्पित भारत का एक स्पष्ट चित्रांकन देखा जा सकता है। डॉ. आंबेडकर ने आजीवन भारतवर्ष के सशक्तिकरण एवं इसकी एकता एवं अखंडता के लिए प्रामाणिक प्रयास किया। भारतीय संविधान के प्रति उनकी प्रतिबद्धता और कश्मीर पर उनका दृष्टिकोण इस बात का परिचायक है।

– सचिव,
शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास,
सरस्वती बाल मंदिर, जी ब्लॉक,
नारायणा विहार, नई दिल्ली–110028
सम्पर्क सूत्र :–9868100445,
ईमेल– atulssun@gmail.com

भारतीय परिवार व्यवस्था-मानवता के लिए अनुपम देन

परिवार व्यवस्था हमारे समाज का मानवता को दिया हुआ अनमोल योगदान है। अपनी विशेषताओं के कारण हिन्दू परिवार व्यक्ति को राष्ट्र से जोड़ते हुए वसुधैव-कुटुम्बकम् तक ले जाने वाली यात्रा की आधारभूत इकाई है। परिवार व्यक्ति की आर्थिक व सामाजिक सुरक्षा की सम्पूर्ण व्यवस्था के साथ-साथ नई पीढ़ी के संस्कार निर्मिति एवं गुण विकास का महत्वपूर्ण माध्यम है। हिन्दू समाज के अमरत्व का मुख्य कारण इसका बहुकेन्द्रित होना है। एवं परिवार व्यवस्था इनमें से एक सशक्त तथा महत्वपूर्ण केन्द्र है।

आज हमारी परिवार रूपी यह मंगलमयी सांस्कृतिक धरोहर बिखरती हुई दिखाई देती है। भोगवादी मनोवृत्ति एवं आत्मकेन्द्रितता का बढ़ता प्रभाव इस पारिवारिक विखंडन के प्रमुख कारण हैं। आज हमारे संयुक्त परिवार एकल परिवारों में परिवर्तित होने लगे हैं। भौतिकवादी चिन्तन के कारण समाज में आत्मकेन्द्रित व कटुतापूर्ण व्यवहार, असीमित भोगवृत्ति व लालच, मानसिक तनाव, सम्बंध विच्छेद आदि बुराइयाँ बढ़ती जा रही हैं। छोटी आयु में बच्चों को छात्रावास में रखने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। परिवार के भावनात्मक संरक्षण के अभाव में नई पीढ़ी में एकाकीपन भी बढ़ रहा है। परिणाम स्वरूप नशाखोरी, हिंसा, जघन्य अपराध तथा आत्महत्याएँ चिन्ताजनक स्तर पर पहुँच रही हैं। परिवार की सामाजिक सुरक्षा के अभाव में वृद्धाश्रमों की सतत वृद्धि चिंताजनक है।

अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा का यह स्पष्ट मत है कि अपनी परिवार व्यवस्था को जीवंत तथा संस्कारक्षम बनाए रखने हेतु आज व्यापक एवं महती प्रयासों की आवश्यकता है। हम अपने दैनन्दिन व्यवहार व आचरण से यह सुनिश्चित करें कि हमारा परिवार जीवनमूल्यों को पुष्ट करने वाला, संस्कारित व परस्पर संबंधों को सुदृढ़ करने वाला हो। सपरिवार सामूहिक भोजन, भजन, उत्सवों का आयोजन व तीर्थाटन, मातृभाषा का उपयोग, स्वदेशी का आग्रह, पारिवारिक व सामाजिक परम्पराओं के संवर्धन व संरक्षण से परिवार सुखी व आनंदित होंगे। परिवार व समाज परस्पर पूरक हैं। समाज के प्रति दायित्वबोध निर्माण करने के लिए सामाजिक धार्मिक व शैक्षणिक कार्यों हेतु दान देने की प्रवृत्ति को प्रोत्साहन एवं अभावग्रस्त व्यक्तियों के यथा संभव सहयोग के लिए तत्पर रहना हमारे परिवार का स्वभाव बने।

हमारी परिवार व्यवस्था की धूरी माँ होती है, मातृशक्ति का सम्मान करने का स्वभाव परिवार के प्रत्येक सदस्य में आना चाहिए। सामूहिक निर्णय हमारे परिवार की परम्परा बननी चाहिए। परिवार के सदस्यों में अधिकार की जगह कर्तव्य पर चर्चा होनी चाहिए। प्रत्येक के कर्तव्य पालन में ही दूसरे के अधिकार निहित हैं।

कालक्रम से अपने समाज में कुछ विकृतियाँ व जड़ताएँ हो गई हैं। दहेज, छुआछूत व ऊँच-नीच बढ़ते दिखावे एवं अनावश्यक व्यय अंधविश्वास आदि दोष हमारे समाज के सर्वांगीण विकास की गति में अवरोध उत्पन्न कर रहे हैं। प्रतिनिधि सभा सम्पूर्ण समाज से यह अनुरोध करती है कि अपने परिवार से प्रारम्भ कर इन कुरीतियों व दोषों को जड़मूल से समाप्त कर एक संस्कारित एवं समरस समाज के निर्माण की दिशा में कार्य करे।

परिस्थिति जन्य विवशताओं के कारण एकल परिवारों में रहने के लिए बाध्य हो रहे व्यक्ति भी अपने मूल परिवार के साथ सजीव संपर्क रखते हुए निश्चित अंतराल पर कुछ समय सामूहिक रूप से अवश्य बिताएँ। अपने पूर्वजों के स्थान से जुड़ाव रखना अपनी जड़ों के साथ जुड़ने के समान हैं। इसलिए वहाँ विभिन्न गतिविधियाँ जैसे परिवार सहित एकत्रित होना, सेवा कार्य करना आदि आयोजित होने चाहिए। बालकों में पारिवारिक एवं सामाजिक जुड़ाव निर्माण करने के लिए उनकी प्रारम्भिक शिक्षा स्थानीय परिवेश में रहकर ही कराई जानी चाहिए। अपने निवास क्षेत्र में सामूहिक उत्सवों एवं कार्यक्रमों के द्वारा वृहद परिवार का भाव निर्मित किया जा सकता है। अपने निवास क्षेत्र में सामूहिक उत्सवों एवं कार्यक्रमों के द्वारा वृहद परिवार का भाव निर्मित किया जा सकता है। बाल-किशोरों के संतुलित विकास हेतु बालगोकुलम्, संस्कार वर्ग आदि कार्यक्रम करना भी उपयोगी रहेगा।

त्याग, प्रेम, आत्मीयता, सहयोग व परस्पर पूरकता से युक्त जीवन ही सुखी परिवार की आधारशिला है। इन विशेषताओं

से युक्त परिवार ही सभी घटकों के सुखी जीवन को सुनिश्चित करेगा। अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा सभी स्वयंसेवकों सहित समस्त समाज विशेषकर युवा पीढ़ी का आह्वान करती है कि अपनी इस अनमोल परिवार व्यवस्था को अधिक से अधिक सजीव, प्राणवान, संस्कारक्षम बनाए रखने के लिए आवश्यक कदम उठाएँ।

गुरुनानक देव जी का 550वाँ प्रकाश वर्ष हमारे लिए गर्व का विषय है – श्री भैया जी जोशी

आज से पाँच सौ पचास वर्ष पूर्व संवत् 1526 को श्री गुरु नानकदेव जी का जन्म श्री मेहता कल्याणदास जी के घर, रायभोय की तलवण्डी में माता त्रिपता जी की कोख से हुआ था। उस समय भारतवर्ष की दुर्बल व विघटित अवस्था का लाभ उठाकर विदेशी आक्रांता इस राष्ट्र की धार्मिक व सांस्कृतिक अस्मिता को नष्ट कर रहे थे। श्री गुरु नानकदेव जी ने सत्य, ज्ञान, भक्ति एवं कर्म का मार्ग दिखाकर अध्यात्म के युगानुकूल आचरण से समाज के उत्थान व आत्मोद्धार का मार्ग प्रशस्त किया। जिसके फलस्वरूप भ्रमित हुए भारतीय समाज को एकात्मता एवं नवचैतन्य का संजीवन प्राप्त हुआ। श्री गुरु नानकदेव जी महाराज ने समाज को मार्गदर्शन के लिए 'संवाद' का मार्ग अपनाया।

उन्होंने अपने जीवन में सम्पूर्ण भारत सहित अनेक देशों की यात्राएँ कीं। प्रथम तीन यात्राएँ भारत की चारों दिशाओं में कीं। मुलतान से लेकर श्रीलंका व लखपत (गुजरात) से लेकर कामरूप व ढाका सहित देश के प्रमुख आध्यात्मिक केन्द्रों पर गए। चौथी यात्रा उन्होंने भारत से बाहर की जिसमें उन्होंने बागदाद, ईरान, कंधार, दमिष्क, मिस्र, मक्का व मदीना तक की यात्राएँ कीं। इन यात्राओं में उन्होंने तत्कालिन धार्मिक नेतृत्व यथा संतों, सिद्धों, योगियों, सूफी, फकीरों, जैन व बौद्ध सन्तों से संवाद किया। धार्मिकता के नाम पर प्रचलित अंधविश्वासों पर सैद्धान्तिक व तार्किक दृष्टिकोण बताते हुए उन्होंने समाज का मार्गदर्शन किया।

श्री गुरुनानक देव जी ने मतान्ध बाबर के आक्रमण के विरुद्ध मुकाबला करने का आह्वान किया। उन्होंने स्वाभिमान से जीने की प्रेरणा देकर भारत की बलिदानी परम्परा को सुदृढ़ किया, जिससे आक्रान्ताओं के मार्ग सदैव के लिए बंद हो गए। उन्होंने समाज को यह उपदेश दिया कि ''किरत कर नाम जपु वंड छक' यानि पुरुषार्थ करो, प्रभु को स्मरण करो बाँटकर खाओ।

हम सभी का दायित्व है श्री गुरु नानकदेव जी के संदेश जो आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं का अपने जीवन में अनुसरण कर उन्हें सर्वदूर प्रसारित करें । स्वयंसेवकों सहित समस्त समाज को यह आह्वान है कि श्री गुरु नानकदेव जी के 550 वें प्रकाश वर्ष को परस्पर सहयोग व समन्वय के साथ सभी स्थानों व सभी स्तरों पर बढ़-चढ़कर मनाएँ।

अखंडता की ओर – निशान्त मिश्रा

केसरिया ध्वज लिए चलें वीर स्वयंसेवकों की टोलियाँ।
भारत माँ के सच्चे पूत , चलें खेलने होलियाँ।।
बाधा अनेक पथ में आएँ, न लक्ष्य से डोलना।
मन में दृढ़ संकल्प रहे, आपस में सबको जोड़ना।।
आदर्श हो जिनका बल, स्वाभिमान जिनका अटल।
सर पर लहराता भगवा, जिससे मिलता इनको बल।।
अखंड भारत की आस लिए, ये अब न कभी रुकेंगे।
चलना जिनका काम, नहीं काटों से कभी झुकेंगे।।
विश्व जिनका परिवार हो, गीता जीवन का सार हो।
जीवन बलि दें देश की खातिर, वह देशप्रेम की धार हो।
सीमा रोक सके न जिनकी संस्कृति, वह अविरल संस्कार हो।।
वट-वृक्ष की भाँति फैले, बीज संस्कृति विचार हो।
और रक्त में इनके बहता, भारत माँ के प्रति प्यार हो।।
बहे संघ की अविरल धारा, जिसमें शुद्ध विचार हो।
मूल-मंत्र एक ही लिए चले, भारत अखंडता की ओर।
दीप से दीप जलाएँ, विश्व देखे भारत की ओर।।
काल-चक्र फिर पलटेगा, वह दिन आएगा भारत का।
विश्व पटल पर पुनः बजेगा, हिन्दु संस्कृति का डंका।।
शौर्य-पताका फिर लहरेंगी, दसों दिशाओं की लहरी में।
भारत गरजे, विश्व सुने, यह सोच निरन्तर गहरी हो।।

संस्कृति और शिक्षा को समर्पित श्रद्धेय कृष्णचन्द्र गाँधी पुरस्कार

गुवाहाटी, पूर्वोत्तर जनजाति शिक्षा समिति के द्वारा सन् 2007 से निरन्तर जनजातीय क्षेत्र में अनुपम सेवाएँ प्रदान करने वाले एवं शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु कार्यकर्ता अथवा संस्था को प्रदान किया जाता है। श्रद्धेय कृष्णचन्द्र गाँधी जी के व्यापक विचार, अथक परिश्रम एवं लगन के परिणाम स्वरूप शिक्षा में भारतीय विचार को पुनर्स्थापित करने हेतु विद्यालय की प्रथम स्थापना हुई। श्रद्धेय गाँधी जी ने पूर्वोत्तर भारत के जनजातीय समाज व वन अंचलों में शिक्षा का प्रसार तीव्र गति से बढ़े, इसके लिए कई योजनाएँ बनाई तथा इन्हें मूर्त रूप प्रदान करने के लिए जीवन के महत्त्वपूर्ण 25 वर्ष पूर्वोत्तर के विभिन्न क्षेत्रों में कई बार यात्रा कर जनमानस को शिक्षा के लिए प्रेरित किया। कार्यकर्ताओं एवं दानदाताओं को जोड़कर प्राथमिक से लेकर महाविद्यालय तक के विद्यालयों का निर्माण करवाकर शिक्षा के प्रसार हेतु मशाल धारक बनकर ज्ञान की ज्योति जलाई। शिक्षादान के द्वारा जनजातीय समाज में अपनी संस्कृति के प्रति गौरव का भाव जगाया। उनके द्वारा किए गए कार्य को सम्मान देने, उनकी स्मृति संजोये रखने हेतु हर वर्ष यह पुरस्कार जनजातीय समाज में शिक्षा और संस्कृति को बढ़ावा देने हेतु अनुपम कार्य करने वाले श्रेष्ठ कार्यकर्ता या संस्था को प्रदान किया जाता है।

वर्ष 2007 से प्रारम्भ होकर 2016 तक 10 श्रेष्ठ सामाजिक कार्यकर्ताओं को यह पुरस्कार प्रदान किया गया है। इस वर्ष विद्या भारती पूर्वोत्तर के संरक्षक व गुवाहाटी विश्वविद्यालय के पूर्वकुलपति डॉ. निर्मल कुमार चौधरी ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम को प्रारम्भ किया। मंच पर विशिष्ट अतिथि वरिष्ठ पत्रकार व असम साहित्य सभा के पूर्व अध्यक्ष श्री कनक सेन डेका, विद्या भारती के मंत्री श्रीमती अनिमा शर्मा, उद्योगपति श्री शंकर लाल गोयनका, विद्या भारती पूर्वोत्तर के अध्यक्ष श्री जयकांत शर्मा तथा पूर्वोत्तर जनजाति शिक्षा समिति के अध्यक्ष श्री सदादत्त विशेष रूप से उपस्थित थे। शंकरदेव विद्या निकेतन विष्णुपथ के छात्रों द्वारा सरस्वती वंदना की गई। देशभक्ति गीत शंकरदेव विद्या निकेतन बेलतला के आचार्य दिलीप तालुकदार ने प्रस्तुत किया।

वर्ष 2017 के लिए डिमो हसाओ जिला के माईबांग निवासी श्रीमती फली बोडो को गुवाहाटी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. निर्मल कुमार चौधरी ने पुरस्कृत किया। फली बोडो एक समाजसेविका हैं जो कल्याण आश्रम माईबांग के बालिका छात्रावास की सचिव हैं। जनवरी 2019 में लोक निर्माण विभाग के प्रधान सहायक के पद से सेवानिवृत है।

वर्ष 2018 के लिए गुवाहाटी विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ. उपेन राभा हकाचम को असम साहित्य सभा के पूर्व अध्यक्ष कनक सेन डेका ने पुरस्कृत किया। श्री उपेन राभा लेखक व शिक्षाविद् हैं। उनका जनजातीय भाषाओं के उत्थान के लिए विशेष योगदान रहा है।

विद्या भारती पूर्वोत्तर क्षेत्र के अध्यक्ष डॉ. जयकांत शर्मा ने प्रस्तावित उद्बोधन में कहा कि पूर्वोत्तर जनजाति समिति का गठन 1997 में हुआ था। उस समय विद्या भारती अखिलभारतीय वनवासी शिक्षा प्रमुख मा. कृष्णचन्द्र गाँधी के अथक प्रयास व मेहनत से लोगों को शिक्षा के लिए प्रेरित करते हुए ग्राम शिक्षा मंदिर की स्थापना की। इस प्रकार जनजातीय क्षेत्रों में एकल विद्यालय की श्रृंखला बनी। वर्तमान में पूर्वोत्तर जनजाति शिक्षा समिति द्वारा 620 एकल विद्यालय व संस्कार केन्द्र संचालित हैं। वर्तमान में समिति द्वारा 1,95,518 विद्यार्थियों को 10,233 आचार्य शिक्षा दे रहे हैं।

पूर्वोत्तर जनजाति शिक्षा समिति के अध्यक्ष सदादत्त ने समारोह में जानकारी देते हुए बताया कि विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान शिक्षा के क्षेत्र में काम करने वाला सबसे बड़ा गैर सरकारी शिक्षा संस्थान है। भारतीय दर्शन और संस्कारों को समाहित करते हुए विद्या भारती के अन्तर्गत 80 समितियाँ विभिन्न अंचल व प्रांतों में कार्य कर रही हैं। इस समय विद्या भारती के द्वारा भारत वर्ष में 25,445 औपचारिक व अनौपचारिक विद्यालयों में 34,95,067 विद्यार्थियों को शिक्षादान के माध्यम से शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक व आध्यात्मिकता के साथ स्वावलम्बी बनाने का कार्य 1,60,891 आचार्यों के कुशल नेतृत्व में चल रहा है।

शेष अगले पृष्ठ पर

हिन्दू आस्था और परम्पराओं पर बढ़ते आघात का शान्तिपूर्ण प्रतिकार करें

अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा का यह सुविचारित मत है कि अभारतीय दृष्टिकोण के आधार पर हिन्दू आस्था और परम्पराओं को आहत एवं इसका अनादर करने की एक योजनाबद्ध षड्यंत्र निहित स्वार्थी तत्त्वों द्वारा चलता आ रहा है। शबरीमाला मंदिर प्रकरण इसका नवीतम उदाहरण है।

हिन्दुत्व ईश्वर के एक ही स्वरूप अथवा पूजा पद्धति को स्वीकारने तथा अन्य को नकारने वाला विचार नहीं है अपितु संस्कृति के विविध विशेष रूपों में अभिव्यक्त होने वाला जीवन दर्शन है। इसका अनूठापन विविध पूजा पद्धतियों, स्थानीय परम्पराओं व उत्सवों, आयोजनों से प्रकट होता है। हमारी परम्पराओं में विद्यमान विविधता के सौन्दर्य पर नीरस एकरूपता को थोपना असंगत है।

हिन्दू समाज ने अपनी प्रथाओं में काल आवश्यकता के अनुरूप सुधार का सदैव स्वागत किया है परन्तु ऐसा कोई भी प्रयास सामाजिक, धार्मिक तथा आध्यात्मिक नेतृत्व के मार्गदर्शन में ही होता रहा है और आम सहमति के मार्ग को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाती रही है। केवल विधिक प्रक्रियाएँ नहीं, अपितु स्थानीय परम्पराएँ स्वीकृति सामाजिक व्यवहार में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

सम्पूर्ण हिन्दू समाज आज एक दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति का सामना कर रहा है। केरल की सत्तारूढ़ वाममोर्चा सरकार माननीय उच्चतम न्यायालय की संविधानपीठ द्वारा पवित्र शबरीमाला मंदिर में सभी आयुवर्ग की महिलाओं को प्रवेश के आदेश को लागू करने की आड़ में हिन्दुओं की भावनाओं को कुचल रही है।

शबरीमाला की परम्परा देवता और उनके भक्तों के बीच में अनूठे संबंधों पर आधारित है। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि न्यायालय ने निर्णय तक पहुँचते हुए सैकड़ों वर्षों से चलती आ रही समाज की स्वीकृत परम्परा की प्रकृति और पृष्ठभूमि का विचार नहीं किया, धार्मिक परम्पराओं के प्रमुखों के विचार जानने का प्रयास नहीं हुआ, महिला भक्तों की भावनाओं की भी अनदेखी की गई। समग्र विचार के अभाव में स्थानीय समुदायों द्वारा सदियों से स्थापित संरक्षित और संवर्धित वैविध्यपूर्ण परम्पराओं को इससे ठेस पहुँची है।

केरल की मार्क्सवादी नीति सरकार के कार्यकलापों ने अय्यप्पा भक्तों में मानसिक तनाव उत्पन्न कर दिया है। नास्तिक, अतिवादी वामपंथी महिला कार्यकर्ताओं को पीछे के दरवाजे से मंदिर में प्रवेश करवाने के राज्य सरकार के प्रयत्नों ने भक्तों की भावनाओं को बहुत ही आहत किया है।

सीपीएम अपने क्षुद्र राजनैतिक लाभ एवं हिन्दू समाज के विरुद्ध वैचारिक युद्ध का एक अन्य मोर्चा खोलने के लिए यह कर रही है। यही कारण है कि अय्यप्पा भक्तों विशेषकर महिला भक्तों द्वारा अपनी धार्मिक स्वतंत्रताओं और अधिकारों की रक्षा के लिए एक स्वतः स्फूर्त और अभूतपूर्व आन्दोलन उठ खड़ा हुआ।

अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा सभी भक्तों की सामूहिक भावनाओं का हृदयपूर्वक सम्मान करती है और मंदिर परम्पराओं की रक्षा हेतु संयम तथा शालीनता से संघर्षरत रहने का आह्वान करती है। प्रतिनिधिसभा केरल सरकार से आग्रह करती है कि श्रद्धालुओं की आस्था, भावना तथा लोकतांत्रिक अधिकारों का आदर करें और अपनी ही जनता पर अत्याचार न करें। प्रतिनिधि सभा यह आशा करती है कि उच्चतम न्यायालय द्वारा इस विषय में दायर पुनर्विचार व अन्य याचिकाओं पर सुनवाई करते समय इन सब पहलुओं का समग्रतापूर्वक विचार करेगा। अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा देश के लोगों से शबरीमाला बचाओ आन्दोलन को हर प्रकार से समर्थन देने का आह्वान करती है।

पिछले पृष्ठ का शेष

विद्या भारती पूर्वोत्तर क्षेत्र के संरक्षक निर्मल कुमार चौधरी ने लखीमपुर जिले के विशिष्ट व्यवसायी श्री राजेश मालपानी, श्री उत्तम साहू व श्री मोहित साहू को संरक्षक सदस्य के लिए मानपत्र प्रदान किया। विशिष्ट उद्योगपति श्री शंकरलाल गोयनका जी ने समारोह में आशीर्वाद प्रदान करते हुए समिति के कार्यों की सराहना की। विद्या भारती पूर्वोत्तर क्षेत्र के जनजाति शिक्षा प्रमुख श्री मोनतुइंग जेमी ने समारोह में उपस्थित सभी महानुभावों को धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। समारोह का समापन वंदेमातरम् के गायन के साथ हुआ।

– **विकास शर्मा,**
क्षेत्रीय कार्यालय प्रमुख
पूर्वोत्तर जनजाति शिक्षा समिति
गुवाहाटी

नैतिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा

नीति का अर्थ होता है ले जाना। मनुष्य को सही दिशा में ले जाकर सत्यम्-शिवम्- सुन्दरम् बनाने वाली बातों को नैतिकता कहा जाता है। सर्वांगपूण समाज जीवन का आधारस्तम्भ नैतिकता होती है।

आत्मा के अधिष्ठान में होने वाले व्यवहार को आध्यात्मिकता कहते हैं। सब में एक ही परमात्मा का वास है, इसलिए सब के प्रति आत्मीयता का भाव रखकर व्यवहार करना, यह आध्यात्म सिखाता है। व्यक्ति से लेकर समष्टि तक सबका जीवन परस्पर के सहयोग, सुरक्षा और विकास करते कैसे उन्नत बनाया जा सकता है यह हमको हमारे पूर्वजों ने स्वयं के जीवन के उदाहरण से सिखाया है। पूर्व में हमारे यहाँ परिवार और शिक्षा व्यवस्था में ऐसा नैतिक एवं आध्यात्मिक जीवन जीने का शिक्षण देने की व्यवस्था थी, इसलिए हमारा राष्ट्र सर्वोच्च वैभव सम्पन्न एवं सर्वांग सुन्दर जीवन खड़ा करने में समर्थ हुआ था। आक्रमण और परदास्यता के लम्बे समय के कालखंड में यह व्यवस्था युगानुकूल रूप से लागू करने की आवश्यकता थी, लेकिन अभी तक पूर्ण रूप से नहीं हो सकी है।

हमारे देश की तथा सम्पूर्ण विश्व की समस्याओं का समाधान एवं सुखी सुन्दर, समृद्ध जीवन का निर्माण नैतिकता-आध्यात्मिकता के मार्ग के अनुसरण से ही होगा। इसी बात को दृष्टिगत रखते हुए विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान द्वारा भी अपने प्रमुख केन्द्रीय विषयों में एक विषय के रूप में इसको जोड़ा है। देश के सभी विद्यालयों में भैया-बहिनों के लिए नैतिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा की समुचित व्यवस्था करने के लिए विद्या भारती ने इस विषय का पाठ्यक्रम और पुस्तकें प्रणीत की हैं। यह पाठ्यक्रम और पुस्तकें तथा इस विषय का क्रियान्वयन संस्थान के चिंतकों और मनीषियों द्वारा समय-समय पर की गई गोष्ठियों, बैठकों और कार्यशालाओं में परिणाम स्वरूप दिखाई देता है। इस विषय की विकास यात्रा इस प्रकार रही है-

1. विद्या भारती द्वारा पूर्व से चल रहे नैतिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा के पाठ्यक्रम को संशोधित करने के एक कार्यगोष्ठी का आयोजन दिनांक 18 से 20 अगस्त 1991 को कोटा राजस्थान में हुआ जिसमें प्राथमिक विभाग के संशोधन में 12 प्रतिभागी, माध्यमिक विभाग में 6 और उच्चतर माध्यमिक विभाग में 13 प्रतिभागी इस प्रकार कुल 31 प्रतिभागियों ने भाग लेकर पाठ्यक्रम को संशोधित कर समयानुकूल और उद्देश्यपरक बनाने का कार्य किया।
2. **नैतिक शिक्षा की अगली गोष्ठी:** दिनांक 17 मार्च 1994 को भगवान श्री कृष्ण की लीलास्थली वृन्दावन में सम्पन्न हुई। जिसमें प्राथमिक विभाग में 6, माध्यमिक विभाग में 5 और उच्चतर विभाग में 6 इस प्रकार 17 प्रतिभागियों ने भाग लेकर गोष्ठी को सफल बनाया।
3. **श्री गणेशाय नमः** - दिनांक 11 एवं 12 जनवरी 2007 को जयपुर राजस्थान में आयोजित विद्या भारती की बैठक में यह निश्चित किया गया कि नैतिक और आध्यात्मिक शिक्षा का प्रथम पाठ्यक्रम के साथ विषय के रूप में प्रारम्भ कर इसके लिए कुछ औपचारिक पाठ्यक्रम का निर्माण किया जावे तथा इस हेतु सुविज्ञ महानुभावों के नाम पर चर्चा भी हुई।
4. **धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्रे:** नैतिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा की राष्ट्रीय बैठक भगवान श्रीकृष्ण की कर्मस्थली कुरुक्षेत्र हरियाणा में 2 व 3 अगस्त 2008 को सम्पन्न हुई इस बैठक में नैतिक व आध्यात्मिक शिक्षा के कुछ निश्चित केन्द्र चिन्हित कर उनके विकास के लिए सुझावात्मक कार्य योजना का निर्माण किया गया तथा विद्यालयों हेतु प्रतिदिन की 25 मिनट की कार्ययोजना का निर्माण किया गया। नैतिक शिक्षा और विद्यालय, नैतिक शिक्षा और आचार्य, नैतिक शिक्षा और अभिभावक, नैतिक शिक्षा और समिति सदस्य जैसे बिन्दुओं पर सभी पक्षों के लिए करणीय कार्यो के सुझावों को लिपि बद्ध कर प्रकाशित किया गया।
5. विद्या भारती द्वारा नैतिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा का औपचारिक पाठ्यक्रम प्रकाशित होने के कारण सम्पूर्ण देश में सभी विद्यालयों के तीनों विभागों प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च माध्यमिक विभाग में यह विषय उचित रीति से प्रारम्भ हो गया था इसलिए उसके मूल्यांकन की योजना बनाने के लिए 3 जुलाई 2013 को दिल्ली केन्द्र से मूल्यांकन कैसे करें? उसके बिन्दु क्या हों? इस सन्दर्भ में एक विस्तृत पत्र

सभी प्रांतों को भेजा गया इस जानकारी का पत्रक के आधार पर दिनांक 24 से 25 जुलाई 2013 को कलात्मक तारकसी के लिए प्रसिद्ध नगर कटक में बैठक का आयोजन किया गया जिसमें सम्पूर्ण देश से 28 प्रतिभागी सम्मिलित हुए। इन प्रतिभागियों द्वारा तैयार किए गए मूल्यांकन के प्रारूप को दिनांक 19 से 22 दिसम्बर 2013 को कुरुक्षेत्र में हुई अखिल भारतीय बैठक में प्रस्तुत किया गया।

6. नैतिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा की नियमित वार्षिक बैठक 10 एवं 11 जनवरी को विशाखापट्नम में सम्पन्न हुई इस बैठक में प्रचलित पाठ्यक्रम और मूल्यांकन की पद्धति पर विस्तार से चर्चा हुई।
7. नैतिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा विषय पर वार्षिक समीक्षा और विचार विमर्श हेतु निर्धारित बैठक दिनांक 28 से 30 जनवरी 2017 को भाग्यनगर (हैदराबाद) में सम्पन्न हुई जिसमें गत वर्षों के कार्यों का सिंहावलोकन एवं आगामी वर्षों में विषय के शिक्षण को और प्रभावी कैसे बनाया जावे इस पर विशेष चर्चा हुई इसी बैठक में यह भी सुझाव विचार हेतु आया कि नैतिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा के विषय के प्रयोगात्मक कार्य (प्रोजेक्ट वर्क) क्या होना चाहिए तथा कुछ मुख्य गणों के संवर्धन हेतु भैया-बहिनों के प्रोजेक्ट वर्क पर विचार किया गया।
8. विषय के प्रवर्धन और उसके विषय में विचार विमर्श हेतु महर्षि सत्यकाम जाबालि की नगरी जबलपुर में दिनांक 28 जनवरी 2018 को राष्ट्रीय बैठक का आयोजन किया गया।

नैतिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा पुस्तक लेखन कार्यशालाएँ :

विभिन्न कक्षाओं के भैया बहिनों में उनके वांछित गुणों के विकास के लिए नैतिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा विषय में कौन-कौन सी बातों का समयोजन किया जावे जिनके आधार पर नैतिक गुणों का विकास सभी में हो इस अपेक्षा के साथ इस विषय की पुस्तकें लिखने हेतु विभिन्न कार्यशालाओं का आयोजन किया गया जिनका विवरण इस प्रकार है -

(अ) 18-19 जनवरी 2012- भोपाल
(ब) 20 जुलाई 2012 -जबलपुर
(स) 12 मार्च 2013 - भोपाल
(द) 12-13 मार्च - इन्दौर

इन कार्यशालाओं में विभिन्न प्रांतों के प्रबुद्ध आचार्य, प्राचार्यों के द्वारा कक्षा द्वितीय से कक्षा पंचम् तक की पुस्तकों का लेखन किया गया।

- **सियाराम गुप्ता**, संयोजक
नैतिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा

13 अप्रैल पर विशेष

जलियाँवाला बाग और भगत सिंह

लाहौर के पंजाब प्रांत की राजनैतिक केन्द्र के तौर पर ही नहीं बल्कि मार्शल लॉ की प्रशासनिक गहनता के लिए जाना जाता था। रॉलेट एक्ट का विरोध भी पंजाब के किसी भी शहर से पहले लाहौर में ही शुरू हुआ। वही 50 किलोमीटर दूर अमृतसर में भी 6 अप्रैल, 1919 को विरोध प्रदर्शन किया गया था। इसके चलते ब्रिटिश सरकार ने गिरफ्तारी करनी शुरू कर दी। जिसके बाद बैशाखी वाले दिन यानि 13 अप्रैल को अमृतसर के ही जालियाँवाला बाग में हजारों की संख्या में लोग एकत्र हुए। करीब 12:40 बजे, डायर को जालियाँवाला बाग में होने वाली सभा की सूचना मिली। यह सूचना मिलने के बाद वह शाम 4 बजे 150 सिपाहियों के साथ इस बाग के लिए रवाना हो गया, सिपाहियों ने करीब 10 मिनट तक गोलियाँ चलाई थीं। इस हादसे में करीब 1000 लोगों की हत्या हुई और 1500 से ज्यादा लोग घायल हुए थे। हालाँकि ब्रिटिश सरकार ने केवल 370 के करीब लोगों की मौत होने का दावा किया।

इस कत्लेआम से भगत सिंह इतने व्यथित हुए कि पीड़ितों का दर्द बाँटने के लिए पैदल चलकर जालियाँवाला बाग पहुँचे। मात्र 12 साल के भगत सिंह को इस घटना ने क्रान्तिकारी राह की तरफ मोड़ दिया था। भगत सिंह की जीवनी में लेखक वीरेन्दर संधू लिखते हैं, कि ''उन्होंने निर्दोष-निहत्थी जनता ने खून से लथपथ मिट्टी उठाई, माथे से लगाई और थोड़ी सी एक शीशी में भरकर लौटे, घर लौटने पर बहन अमर कौर ने पूछा, 'वीर जी इतनी देर कहाँ कर दीं?' भगत सिंह उदास थे, कुछ नहीं बोले। बहन ने फिर पूछा, 'क्या बात है, ठीक तो हो न?' भगत सिंह गंभीर होकर कहा 'आओ तुम्हें एक चीज़ दिखाता हूँ।' खून से भरी वह शीशी दिखाते हुए बोले 'अँग्रेजों ने हमारे बहुत से आदमी मार दिए।' वे कुछ फूल तोड़कर लाए और शीशी के चारों ओर रखकर श्रद्धा से सिर झुका लिया। इस घटना के दो साल बाद उन्होंने पढ़ाई छोड़ दी और भारत की आज़ादी के लिए क्रान्तिकारी आन्दोलनों का हिस्सा बन गए।

मानविकी विषय में क्रियाधारित अध्यापन

मानविकी विषय के अध्यापन की दृष्टि से कुछ भ्रांतियाँ शिक्षक-समाज में फैली हुई हैं उनका समाधान व दिशा प्रस्तुत है हरियाणा विद्या भारती के संगठन मंत्री रवि कुमार जी की लेखनी से

हम सामाजिक अध्ययन विषय के बारे विचार करेंगे। सभी स्थानों पर सामाजिक अध्ययन का विषय रटवाया जाता है, न कि पढ़ाया जाता है। हो सकता है कुछ स्थानों पर पढ़ाया जाता हो परन्तु ज्यादा अनुभव रटवाने का ही है। विद्यार्थियों से जब हम चर्चा करते हैं तो कुछ कठिनाइयाँ सामने आती हैं। पाठयक्रम काफी लम्बा है। तिथि-सन् काफी मात्रा में याद करने पड़ते हैं। इसी प्रकार नाम भी काफी संख्या में रहते हैं। नागरिक शास्त्र में ढाँचे, प्रकार, योग्यता, चयन, प्रक्रिया, कार्य, कर्तव्य-अधिकार आदि में भ्रम उत्पन्न होता है। भूगोल में इतने अधिक मानचित्र हैं, उन्हें कैसे याद रखा जा सकता है? विभिन्न प्रयोगों द्वारा उपर्युक्त कठिनाइयाँ दूर कर कक्षा-शिक्षण प्रभावी हो सकता है।

इतिहासः इसमें बीते हुए कल का कोई न कोई घटनाक्रम होता है। उस घटनाक्रम को कहानी के रूप में पढ़ाया जा सकता है। किसी घटनाक्रम का नाट्य रूपान्तर आचार्य और बालकों द्वारा कक्षा में मंचन हो सकता है। तिथि-दिनांक के सम्बन्ध में एक उदाहरण ध्यान में आया। एक विद्यालय में कक्षा दशम् में जाना हुआ। सामाजिक अध्ययन का विषय चल रहा था। एक बालक को अपने जीवन के बारे में बताने को कहा गया। जन्म कब हुआ, विद्यालय कब आना प्रारम्भ हुआ, प्रथम कक्षा में कब आए, प्राथमिक, माध्यमिक कब पूरा हुआ आदि। जैसे-जैसे बालक बता रहा था वैसे-वैसे मैं श्यामपट्ट पर समयानुक्रम लिख रहा था। अर्थात् उस बालक के जीवन के विभिन्न घटनाक्रम श्यामपट्ट पर समयानुक्रम अंकित हो रहे थे। इसके बाद बालकों से पूछा गया कि स्वतंत्रता संग्राम के विभिन्न चरण कब-कब घटित हुए? उन चरणों को समयानुक्रम द्वारा प्रथम श्यामपट्ट पर दर्शाया गया। एक दृश्य में सारे घटनाक्रम तिथि सहित नजर आ रहे थे। इस प्रकार दो से तीन बार अभ्यास करने पर सरलता से कंठस्थ हो सकता है और हमारे मन में भ्रम की स्थिति भी नहीं रहेगी।

नागरिक शास्त्र : एक अनुभवी प्रधानाचार्य ने इस विषय में अपना अनुभव सुनाया। उन्होंने बताया कि कक्षा कक्ष में विषय की पुस्तक का न्यूनतम उपयोग हुआ और न ही गृह कार्य दिया गया। बालकों को अहसास करवाया गया कि सबसे सरल और रोचक विषय है। विषय का भय मन से निकाला गया। रोचकता कैसे बढ़े इस पर ध्यान केन्द्रित किया गया कुछ विषय पर कक्षा में टोली बनाकर चर्चा भी की गई। प्रोजेक्ट का कार्य अधिक हुआ। बालकों को कहा गया कि अपने ग्राम के सरपंच व पंच के पद का साक्षात्कार लेकर आना है। सरपंच व पंच के नाते उन्हें क्या-क्या कार्य करना पड़ता है? इन कार्यों को सूची बद्ध करके लाना है। इस प्रकार अलग बिन्दुओं पर प्रोजेक्ट कार्य करने से रोचकता सहज ही निर्माण होगी और अधिगम का स्तर भी बढ़ेगा।

भूगोल : इस विषय में बालकों को मानचित्र कैसे बनता है, यह सिखाया जाए। फिर मानचित्र निर्माण करवाया जाए। जितना अधिक मानचित्र बनवाने का कार्य होगा उतना ही अधिगम बढ़ता जाएगा। प्रोजेक्ट वर्क देकर प्रदेश, देश और विश्व का 3डी मानचित्र बनवाया जाए। मैदान पर नक्शा बनाकर विभिन्न परिस्थितियाँ दर्शाई जा सकती हैं। सभी प्रकारों में कुछ बताने के कार्य अवश्य करवाए जाएँ।

आचार्य को मन से निकालना होगा कि पाठ्यक्रम लम्बा है। पाठ्यक्रम लम्बा है, इसकी बजाय वे ये सोचें कि इसे रोचकता से कैसे पढ़ाया जाए। कितने अधिक प्रोजेक्ट वर्क निर्मित हो सकते हैं। आचार्य सोचें कि बालकों के मन में विषय से सम्बंधित भय को कैसे समाप्त किया जा सकता है। बालक के दैनन्दिन जीवन में उसके विषय को कैसे जोड़ा जा सकता है। इस सब से अधिगम प्रक्रिया में स्वाभाविक रूप से गति आएगी।

कम्प्यूटर शिक्षण : इस सदी में विद्यालयी शिक्षा में कम्प्यूटर शिक्षा विषय अस्तित्व में आया। विज्ञान में डिजिटल तकनीक का उपयोग बढ़ा, तब से सभी को महसूस हुआ कि ये डिजिटल तकनीक अर्थात् कम्प्यूटर सभी को सीखना चाहिए। आज सामान्य जनजीवन में डिजिटल तकनीक पर आश्रित व्यवस्थाएँ अधिक नजर आती हैं जैसे इसके बिना जीवन अधूरा सा पड़ जाएगा। जब से ये डिजिटल तकनीक कम्प्यूटर से चल कर मोबाइल में आई हैं और स्मार्टफोन का उयोग अधिक हुआ है तबसे आश्रित होना अधिक दिखता है। यह एक तकनीक

है और नई पीढ़ी को सीखना-सिखाना आवश्यक हो जाता है तो कैसे सिखाया जाए इसके बारे में चिन्तन आवश्यक हो जाता है।

विषय रूप में नहीं तकनीक के रूप में सिखाएँ : आज भारत की शिक्षा में आचार्य पुस्तक, पाठ्यक्रम, परीक्षा व अंक इन चार बातों में फँसा हुआ है। इसलिए कम्प्यूटर शिक्षा को भी विषय समझता है। अब जब विषय समझेगा तो ये सब चलता है। कम्प्यूटर विषय यानि डेस्कटॉप के सामने बैठकर कितना समय वो अभ्यास करे और इसके पश्चात् किस-किस प्रकार का कार्य विद्यार्थी कर सकता है यही महत्वपूर्ण हो जाता है। जब आचार्य इसे विषय न समझकर तकनीक के रूप में पढ़ायेगा तो वह इस बात पर केन्द्रित होगा कि मैंने कितना सिखाया और विद्यार्थी को कितना करना आ गया।

प्रायोगिक कार्य पर ध्यान हो : विद्यालय प्रवास करते हुए कम्प्यूटर आचार्य से प्रयोगशाला में चर्चा हुई। एक कक्षा को सप्ताह में कितने कालांश उपलब्ध हैं, उसमें से सैद्धांतिक और प्रायोगिक में विभाजन क्या है? बालक व कम्प्यूटर का अनुपात क्या है? ये सब प्रश्न पूछते हुए अन्त में यही विश्लेषण निकलता है कि सप्ताह में कुल कितने मिनट डेस्कटॉप के सामने बैठकर बालक स्वयं कार्य करता है और मास व वर्ष में औसतन सिखाने का प्रयास कर रहे हैं किन्तु सिखा नहीं पाते क्योंकि कुल मिलाकर समय कम मिलता है। प्रायोगिक कार्य अर्थात् डेस्कटॉप के सामने बैठकर अधिक समय कार्य हो इस पर आचार्य का ध्यान हो।

कम्प्यूटर स्वयं सिखाता है : 2005 से भारत में जन सामान्य को कम्प्यूटर दिखने लगा। कम्प्यूटर सिखाने के लिए जगह-जगह कोचिंग सेन्टर खुले। विद्यालयीय विद्यार्थियों में कम्प्यूटर सीखने का आकर्षण बढ़ा और ग्रीष्मावकाश अथवा सप्ताहांत के समय कोचिंग जाना, कम्प्यूटर क्लास लेना भी बढ़ा। परन्तु ध्यान में आया कि कोचिंग सेन्टर जाने वाले एवं कम्प्यूटर क्लास सीखने वाले विद्यार्थी को कम्प्यूटर चलाना ठीक से नहीं आता है। उसकी बजाय जिनके पास स्वयं का कम्प्यूटर है जल्दी और अधिक आता है। स्वयं करते-करते तकनीक अपने आप आती रहती है। कम्प्यूटर विण्डो में सब सामने रहता है आइकॉन दिखते हैं क्या दबाने से यानि कहाँ क्लिक करने से क्या होगा धीरे-धीरे स्वतः अवगत होता है किसी एक स्थान पर दो या तीन बार क्लिक करते-करते वह भूलता भी नहीं है। कोई सामान्य व्यक्ति जिसे कम्प्यूटर बिलकुल भी नहीं आता, प्रतिदिन दस मिनट डेस्कटॉप के सामने बैठकर माउस या कीबोर्ड से कुछ करेगा तो दो-तीन महिनों में ही बिना किसी के सिखाए काफी कुछ सीख जाएगा।

– **रवि कुमार**, संगठन मंत्री
विद्या भारती हरियाणा

मनोहर पर्रिकर का हास्पीटल मे लिखा एक यादगार पत्र

जीवन ने मुझे राजनीति में बहुत सम्मान दिलाया जो मेरे नाम का पर्याय बन गया। हालांकि मैंने इस बात पर अब ध्यान दिया कि काम के अलावा मैंने कभी आनंद के लिए समय नहीं निकाला। सिर्फ मेरा पॉलिटिकल स्टेटस ही हकीकत रहा। आज बिस्तर पर पड़े हुए मैं अपने जीवन के बारे में सोच रहा हूं.... लोकप्रियता और धन... और मुझे यही जीवन में मील के पत्थर लगते थे, मौत का सामना करते हुए ये सब निरर्थक लग रहे हैं।

हर सेकेंड के साथ मौत मेरी ओर चुपचाप बढ़ रही है, मैं अपने आसपास जीवनरक्षक मशीनों की हरी बत्ती देख रहा हूं, उनके शोर से मैं मौत से नजदीकी को महसूस कर रहा हूं। इस कठिन घड़ी पर मुझे समझ में आ रहा है कि जीवन में पैसा और रुतबा इकट्ठा करने के अलावा और भी बहुत कुछ है.... समाजसेवा और हम जिन्हें पसंद करते हैं उनके साथ रिश्ते निभाना ऐसी चीजें हैं जिसमें हमें चूकना नहीं चाहिए। मैं यह महसूस करता हूं कि जितनी भी राजनीतिक सफलता मैंने अर्जित की है, मैं अपने साथ कुछ भी नहीं ले जाऊंगा।

यह बीमारी का बिस्तर ही सबसे एक्सक्लूसिव बेड है क्योंकि इसे आपके अलावा कोई और इस्तेमाल नहीं कर सकता। आपके पास नौकर, ड्राइवर, काम करने वाले और आपके लिए कमाने वाले हो सकते हैं लेकिन आपकी बीमारी कोई साझा नहीं करेगा। सबकुछ पाया और कमाया जा सकता है लेकिन वक्त लौटकर नहीं आता।

जब आप जीवन की दौड़ में सफलता के पीछे भागते हैं तो आपको अहसास होना चाहिए कि कभी न कभी आपको इस नाटक के आखिरी हिस्से में पहुंचना होगा जहां शो का लास्ट सबके सामने है।

इसलिए.... सबसे पहले अपनी देखभाल करना सीखें, दूसरों की केयर करें, अपना पैसा और भावनाएं अपने आसपास के लोगों पर खर्च करना सीखें।

जब एक बच्चा पैदा होता है तो वह रोता है और जब मरता है दूसरे रोते हैं इसलिए दोस्तों आखिरी दिन से पहले खूब खुश हो लें। – **मनोहर पर्रिकर**

REFORESTATION

Today the major danger to life-form are arising from severe climatic changes, unregulated pollution, over-exploitation of natural resources , ever-expanding human population and extensive deforestation. The water table is depleting at an alarming rate due to greed of humans. 'You reap-what you sow', the climatic changes are more evident now, pattern of rainfall, snow fall, emerging records of high temperature along with new pattern of disease cycles and emergence of new strains of microbes is also on rise, superbug is one of them. The most suffered ones are forest mainly the tropical forest, besides others. The deforestation has started from the end of last century, the forest are shrinking due to transformation, fragmentation, cultivation, colonization and many more such reasons, and therefore ecosystem services are severely affected. According to reports since more than two-third of poor people living in these tropical regions so the need of the hour is not only to protect these people but to restore the forest, conserve the biodiversity, to fight with the climatic changes and go ahead with sustainable development. Present day lacuna is the lack of integrated approach and co-ordination between researcher scientist in this field, planners, policy makers and local people who are directly involved. Scientific researches fail to reach the field, Government agencies who lay down targets and objectives like to work in accordance with local community for forest restoration but lacking will. There is need to provide funds, seed, seedlings, technical know-how as per need of local community as needed in social forestry. In the process of forest restoration the integration between all stakeholders including the civil society is needed. Environmental need at local, regional and at national level has to be taken care of. Loss of wet-land is also an important related issue with deforestation. The restoration time will depend upon the extent of damages the ecosystem has faced, due to various factors, but major of them is anthropogenic. The services rendered by an ecosystem over a time period, to the local community attached, will ultimately decide the recovery or the restoration period. The reforestation may be helped by the government and non-government organizations and even by local people, due to increased awareness about environment related issues. The reforestation in one area may increase the forest cover and but it should not be linked to the deforestation rate in the adjoining area. So a holistic approach should be kept at planning stage. There gap between the 'knowing-doing' i.e. 'laboratories to field' is enormous and more integrated approach is needed. There is also a lack of exact stastical data on reforestation survival rate. The planners, scientist and the stake-holders lack the coordination. More progress can be made, if these teams work in more integrated way. The greenery is different from the reforestation, which can be social forestry i.e. tree plantation for economic benefits. Here comes the role of business sector for reaping the benefits for the poor. The reforestation drive should be undertaken at massive scale and that too at the earliest in a scientific way, Integrating the planning, scientific research involving both the natural scientist & social scientist, administrators, local stakeholders and business sector then only it will be indeed a real 'reforestation' and for its success the accountability has to be fixed, otherwise the entire exercise will be a waste. Government should take it in a priority basis. We have to wake up NOW, as we are already in catch eleven like situation; else there will be no one to read '**there was a mankind**'.

- Sushil kumar vatta,
Vice-principal,
D.A.V.Sr.Sec.School No.1,
Gandhi Nagar, Delhi-51

ESSENTIAL FATTY ACIDS

Not all fats are bad. In fact an essential fat is just that –essential to the body. The body cannot manufacture these fats and therefore most get them from food. The body uses fats for the production of healthy cell membrances as well as certain hormones called prostaglandins. The two most important essential fatty acids are omega-3 fatty acids called alpha-linoleic acid and omega-6 fatty acids, called just linoleic acid. Our bodies turn omega-3 fatty acids into prostaglandins that are primarly anti-inflammatories. Omega-6 fatty acids become prostaglandians that are primarily inflammatories.

The generally accepted optimal ratio of dietary intake of omega -6 fatty acids and omega-3 fatty acids is 4:1. This means we should take in four times as much of omega-6 as we do omega-3.

Omega-6 fatty acids are abundant in the western diet; they are in our meats, dairy products, and processed foods. We get omega-3 fatty acids from vegetable oil such as flaxseed, canola, pumpkin and soybean oil. These fats are also found in such cold-water fish as mackerel, saradines, salmon and tuna.

As you might guess, the average Ameriacan consumes a few more omega-6 fatty acids than omega-3s- a lot more, in fact, on average we consume a ratio of 20:1 or even 40:1 of these fats in our diet!

This results in our bodies producing significantly more inflammantroy products than anti-inflammantory products. Our bodies are simply too inflamed. The imbalance in the consumption of these esssential fatty acids is the main reason for the imbalance in our body's production of these hormones. That is why many individuals in the industrialized world need to take flaxseed oil and fish oil in supplementation in an attempt to bring these back into balance.

Here is another unknown fact: essential fats also have the ability to actually decrease our total cholesterol levels and our LDL (bad) cholesterol levels. This means that not all fats are created equal. I not only encourage my patients to supplement the omega-3 fatty acids but also to decrease their intake saturated fat. When you combine these two efforts, the inflammation in the body readily comes back under control and your cholesterol levels improve.

Several studies have shown significant clinical imporvements in patients with rheumatoid arthritis, lupus, heart disease, multiple sclerosis and almost any disease that involves inflammation when they consume thses important essential fats in supplimentation. This is a very important aspect of maintaining your health or redeeming your health if you have already lost it.

- Ray D. Strand, M.D.

सदस्यता के लिए आवेदन पत्र

सेवा में
सम्पादक
विद्या भारती प्रदीपिका
विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान, प्रज्ञा सदन, जी.एल.टी. सरस्वती बाल मंदिर परिसर, नेहरू नगर, नई दिल्ली - 110028

मैं "विद्या भारती प्रदीपिका" हेतु दस वर्षीय सदस्यता राशि 800/- रु० वार्षिक सदस्यता शुल्क राशि 120/- रु० अग्रिम भेज रहा हूँ। जिसका विवरण इस प्रकार है।

संलग्न चैक/ड्राफ्ट क्र० ....
....
दिनांक ....
बैंक का नाम ....
राशि ....

पावती एवं पत्रिका निम्नलिखित पते पर प्रेषित करें:-

सदस्य का नाम व पता:
....
....
....

पिन कोड : ....
दूरभाष : ....
फैक्स : ....
मोबाईल : ....

हस्ताक्षर

विज्ञापन हेतु आदेश पत्र

सेवा में
सम्पादक
विद्या भारती प्रदीपिका
विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान, प्रज्ञा सदन, जी.एल.टी. सरस्वती बाल मंदिर परिसर, नेहरू नगर, नई दिल्ली - 110028

"विद्या भारती प्रदीपिका" के आवरण पृष्ठ 2/3/4 अंदर के रंगीन पृष्ठ 35/38 श्याम-श्वेत पृष्ठ पर आगामी अंक में हमारी संलग्न विज्ञापन सामग्री प्रकाशित करने का कष्ट करें।

विज्ञापन राशि विज्ञापन छपने के बाद बिल प्राप्त होने पर भेजी जाएगी/अग्रिम भेजी जा रही है जिसका विवरण इस प्रकार है :-

संलग्न चैक/ड्राफ्ट क्र० ....

दिनांक ....

बैंक का नाम ....

राशि ....

पावती एवं पत्रिका निम्नलिखित पते पर प्रेषित करें:-

विज्ञापनदाता का नाम व पता:

....

....

....

पिन कोड : ....

दूरभाष : ....

फैक्स : ....

मोबाईल : ....

हस्ताक्षर

Didda -Mid Evel Administrator Queen of Kashmir

Didda was a queen of kashmir and dominated the history of that kingdom between the years 958 to 1003. She was the daughter of Simraja, King of Lohara and the grand daughter of the Shahi king Bhima or Bhimapala of Udabhabdapura. She was married to the Kashmiri King Kshemagupta in 950.

According to Kalhana's Rajtarangini , a chronicle of Kashmir composed in the mid -12th century, Didda had such an influence on her husband that he 'became known by the humiliating appellation of Didda Kshema'. Kalhan's statement is supported by the copper coins of Kshemagupta, which bears the name 'Di-Kshema'. In 958 after the death of Kshemagupta , Didda raised her son Abhimanyu to the throne under her guardianship.

Courrage and diplomacy, along with vice and profanity reached their zenith under Didda's regency and rule. During Abhimanyu's rule didda discovered that many nobles were conspiring to seize the throne of Kashmir and turned them out of the palace in spite of their great influence. When those nobles rose in rebellion against her, she quickly bought off their brahmin supporters. One of the bribed Brahmins was Yashodhar and when he became powerful and rose in turn she crushed him with the help of her minister Naravahana and the valiant Kashmiri force , the Ekangas. Kalhan says eloquently of Didda. Those treacherous ministers who for sixty years… had robbed 16 King Gopala to Abimanyu, of their dignity, lives and riches, were quickly exterminated by the energy of Queen Didda. Didda also built a number of monasteries, temples and cities.

Didda encouraged nepotism on the one hand while on the other she ruthlessly crushed her followers if she felt them to be disloyal. Many high officials served as her panders and they are said to have visited her bedchamber without hindrance. She had an affair with her minister Phalguna, who conquered Rajauri, and with a young herdsman named Tunga Kashi who crushed a formidable rising of the Damaras in her reign. In 972 A.D. King Abhimanyu died. After his death Didda installed his son, Nandigupt on the throne. But she held the reins of the government in her hands. Unable to control her desire for power and her promiscuity, she led a violent pogrom against her grandson, in which legend has it that she employed witchcraft and ascended the throne of Kashmir in 981. Didda kept her country united despite many problems through her success in controlling conspiracies, assassinations and political intrigues. She lived till 1003 and before her death selected her brother's son Sangramarala of Lohana as her heir, thereby securing a change of dynasty without any political upheaval.

- Piyashi Roychoudhury

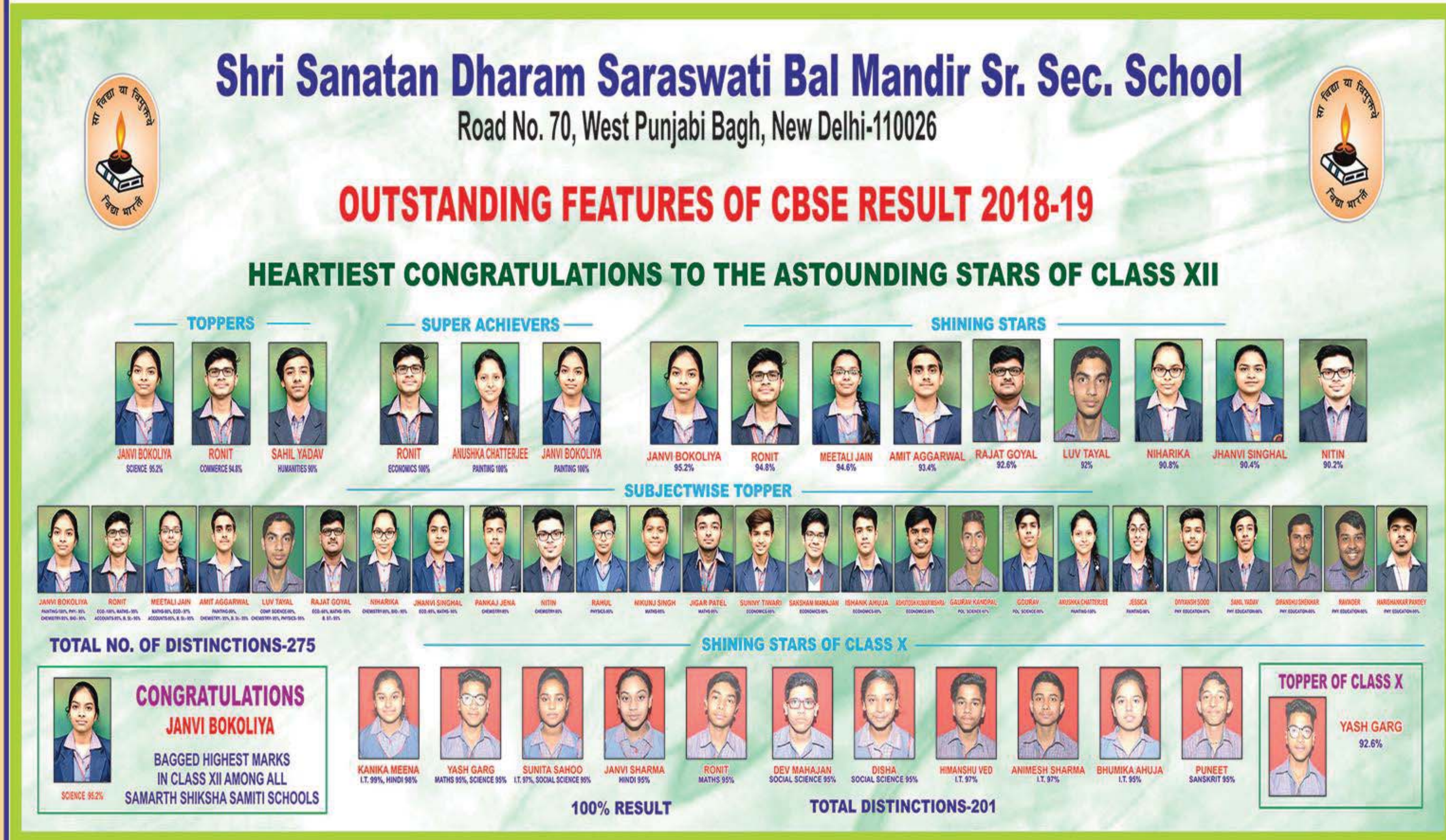
Shri Sanatan Dharam Saraswati Bal Mandir Sr. Sec. School
Road No. 70, West Punjabi Bagh, New Delhi-110026
OUTSTANDING FEATURES OF CBSE RESULT 2018-19
HEARTIEST CONGRATULATIONS TO THE ASTOUNDING STARS OF CLASS XII
TOPPERS
JANVI BOKOLIYA SCIENCE 95.2%
RONIT COMMERCE 94.8%
SAHIL YADAV HUMANITIES 90%
SUPER ACHIEVERS
RONIT ECONOMICS 100%
ANUSHKA CHATTERJEE PAINTING 100%
JANVI BOKOLIYA PAINTING 100%
SHINING STARS
JANVI BOKOLIYA 95.2%
RONIT 94.8%
MEETALI JAIN 94.6%
AMIT AGGARWAL 93.4%
RAJAT GOYAL 92.6%
LUV TAYAL 92%
NIHARIKA 90.8%
JHANVI SINGHAL 90.4%
NITIN 90.2%
SUBJECTWISE TOPPER
JANVI BOKOLIYA
RONIT
MEETALI JAIN
AMIT AGGARWAL
LUV TAYAL
RAJAT GOYAL
NIHARIKA
JHANVI SINGHAL
PANKAJ JENA
NITIN
RAHUL
NIKUNJ SINGH
JIGAR PATEL
SUNNY TIWARI
SAKSHAM MAHAJAN
ISHANK AHUJA
ASHUTOSH KUMAR MISHRA
GAURAV KANDPAL
GOURAV
ANUSHKA CHATTERJEE
JESSICA
DIVYANSH SOOD
SAHIL YADAV
DIPANSHU SHEKHAR
RAVINDER
HARISHANKAR PANDEY
TOTAL NO. OF DISTINCTIONS-275
CONGRATULATIONS
JANVI BOKOLIYA
BAGGED HIGHEST MARKS
IN CLASS XII AMONG ALL
SAMARTH SHIKSHA SAMITI SCHOOLS
SCIENCE 95.2%
SHINING STARS OF CLASS X
KANIKA MEENA I.T. 99%, HINDI 98%
YASH GARG MATHS 95%, SCIENCE 95%
SUNITA SAHOO I.T. 97%, SOCIAL SCIENCE 95%
JANVI SHARMA HINDI 95%
RONIT MATHS 95%
DEV MAHAJAN SOCIAL SCIENCE 95%
DISHA SOCIAL SCIENCE 95%
HIMANSHU VED I.T. 97%
ANIMESH SHARMA I.T. 97%
BHUMIKA AHUJA I.T. 95%
PUNEET SANSKRIT 95%
TOPPER OF CLASS X
YASH GARG
92.6%
100% RESULT
TOTAL DISTINCTIONS-201

(RNI NO. 37111/1981)

VIDYA BHARTI VIDYALYA
RAJKAMAL SARASWATI VIDYA MANDIR
ASHOK NAGAR, DHANSAR, DHANBAD, JHARKHAND
Affiliated to CBSE, New Delhi

e-mail : dnb_rajkamal@yahoo.co.in **Phone :** 0326 - 2303099

RESULT : 2018 - 2019

AISSE (Class X) - Result – 100% 90% & Above – 80 Students

AISSCE (Class XII – Science / Commerce)

	Science	Commerce
Total No. of Students	317	286
Result	100.00%	98.60%
60% & Above	298 (94.00%)	258 (90.20%)
75% & Above	226 (71.29%)	173 (60.48%)
80% & Above	162 (51.10%)	136 (47.55 %)
90% & Above	048 (15.14%)	050 (17.48%)

School Toppers

Abhay Anand
1st Position
96.20%
(Science)

Nitya Rani
1st Position
96.20%
(Science)

Tanisha
1st Position
97.40%
(Commerce)

Mayank Mittal
1st Position
98.20%
AISSE

Adity Kumari
1st Position
98.20%
AISSE

State / District (Rank Holders)

SCIENCE

Name	%age	Rank St	Rank Dt
Abhay Anand & Nitya Rani	96.20	9th	8th
Sumit Kumar Mudi, Nirbhay Kumar & Adya Kumari	95.80	---	9th
Divyanshu Kumar	95.60	---	10th

COMMERCE

Name	%age	Rank St	Rank Dt
Tanisha	97.40	4th	1st
Mousham Kharkia	97.20	5th	2nd
Khushal Bageria, Sarojani Gupta & Sarita Kumari	96.80	7th	3rd
Punit Agarwal & Sonali Singh	95.60	---	7th
Ritu Barnwal	95.40	---	8th
Surbhi Kumari	95.20	---	9th
Srishty Agarwal	95.00	---	10th

Subject Wise Highest Marks

SUBJECT	MARKS	No. of Students	SUBJECT	MARKS	No. of Students
ENGLISH	94	02	PHYSICAL EDUCATION	100	17
HINDI	98	06	APPLIED ART	100	66
SANSKRIT	100	01	INFOMATICS PRACTICES	99	02
MATHS	99	01	ACCOUNTS	98	01
PHYSICS	95	13	ECONOMICS	100	02
CHEMISTRY	96	01	BUSINESS STUDIES	98	03
BIOLOGY	98	01			

Shankar Dayal Budhia
President

Binod Kumar Tulsyan
Secretary

Phool Singh
Director

Rajesh Kr. Singh
Principal

प्रकाशक एवं मुद्रक : डॉ. ललित बिहारी गोस्वामी के द्वारा विद्याभारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान (स्वामी) के लिए नक्षत्र आर्ट, बी–255, नारायणा इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस–1, नई दिल्ली–110028 (प्रेस) से मुद्रित एवं प्रज्ञा सदन, जी0एल0टी0 सरस्वती बाल मंदिर परिसर, एम0जी0 रोड, नेहरू नगर, नई दिल्ली–110065 (प्रकाशन स्थल) से प्रकाशित। **सम्पादक :** सविता कुलश्रेष्ठ